पथिकोद्गार

तथा

सन्त वचन

साधु वेष में एक पथिक

पथिकोद्गार

तथा

सन्त वचन

लेखक

साधु वेष में एक पथिक

प्रकाशक
जगतबिहारीलाल गुप्ता
आर० सी० गुप्ता ऐन्ड सन्स
न्यू बिल्डिङ्ग अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

षष्टमावृत्ति ५०००]   सम्वत् २०११   [मूल्य ।≡)

सन्त वचन

१—वि[illegible] वह करता है जिसमें अपनत्व की कमी होती है। भजन वह करता है जिसका सद्भाव पूर्वक सम्बन्ध नहीं होता।

२—प्रार्थना के माने हैं, अहंकार रहित प्रयत्न। प्रबल अभिलाषा प्रार्थी बनाती है। प्रयत्न हीन प्रार्थना, प्रार्थना नहीं है।

३—प्रार्थना से पुरुषार्थ वादी में निरहंकार वृत्ति आती है, प्रारब्धवादी में नम्रता आती है।

४—जिसमें अभिलाषा है वही प्रार्थी जीव और जिसके द्वारा अभिलाषा की पूर्ति होती है वही परमेश्वर है। जो विना कुछ लिये ही देता है वही हमारा परम देव है।

५—प्रार्थना असमर्थ का अन्तिम प्रयास है।

६ जो परमेश्वर का प्रीति पात्र होना चाहे वह उसी स्थिति में सन्तुष्ट रहे जिस स्थिति में परमेश्वर रखना चाहता है।

७—प्रार्थना आस्तिक का जीवन और निर्बल का बल है।

८—परम प्रियतम की सब से प्रिय अपने आप में ही स्थापना कर अपने आप के पास बुद्धि को स्थिर कर के उपासना करो।

पद्य सूची

पद्य सूची

पं० शिवशंकर भार्गव द्वारा फ़ाइन प्रेस, लखनऊ में मुद्रित ।

प्रार्थना दुखी हृदय की पुकार है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है। शक्ति के रहते हुए उसका उपयोग न करने से सच्ची प्रार्थना नहीं होती।

भगवान् तुम्हें हम भी कुछ अपनी सुनाते हैं।
जो दुर्दशा है मन की कहने में लजाते हैं॥

हे नाथ तुम्हीं से ही मिलता है हमें सब कुछ।
तुमको ही भूल करके हम दुःख उठाते हैं॥

खोजें कहाँ तुम्हें हम किस रूप में पहचाने।
तुममें ही हैं पर तुमको हम देख न पाते हैं॥

अभिमान, मोह, माया में मग्न हो रहे हम।
उद्धार के लिये अब प्रभू तुमको बुलाते हैं॥

वह ज्ञान-शक्ति दे दो जिससे कि शान्ति पायें।
हम पथिक तुम्हीं से ही यह आश लगाते हैं॥

तुम्हारे लिये क्या उचित है, यह परमेश्वर ही जानता है अपने हित के लिये जो कुछ तुम न कर सकोगे वह उनकी ओर से पूर्ण होगा। अपना कर्तव्य पूरा करो प्रभु की अहैतुकी कृपा पर विश्वास रक्खो।

भगवान तुम्हारी जय होवे, गुरुदेव तुम्हारी जय होवे॥

हो तुम्हीं एक आश्रय दाता, तुम रक्षक बन्धु पिता माता।
तुम बिन है राह कौन पाता, तुमसे ही जीव अभय होवे॥

तुम परम-तत्व के ज्ञाता हो, दुर्गति में सुगति विधाता हो।
तुम दिव्य प्रकृति निर्माता हो, कुसमय तुमसे सुसमय होवे॥

दुखियों के सुख कारक तुम हो, अधमों के उद्धारक तुम हो।
भव सागर से तारक तुम हो, तुमसे सौभाग्य उदय होवे॥

पशु में मानवता लाते तुम, मानव को देव बनाते तुम।
वह योग विधान सिखाते तुम, जिससे पापों का क्षय होवे॥

कल्याण शरण में आते ही, दुखहारी दर्शन पाते ही।
पथ-दर्शक तुम्हें बनाते ही, आनन्द लाभ अतिशय होवे॥

धृति सुकृति सुमति मिलती तुमसे, कीरति शुभगति मिलती तुमसे
तप त्याग विरति मिलती तुमसे, अति सुन्दर सदय हृदय होवे॥

मैंपन सब तुममें खो जावे, अन्तर का मल यह धो जावे।
जीवन अमृतमय हो जावे, चेतना तुम्हीं में लय होवे॥

ऐसा अब दे दो ज्ञान प्रभो, कुछ रह न जाय अभिमान प्रभो।
बस रहे तुम्हारा ध्यान प्रभो, यह पथिक प्रेम तुममय होवे॥

परमात्मा अपने ज्ञान स्वरूप से सबके एकमात्र परम गुरू हैं। गुरू होने के लिये गुरू शरण परमावश्यक है। गुरू तत्व देह तत्व से भिन्न है। गुरू तत्व अविनाशी है, देह विनाशी है।

स्वामिन श्री सद्गुरु भगवान ॥
तुम शरणागत के प्रतिपालक, अनुपम दया निधान ॥
तुम समर्थ सर्वज्ञ सरल चित, प्रेम निधे अविकारी हो।
तुम अज्ञान तिमिर के नाशक, दीन बन्धु दुख हारी हो।
तुम सन्मति सद्गति के दाता, ज्ञाता गुणी महान ॥
अधमोंद्धारक तारक तुमही, सर्व सिद्धि के तुम दानी।
अपने अपने इच्छित सुख का, तुम से पथ पाते प्रानी।
करुणा वत्सल दया दृष्टि से, करते तुम कल्यान ॥
इस भूतल में प्रेम भाव वस, मानव तन धर आते हो।
पद्म पत्रसम निर्मल रह कर, लीला विविध दिखाते हो।
तुम सच्चिदानन्द घन हे प्रभु, पथिक हृदय धन प्रान ॥

जो अपने मन को चेला बना लेता है वही गुरू की शरण लेकर गुरू हो जाता है। देह की पूजा को गुरू पूजा न मानो। गुरू आज्ञा को पूर्ण करना ही सच्ची गुरू पूजा है। अपनी लघुता को गुरुता में लीन करने के लिये गुरू आज्ञा का पालन करना गुरू उपासना है।

जय परमानन्द मयं स्वामिन सद्गुरु जी ॥
ऐसे तुम दयानाथ, सुमिरत ही गहत हाथ।
बार बार नाऊँ माथ, स्वामिन सद्गुरु जी ॥
मेरे आधार तुम्हीं, वार तुम्हीं पार तुम्हीं।
हरते दुख भार तुम्हीं, स्वामिन सद्गुरु जी ॥
कोमल चित अति उदार, हमको भी लो उबार।
कर दो भाव सिन्धु पार, स्वामिन सद्गुरु जी ॥
पथिक प्राण जीवन धन, स्वीकृत हो यह तन मन।
सर्वस तुम में अरपन, स्वामिन सद्गुरु जी ॥

जो लघु को अपने समान गुरू बना लेता है वही ज्ञान स्वरूप गुरु है। गुरू को जानो, देह को गुरू न मानो।

यदि आज गुरुजनों का अवतार न होता।
सद्धर्म धरा धाम पै विस्तार न होता॥
अपने को त्याग तप में यदि ये न तपाते।
जीवों का किसी भांति भी निस्तार न होता॥
सद् ज्ञान का प्रकाश भी मिलता नही कहीं।
गुरुदेव का खुला जो दया द्वार न होता॥
कितने अधः पतित हम सबके लिये यहाँ।
यदि ये न उतरते तो उद्धार न होता॥
निर्द्वन्द पथिक हो रहे गुरुदेव शरण में।
जिनकी कृपा बिना है कोई पार न होता॥

जिसमें अनन्त ऐश्वर्य, अनन्त माधुर्य, और अनुपम सौन्दर्य एक साथ मिलते हैं वही भक्तों का भगवान है। भक्त वही है जो भगवान के अतिरिक्त किसी का चिन्तन नहीं करता।

हे अच्युत अविचल हे भगवन!
परमेश परात्पर आनंदघन!
हे केवल! विभु अज-विश्वभरन!
हे नित्य! निरंजन शान्तिसदन॥
विश्वेश — रमेश — महेश्वर हे!
करुणेश सुहृद हे प्रेमरमण।

हे अविगत—शुचितम—जगवन्दन !
हे दानी कलिमल क्लेशहरन ॥
हे शक्तिद भक्तिद मुक्तिद हे !
अपना लो मेरा यह तन मन ।
प्राणेश प्रभो ! हे जगजीवन !
सब छोड़ करें तव ध्यान भजन ॥
हे सत्य महान सुज्ञाननिधे !
अभिलाष यही कब हों दर्शन ।
हे कोमल ! अनुपम मनमोहन !
तव रूपसुधा के प्यासे नयन ॥
हे पावन ! प्रेरक हे प्रियतम !
शरणागत पालक चरन शरन ।
हे देव ! दयामय दैत्यदलन ।
स्वीकृत हो पथिक हृदय अरपन ॥

भगवद् भजन के लिए मन की पवित्रता और स्वस्थ शरीर होना परमावश्यक है ।

मन के पवित्र होने पर ही स्थिरता प्रसन्नता निर्भयता आती है, प्राण-शक्ति प्रबल होती है ।

जै जै परमेश्वरं नमामि नारायणं ।
जै जै अखिलेश्वरं नमामि नारायणं ॥
जै जै जगदीश्वरं जयति महेश्वरं ।
सत्यं सुन्दरं शिवं नमामि नारायणं ॥

व्यापकं अजं विभुं नित्यं केवलं शुभं।
हे अनन्त अव्ययं नमामि नारायणं ॥

निर्गुणं गुणाश्रयं निष्क्रियं क्रियालयं।
निर्मलं दयामयं नमामि नारायणं ॥

नित्य शुद्ध शक्तिदं भक्तपाल भक्तिदं।
हे महान मुक्तिदं नमामि नारायणं ॥

जै सुरेश श्रीपतिं जै उमेश शंकरं।
निश्चलं निरंजनं नमामि नारायणं ॥

आप्तकाम शान्तिदं सौम्यं ज्ञानध्यानदं।
हे कृपालु कोमलं नमामि नारायणं ॥

जै श्रीराम राघवं जै गोविन्द माधवं।
पथिक प्राणेश्वरं नमामि नारायणं ॥

जिस मन से कामना निकल जाती है उस मन में भगवान निवास करते हैं।

अखण्ड सम्बन्ध होने पर ही परम प्रभु के नित नव प्यार का निरन्तर स्मरण सम्भव है।

तुमहीं सबके जीवन प्रान, हे अन्तर्यामी भगवान ॥

कोई तुमको क्या पहिचाने, जिसे जना दो सोई जाने।
मेरे परमाराध्य महान, हे अन्तर्यामी भगवान ॥
तुमसे ही अणु अणु में गति है, तुमसे रचती सृष्टि प्रकृति है।
अखिल विश्व के परमस्थान, हे अन्तर्यामी भगवान ॥

तुम्हें न भूलूं यही विनय है, फिर कुछ भी हो कहीं न भय है।
सब विधि रहे निरन्तर ध्यान, हे अन्तर्यामी भगवान॥
हे सर्वेश्वर विभु अविनाशी, सर्वाधार परम सुखराशी।
पथिक सदा गायें गुणगान, हे अन्तर्यामी भगवान॥

जो किसी का नहीं तथा जिसका कोई नहीं उसके भगवान अपने आप सब कुछ हो जाते हैं। जो जिसका भक्त होता है उसके बिना उसे चैन नहीं पड़ती।

नाथ हम भी शरण में हैं आये हुए।
आपही में हैं मन को मनाये हुए॥
मुझ पतित को प्रभो अब तो पावन करो।
अपने पापों से हम हैं लजाये हुए॥
दब रहे हैं दुःखों की कठिन भीड़ में।
मुक्त होने की आशा लगाये हुए॥
अब सुनो हे दयामय हमारी विनय!
दीन दुखिया बहुत हम सताये हुए॥
जबकि मायेश! हम पर दया दृष्टि हो।
तब बचेंगे तुम्हारे बचाये हुए॥
और किससे कहूँ मैं व्यथा की कथा।
देख लो आप जो हम छिपाये हुए॥
अब उबारो हमें मोह के भार से।
बहुत दिन हो चुके हैं भुलाये हुए॥
रम रहे हो तुम्हीं मेरे मन प्रान में।
फिर भी रहते स्वयं को चुराये हुए॥

पथिक के बीच से दो मिटा आवरण।
देखें सब में तुम्हीं को समाये हुए॥

सच्ची व्याकुलता ही भगवान तक पहुँचाने में समर्थ है। उनके बिना कहीं चैन न लो। रह रह कर हृदय से उन्हें पुकारते रहो।

बतादो प्रभो तुमको पाऊँ मैं कैसे।
विमुख होके सन्मुख अब आऊँ मैं कैसे॥
विषय वासनायें निकलती नहीं हैं।
ये चंचल चपल मन मनाऊँ मैं कैसे॥
कभी सोचता तुमको रोकर पुकारूँ।
पर ऐसा हृदय को बनाऊँ मैं कैसे॥
प्रबल है अहंकार साधन न सयंम।
ये अज्ञान अपना मिटाऊँ मैं कैसे॥
कठिन मोह माया में अतिशय भ्रमित हूँ।
प्रभो बिन दया पार जाऊँ मैं कैसे॥
हृदय दिव्य आलोक से जो विमल हो।
विनय किस तरह की सुनाऊँ मैं कैसे॥
दयामय तुम्हीं मुझ पथिक को सम्हालो।
मैं कितना पतित हूँ दिखाऊँ मैं कैसे॥

जिसमें आनन्द की लालसा और भोग जनित सुख की कामना है वही जीव है। जिसके योग से आनन्द की प्राप्ति और जिसकी शक्ति से कामना की पूर्ति होती रहती है वही ईश्वर है।

प्रभो भूले हुए को राह लगाते जाना।
मोह माया से मुझे नाथ छुड़ाते जाना॥
खोजते खोजते मैं खोगया हूँ जाने कहाँ।
दयानिधे मुझे अब होश में लाते जाना॥
अपने छिपने के लिए पर्दा बनाया संसार।
कैसे पाऊं तुम्हें ये युक्ति बताते जाना॥
ध्यान वह दो कि न भूलूं तुम्हें निशि दिन भगवन्।
मगन रहूँ वह लगन अपनी सिखाते जाना॥
यहाँ वहाँ कहीं कुछ है तो बस तुम्हारा खेल।
छिपो न अब सदा तुम दृष्टि में आते जाना॥
चाहे कैसा भी हूँ पर अब तो आप ही का हूँ।
पथिक हूँ शरण में अब नाथ निभाते जाना॥

जो कुछ मिला है उसे अपना न मानो। अपना मानने से ही मोह, लोभ, अभिमान परिपुष्ट होता है। सब कुछ परमेश्वर की दया से मिला हुआ समझने पर मोह लोभादि विकार मिटते हैं।

वह प्रेम दो हमें प्रभो जिससे कि तुम्हें पायें।
तज करके मोह माया केवल तुम्ही को ध्यायें॥
जब जब हमें दबायें यह भोग वासनायें।
वह शक्ति दो कि जिससे अपने को हम बचायें॥
ऐसी हो चाह सच्ची जो चैन न लेने दे।
प्रियतम तुम्हें रह रह कर हम हृदय से बुलायें॥

सबसे विरक्त होकर अनुरक्त हों तुम्हीं में।
केवल सुनें तुम्हारी अपनी तुम्हें सुनायें॥
चिन्तन में तुम्हारे ही तल्लीन चित्त होकर।
जब चुप न रह सकें तब तुमसे ही रोयें गायें॥
जब तक मुझे शरण में स्वीकार तुम न कर लो।
हम पथिक इसी धुन में अपना समय बितायें॥

शरण ही निर्बल को बल, साधक को सिद्धि, प्रेमी को प्रेमपात्र, भक्त को भगवान, दुखी को आनन्द, पतित को पवित्रता, भोगी को योग, परतंत्र को स्वतंत्रता, बद्ध को मुक्ति, भयातुर को अभयता मर्त्य को अमरता प्रदान करती है।

परम प्रियतम प्रभु सर्वाधार प्रेम का प्यार पा जाऊँ।
अहा फिर क्या! अनुपम आनन्द मुक्ति का द्वार पाजाऊँ॥
सदा तुम तक हो गति निर्बाध यही है इस जीवन की साध।
हमारे मिट जायें अपराध शरण-अधिकार पा जाऊँ॥
तुम्हारी लीला अलख अपार भुवन मनमोहन लीलाधार।
तुम्हारे छद्म वेश विस्तार मोह का पार पा जाऊँ॥
मुझे दे दो वह पावन ज्ञान समझ पायें हम तुम्हें महान।
तुम्हारा दृढ़ हो जाये ध्यान यही आधार पा जाऊँ॥
युगों से खोज फिरे संसार पथिक पर कृपा करो इस बार।
तुम्हारा निरावरण अविकार प्रभो आकार पा जाऊँ॥

जिसमें गुण का अभिमान है उसी को अन्य के दोष दीखते हैं। सभी दोषों की वृद्धि भिन्नता से होती है। सभी गुणों की परिपुष्टि एकता से होती है। यथार्थ विवेकी और प्रेमी ही एकता को पूर्ण कर सकता है। राग और द्वेष रहते एकता पूर्ण नहीं होती।

सत रूप प्रभो अपना अवतो मुझे दिखाना।
अज्ञान तिमिर मेरा हे दयामय मिटाना॥

हम रो रहे तुम्हीं से दुख हरण द्वार आकर।
परमेश न तुम बिन है मेरा कहीं ठिकाना॥

तुम दूर नहीं हमसे सब देख ही रहे हो।
अब लाज हमारी ये जैसे बने निभाना॥

तुम क्या हो और कैसे हम जान नहीं पाते।
निज बुद्धि योग देकर पावन मुझे बनाना॥

इस दृश्य जगत् में अब फिर फिर न भूल जाऊँ।
मुक्तिद स्वज्ञान अनुभव-पथ पथिक को बताना॥

जो प्रेम शून्य है वही ईश्वर विमुख है। प्रेम विहीन ज्ञान से जड़ता आती है ज्ञान हीन प्रेम से मोह तथा कामुकता बढ़ती है। कामना युक्त प्राणियों में पवित्र प्रेम नहीं प्रगट होता।

तुमको ही निश दिन, ध्याऊँ मैं हे स्वामिन।
किस विधि से तुमको, पाऊँ मैं हे स्वामिन॥

प्रभु हम समान हैं, भक्त अनेक तुम्हारे।
पर तुम समान तो, तुमही एक हमारे॥
तुमको तजि कहीं न, जाऊँ मैं हे स्वामिन।
तुम हो महान—अगणित, ब्रह्माण्ड समाते॥

सूक्ष्म इतने हो—नहीं, दृष्टि में आते।
तुम अनन्त ? क्या, बतलाऊँ मैं हे स्वामिन॥

वह वेद नेति कह कर, तुममे तन्मय हैं।
अरु शेष शारदा गुण, गायन में लय हैं॥

यह सुन आनन्द मनाऊँ, मैं हे स्वामिन !
तुम दीन बन्धु हम, अतिशय दीन भिखारी ॥
प्रभु भूल भटक कर, आये शरण तुम्हारी ।
तुम्हरो ही पथिक कहाऊँ, मैं हे स्वामिन ॥

जो अपने प्रेमास्पद के विना कहीं कुछ भी पाकर चैन नहीं लेता वही सच्चा प्रेमी हो सकता है। जिसे अपने प्रम पर विश्वास है वह कभी निराश नहीं होता। अपने प्रेमास्पद से अपने लिए कुछ चाहना प्रेम को कलंकित करना है।

प्रभो माया का तुम्हारी, अकथ यह विस्तार देखा।
दिखाया जिसको तुम्हींने तुम्हें सर्वाधार देखा ॥
विमुख हो तुमसे विषमता, व्यथामय व्यापार देखा।
जीव को रोते हुए ढोते हुए, दुख भार देखा ॥
सभी के सन्मुख स्वनिर्मित क्षुद्र इक संसार देखा।
जहाँ निर्भय शान्ति का, मिलता न कुछ आधार देखा ॥
जब कि अपने आप पर पा विजय निज अधिकार देखा।
तभी अपने साथ दैवी शक्ति का भण्डार देखा ॥
आपके प्रति प्रेम का जब प्रवाहित उद्‌गार देखा।
तभी परमानन्द निधि को हृदय भर साकार देखा ॥
देह अभिमति छोड़ कर जब ज्ञान से सत्‌सार देखा।
पथिक दिव्यालोकमय तव मुक्ति मंदिर द्वार देखा ॥

अखण्ड प्रसन्नता चाहते हो तो अपने में ही प्रियतम की स्थापना कर लो। जिसके मन से वस्तुओं का चिन्तन ध्यान निकल जाता है उसका मन परम प्रभु के ध्यान में स्वतः लग जाता है।

किस तरह मन को मनाऊँ॥
मलिनता अति छा रही कैसे मिटाऊँ॥
पूर्व सञ्चित वासनायें, नित्य नूतन आयें जायें।
बँधा मायापाश में अति दुख उठाऊँ॥
विजयदायिनी शक्ति के बिन, प्रभुचरण में भक्ति के बिन
मोह वश उलझनों में जीवन बिताऊँ॥
व्यर्थ बीते जा रहे दिन, बताओ हे नाथ तुम बिन।
शून्यवत् संसार में किसको बुलाऊँ॥
तुम्ही हे प्रभु खबर लेना, सुखद शान्ति सुज्ञान देना।
मैं पथिक कैसे तुम्हारे पास आऊँ॥

आस्तिक के जीवन में चिन्ता विलाप भय का स्थान नहीं रहता। जो हर काल में हैं उसे जानना आस्तिकता है।

जो हर काल मे नहीं है उसे अपना मानना नास्तिकता है।

प्रभू के नाम पै मन को मनाये बैठे हैं।
कभी होगी दया आशा लगाये बैठे हैं॥
बहुत कुछ सोचने पर भी नहीं कुछ कर पाते।
हमारे पाप ही हमको दबाये बैठे हैं॥
देखना है वह हमें किस तरह अपनाते हैं।
धर्म से हीन हैं दुर्गुण छिपाये बैठे हैं॥
अबतो जैसे भी हैं हम शरण पतित पावन की।
तमाम ठोकरें जन्मों की खाये बैठे हैं॥
द्वार खोलेंगे कभी देख करके दीन दशा।
पथिक अब उनके ही सत्पथ में आये बैठे हैं॥

अपने दोषों के दुःख-पूर्वक ज्ञान से जाग्रति उत्पन्न होती है। कभी-कभी अपने गुणों के अभिमान से प्रमोद उत्पन्न होता है।

दोषों का चिन्तन न करो प्रार्थना और प्रायश्चित द्वारा अपने अन्तःकरण का निर्दोष बनाओ।

अपने अन्तर में कब हे प्रभु सत्स्वरूप का अवलोकन हो।
कब होगी यह बुद्धि निष्कलुष कब निर्मल यह मेरा मन हो॥

माया के प्रपञ्च विलव में कर्म भोग के भीषण रन में।
भटक रहा हूँ दुखप्रद भव में कब स्वामिन संकट मोचन हो॥

मिलती शांति न भगवन् तुम बिन आयु विगत होती है छिनछिन
चिन्तित रहता हूँ मैं निशि दिन कब मेरा विरक्त जीवन हो॥

किस साधन से पायें तुमको कैसे नाथ रिझायें तुमको।
प्रियतम भूल न जायें तुमको चाहे घर हो चाहे बन हो॥

अब न देव हमको भटकाओ जन्म मरण का त्रास मिटाओ।
सत चित आनन्द रूप लखाओ पथिक पतित के जीवन धन हो॥

सुखोपभोग के त्याग से ही योग सिद्ध होता है।
भोक्ता का अन्त होने पर तत्व ज्ञान होता है।
तीनों शरीरों से असंग होने पर स्वरूप ज्ञान होता है।
वस्तुओं तथा व्यक्तियों से मोह मिटने पर प्रेम होता है।

प्रभो तुम से परमानन्द पाते हैं हम।
नित नवआमोद के दिन बिताते हैं हम॥
आपके नाम सुमिरन से गुण ध्यान से।
जन्म जन्मों की बिगड़ी बनाते हैं हम॥

जो फँसाती है हमको महाँ मोह में।
उस अविद्या की ग्रन्थी छुड़ाते हैं हम॥
आपके ज्ञान विज्ञान आलोक में।
सारे कल्मष हृदय के मिटाते हैं हम॥
अभी तक तो दुखों में ही रोते रहे।
शरण आकर के सुख गीत गाते हैं हम॥
नाथ अब भव भ्रमण से बचा लीजिए।
पथिक जन आपके ही कहाते हैं हम॥

प्रत्येक घटना में परमेश्वर की अनिर्वचनीय लीला का अनुभव करो उन्हीं के हाकर रहने का स्वभाव बना लो। कृपा का अनुभव वहा कर पाते हैं जो सब प्रकार से परम प्रभु के होकर कर्त्तव्य-कर्म पूर्ण करते हैं।

अब तो तुमहीं दया करो गुरुदेव जी॥
कितने दिन से भटक रहे हैं दुख के काँटे खटक रहे हैं।
कहाँ कहाँ हम अटक रहे हैं करुणाकर मम हाथ धरो॥ गुरु०
मैं आचार विचार हीन हूँ, निर्बल हूँ अतिशय मलीन हूँ।
यही विनय सब भाँति दीन हूं, मोहिंन परखो खोटखरो॥ गुरु०
शील धर्म की बात न जानी, अपने स्वारथ की ही ठानी।
करते रहे यही मन मानी, सदा कुसङ्गति में बिगरो॥ गुरु०
यह बिगड़ी किस भाँति बनाऊँ स्वामिन तव ढिग कैसे आऊँ।
लज्जित हूँ क्या मुँह दिखलाऊँ महा पतित मैं पाप भरो॥ गुरु०
तुमही मेरे सदगति दाता, तुमही पिता तुम्हीं हो माता।
तुमही सरवस सब विधि त्राता, आज हमारे क्लेश हरो॥ गुरु०

हे प्रभु पावन प्रेम दान दो, जीवन मुक्तिद शान्ति ज्ञान दो।
परमानन्द स्वरूप ध्यान दो, पथिक तुम्हारी शरण परो ॥गुरु०

निर्बल वही है जिसके पास अपना कुछ नहीं है।
अभिमान रहित वही है जो अपना कुछ नहीं मानता है।
बड़ी से बड़ी अच्छाई अभिमान आने पर बुराई में बदल जाती है।
अभिमानी व्यक्ति वस्तु व्यक्ति की दासता से मुक्त नहीं हो पाता।

अब रखना लाज हमारी ॥

हम क्षुद्र पतित हैं जितने, प्रभु तुम महान् हो उतने।
हम अपराधी हैं इतने, पर तुम दयालु हो कितने।
हम आरत तुम दुखहारी, अब रखना लाज हमारी ॥

तुम पूरण हम परिमित हैं, तुम पावन हम कलुषित हैं।
तुम निश्चल हम चलचित हैं, सब विधि अति दीन दलित हैं।
तुम अमृत हम विषधारी, अब रखना लाज हमारी ॥

निज कर्मों के प्रतिफल में, फंसते नित दुख दल दल में।
चल रहे तुम्हारे बल में, विश्वास यही पल पल में।
तुम हरते विपदा सारी, अब रखना लाज हमारी ॥

ज्यों चाहो नाथ निभादो, भव निधि से हमें बचा दो।
जीवन पार लगा दो, प्रेमा मृत हमें पिला दो।
हम आये शरण तुम्हारी, अब रखना लाज हमारी ॥

जिसका ध्यान होगा उसी की प्राप्ति होगी। जो जिसका चिन्तन करता है उसी रूप को प्राप्त होता है। चिन्तन उसी का होता है। जिसे अपना मान लिया जाता है।

बसो इन नयनन में

हे मन भावन भगवान बसो इन नयनन में ॥

हे विश्वम्भर परमेश एक परमाश्रय।
तुम सबके जीवन प्रान बसो इन नयनन में ॥

हे सुन्दर ! हे सर्वस्व ! सुखों के स्वामी।
हे अनुपम दया निधान बसो इन नयनन में ॥

हे दाता ! हम तो आये द्वार तुम्हारे।
दो भक्ति प्रेम का दान बसो इन नयनन में ॥

हे हरि ! हम दीन अकिंचन मोह भ्रमित हैं।
हर लो सारा अज्ञान बसो इन नयनन में ॥

हे प्रेमनिधे ! परमात्मन् अन्तर्यामी ।
कर दो मेरा कल्यान बसो इन नयनन में ॥

हे प्रियतम प्रभु ! मैं पथिक तुम्हारा ही हूँ।
दे दो निज शरण स्थान बसो इन नयनन में ॥

सन्त वचन—जिसके बिना किसी प्रकार नहीं रह सकते उसका ज्ञान होने पर ध्यान स्वतः हो जाता है। ध्यान में वह इच्छायें बाधक हैं जो पूरी नहीं हुई और मिट नही सकीं।

मेरे परमाधार तुम्हीं हो

मेरे जीवन में जीवन तुम अतिशय सुन्दर अनुपम धन तुम।
सब सुख के भण्डार तुम्ही हो मेरे परमाधार तुम्ही हो॥

अलख अनन्त नित्य अविकारी भक्त भाव मय लीलाधारी।
अतुलित पूर्ण उदार तुम्ही हो मेरे परमाधार तुम्ही हो॥

अद्भुत रसमय रीति तुम्हारी तुम समान है प्रीत तुम्हारी।
सबके पालन हार तुम्हीं हो मेरे परमाधार तुम्हीं हो॥

रघुपति राघव राम कहीं तुम गोपी वल्लभ श्याम कहीं तुम।
निराकार साकार तुम्ही हो मेरे परमाधार तुम्ही हो॥

विविध रूप में भक्ति तुम्ही से सबकी है अनुरक्ति तुम्हीं से।
वार तुम्ही हो पार तुम्ही हो मेरे परमाधार तुम्ही हो॥

कभी न भूले ध्यान तुम्हारा रहे एक अभिमान तुम्हारा।
पथिक हृदय साकार तुम्ही हो मेरे परमाधार तुम्हीं हो॥

सन्त बचन—देहादिक वस्तुओं को अपना न समझो परमात्मा को ही अपना समझो तभी स्वतः चिन्तन ध्यान होने लगेगा। ध्यान का प्रयत्न ही ध्यान नहीं होने देता। आगे पीछे का चिन्तन भगवद् ध्यान में विघ्न है।

परमात्मन् परमानन्दमयं॥

हे करुणामय करतार तुम्हीं अक्षय सुख के भण्डार तुम्हीं।
अज नित्य शुद्ध ओंकार तुम्हीं अद्वैत अनन्त अपार तुम्हीं॥

हो निराकार साकार तुम्हीं प्रभु गुप्त प्रकट सत्सार तुम्हीं।
हे सुन्दर प्रेमागार तुम्हीं जग के हो मूलाधार तुम्हीं॥

हो पालक परम उदार तुम्हीं भव निधि से खेवनहार तुम्हीं।
सुनते हो करुण पुकार तुम्हीं सर्वेश्वर सर्वाधार तुम्हीं॥

इस पार तुम्हीं उस पार तुम्हीं करते सब विधि उद्धार तुम्हीं।
सुधि लेते सभी प्रकार तुम्हीं हो पथिक जीवनाधार तुम्हीं॥

सन्त वचन—राग द्वेष किया है तो त्याग प्रेम करना ही होगा विषयों का चिन्तन मिटाने के लिये भगवद् चिन्तन करना ही होगा। भोगाभ्यास किया है तो योगाभ्यास करना ही होगा। स्वार्थ सिद्ध किया है तो सेवा करनी ही होगी।

आनन्दरूप परमात्मन को ऐ मन तुम वारम्वार भजो ॥
सुख में दुख में हर रङ्ग ढङ्ग में छल छोड़ पुकार पुकार भजो ॥
चाहे तुम सीताराम कहो या मोहन राधेश्याम कहो।
अपनी श्रद्धा रुचि भक्ती से साकार या निराकार भजो ॥
चाहे तुम नमः शिवाय कहो या नमो वासुदेवाय कहो।
प्रभु परम पिता जगदीश कहो या सत्य नाम ओंकार भजो ॥
वाणी से शुभ गुण गान करो मन से तुम सुमिरन ध्यान करो।
सब काम धाम में लगे हुए तुम शक्तिमान करतार भजो ॥
अखिलेश कहो परमेश कहो देवेश रमेश महेश कहो।
व्यापक अव्यय अविचल महान् तुम 'पथिक' जीवनाधार भजो ॥

सन्त वचन—प्रपञ्च कथन का अभ्यास मिटाने के लिये परमार्थ विचार करना ही होगा। देह भाव धारण किया है तो आत्मभाव धारण करना ही होगा। किसी का अनहित किया है तो तप करना ही होगा।

हरे राम राम बोलो हरे कृष्ण श्याम बोलो ॥
क्या करना है क्या करते हो सोचो आँखें खोलो ॥
जीवन में प्रेमामृत भर लो नहीं द्वेष विष घोलो।
देखो अब निजस्वार्थ छोड़ कर तुम परमार्थ टटोलो ॥

सत्य, असत को लोभ मोह वश एक भाव मत तोलो।
अब तो हरि के प्रेम रंग में अपना हृदय भिगो लो॥
जो कुछ बने सुकृत सरिता में निज पापों को धोलो।
मृत्यु निशा आने वाली है अब इत उत मत डोलो॥
'पथिक' तुम्हें घर चलना हो तो सद्गुरु के संग होलो।
हरे राम राम बोलो, हरे कृष्ण श्याम बोलो॥

सन्त वचन—जो कुछ दीखता है उसे सत्य न मानो। जो कुछ तुम्हें मिला है उसका सदुपयोग करो। जो तुम्हारे साथ नहीं है उसकी इच्छा न रक्खो। केवल परमात्मा का चिन्तन करो।

ऐ मेरे मनभावन श्याम अकथनीय प्रिय पावन श्याम॥
परम सुहृद सुख कारी तुम हो प्रियतम हृदय विहारी तुम हो।
सबके हृदय लुभावन श्याम॥
अति कोमलचित शान्ति धाम तुम भक्तिद मुक्तिद पूर्ण काम तुम।
संशय शोक नशावन श्याम॥
सर्व गुणाश्रय गुणातीत तुम पतित उधारन अति पुनीत तुम।
अन्तर तिमिर मिटावन श्याम॥
जीवन के प्रभु जीवन तुम हो 'पथिक' प्राण सर्बस धन तुम हो।
चंचल चित्त चुरावन श्याम॥

सन्त वचन—तुम्हारे पास वही आता है जिसके तुम भागीदार हो। तुम्हारे पास से वही जाता है जो अब तुम्हारे भाग का नहीं है। आगे तुम्हें वही मिलेगा जो कुछ तुम दोगे इसलिये अब शुभ सुन्दर का दान करो अशुभ असुन्दर का त्याग करो।

जगत में परमात्मन् सुखधाम ॥
यह अति सुन्दर काया झूठी, इसकी ममता माया झूठी ।
झूठा विभव तमाम ॥
मात पिता पत्नी सुत भ्राता, यह सब मन माने का नाता ॥
सदा न आवें काम ॥
देखे बड़े बड़े अभिमानी योगी तपसी ज्ञानी ध्यानी ।
किसका रहता नाम ॥
जो तन मन प्राणों का जीवन, अर्पण कर सर्बस अपनापन ।
भजले आठो याम ॥
परम प्रेममय नित्य निरञ्जन अन्तर्यामी भव भय भँजन ।
पथिक आत्मा राम ॥

सन्त वचन —जो भोग सुखों से विरक्त हो रहा है वही जागृत है ।
शक्ति वही सार्थक है जो दूसरों के काम आ जाय ।
सफलता वही है जब कोई काम शेष न रह जाय ।

परमात्मन् सुखधाम मेरे अन्तर्यामी ॥
सब बिधि तुम्हें प्रणाम मेरे अन्तर्यामी ॥
जीवनेश तुम हो परेश तुम,
अनुपम ललित ललाम मेरे अन्तर्यामी ॥
हृदय बिहारी तुम दुखहारी,
प्रेम रूप निष्काम मेरे अन्तर्यामी ॥
जय अखिलेश्वर जयति महेश्वर,
ध्याऊँ आठों याम मेरे अन्तर्यामी ॥
भव भय भञ्जन असुर निकन्दन,
तुम्ही राम तुम्ही श्याम मेरे अन्तर्यामी ॥

तुम सुखराशी स्वयं प्रकाशी,
हो व्यापक सबठाम मेरे अन्तर्यामी ॥
अविचल निर्भय हे करुणामय,
पथिक न भूले नाम मेरे अन्तर्यामी ॥

सन्त वचन—यातो अपने में मन लगाओ या फिर भगवान में मन को लगाओ। आत्मा के निकट मन को रखना ही उपासना है। यातो अनुरागी बनो या निर्विकल्पता प्राप्त करो जो सब शक्तियों का मूल है।

ए मन हरि के नाम न भूलो परमात्मन् सुखधाम न भूलो ॥

अरे जागो यहाँ सुख ही दुख है किस मोह के स्वप्न में सो रहे हो
किस सुख के लिये ऐसे चाव से परपँच के भार को ढो रहे हो
छुट जायेंगे ये तो यहीं तुमसे जिनमें अति आसक्त हो रहे हो
यहाँआत्मोद्धार का जो समय था पथिक योंही उसे क्यों खोरहे हो
ऐ मन हरि के नाम न भूलो परमात्मन् सुखधाम न भूलो ॥

इस थोड़े दिवस के जीवन में ऐ पथिक किसी को सतावो नहीं
उपकार नहीं कर सकते तो निज स्वार्थ से पाप कमाओ नहीं।
धन, जन, वल औ विद्या बल पै अभिमान में आ इतरावो नहीं
निज दैव से सुख दुख हो सो हो मन से भगवान् भुलावो नहीं
ऐ मन हरि के नाम न भूलो परमात्मन् सुखधाम न भूलो ॥

भगवान से प्रेम जो करते नहीं वह मायिक मोह में भूलते हैं।
विषयानन्द मुग्ध उसी हिये में नाना विधि दुख शूल हूलते हैं।
वे अश्रु मुसक्यान के बीच सदा मध्यस्थ की भांति ही भूलते हैं।
आश्चर्य! पथिक हो सत्य विमुख फिर भी अभिमान में भूलते हैं।
ऐ मन हरि के नाम न भूलो परमात्मन् सुखधाम न भूलो ॥

कभी भूलो नहीं अपने प्रभु को उनके गुणगान ही गाते रहो।
हर काम में धाम में बैठे हुए, चलते हुए नाम को ध्याते रहो।
आना है तुम्हें हरि प्रेमियों में, तो प्रपंच का संग हटाते रहो।
जो चाहते हो सुख शांति पथिक सत्संग से प्रेम बढ़ाते रहो।
ऐ मन हरि के नाम न भूलो परमात्मन् सुखधाम न भूलो॥

सन्त वचन — शरण ही सफलता की कुन्जी है। तुम उस महान की शरण लो जो शरणागत को महान बनाने में समर्थ हो। आस्तिक एक की, नास्तिक अनेक की शरण लेता है।

ऐ मन तुम गाओ गान यही, श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम्॥
दिखता है भाव महान् यही, श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम्॥

चाहे जितना दुख सुख होवे, तू कभी न सत्य विमुख होवे।
निकले अन्तर से तान यही, श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम्॥

रहना घर में हो या वन में चिन्ता न रहे कोई मन में।
है सहज सुलभ शुभ ज्ञान यही, श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम॥

सुख साम्राज्य पाए तो क्या, या सर्वस खो जाये तो क्या।
भक्तों को तो अभिमान यही श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम्॥

फल ये ही मानव जीवन का, अभिमान छोड़ अपने पन का।
पा जाये परम स्थान यही, श्री हरि शरणम् श्री हरि शरणम्॥

मिलती इससे शुचि सद्गति है, यह कितनी सुन्दर सन्मति है।
बस रहे पथिक का ध्यान यही, श्रीहरि शरणम् श्रीहरि शरणम्॥

सन्त वचन—उपभोग विधिवत कर्म करने से, आत्म-ज्ञान त्याग से, और भगवान सद्भाव से मिलता है।

दूसरों के काम आना शुभ कर्म, वासनाओं को छोड़ना त्याग और आत्म-भाव ही सद्भाव है।

परमेश आनन्द धाम हो नारायणं नमो नमो।
सर्वज्ञ पूरण काम हो नारायणं नमो नमो॥

ऐसे दयानिधान तुम भक्तों के जीवन प्राण तुम।
मोहन हो नयनाभिराम हो नारायणं नमो नमो॥

अद्वैत अज अनन्त तुम अव्यय श्रीमन्त कन्त तुम।
तुम राम हो तुम श्याम हो नारायणं नमो नमो॥

सर्वस्व सत्य सार तुम श्रद्धेय विभु अपार तुम।
अनुपम, सुखद ललाम हो नारायणं नमो नमो॥

पावन परम उदार तुम प्यारे पथिक आधार तुम।
तुम सर्वमय सब ठाम हो नारायणं नमो नमो॥

सन्त वचन—परमप्रभु के नाते स्वकर्म करते रहना ही भजन है, आत्म समर्पण ही सच्चा भजन है। हृदय प्रभुप्रेम से पूर्ण हो; मन निर्विकल्प हो बुद्धि समस्थित हो; यही वास्तविक भजन है।

एक अनन्त अपार हो परमात्मन् मेरे॥
अनुपम सर्वाधार हो परमात्मन् मेरे॥
तुम अविनाशी घट घट वासी।
सबमें सबके पार हो परमात्मन मेरे॥

तुम लीलाधार अद्भुत सुन्दर।
निराकार साकार हो परमात्मन् मेरे ॥
परम प्रेम मय अविचल अव्यय।
जगदीश्वर करतार हो परमात्मन् मेरे ॥
तुमहीं दाता सब विधि त्राता।
गुप्त प्रकट सतसार हो परमात्मन् मेरे ॥
तुम जीवनधन सत् आनन्द घन।
परमशक्ति भण्डार हो परमात्मन् मेरे ॥
तुम सर्वेश्वर हे परमेश्वर।
'पथिक' जीवनाधार हो परमात्मन् मेरे ॥

सन्त वचन—विवेक युक्त जीवन ही मानव जीवन है। त्याग, ज्ञान और प्रेम की पूर्णता ही जीवन की पूर्णता है। आसुरी गुणों से जीवन अशुद्ध होता है दैवी गुणों से जीवन शुद्ध होता है। सेवा और तप के द्वारा जीवन की अशुद्धि दूर होती है।

परमेश्वर का ध्यान न भूलो, परम तत्व का ज्ञान न भूलो ॥
इस दुनिया में सार यही है, जीवन का आधार यही है।
तुम इसकी पहचान न भूलो ॥
सब सुख का भण्डार यही है, पावन प्रेमागार यही है।
निशिदिन प्रभु गुणगान न भूलो ॥
दुखों का उपचार यही है, भवनिधि में पतवार यही है।
सन्तों का सन्मान न भूलो ॥
सत्याचार विचार यही है, भक्ति मुक्ति का द्वार यही है।
दया प्रेम का दान न भूलो ॥
आश्रय सभी प्रकार यही है सब विधि 'पथिक' पुकार यही है।
अपना लक्ष्य महान न भूलो ॥

सन्त वचन—कामना के रहते विषयों के दासत्व से छुटकारा नहीं मिलता। कामना की उत्पत्ति से दुःखारम्भ होता है, पूर्ति से सुख प्रतीत होता है, कामना की निवृत्ति से आनन्द मिलता है। कामनाओं का अन्त करना ही जीवन का मंगलमय सदुपयोग है।

वह जीवन मंगल मय है ॥

जो संयम सत् व्रतधारी सत संगी पर उपकारी।
जिसको है शुचिता प्यारी अति सात्विक सरल हृदय है ॥
घर में हो या वन में हो स्वतन्त्र या वन्धन में।
भगवान् बसे जब मन में फिर जग में किसका भय है ॥
जो सत्य ध्यान में जागे विषयों को विषवत त्यागे।
माया ममता से भागे उसकी सब कहीं विजय है ॥
निशि दिन गुण गान प्रभू का हर रंग में ज्ञान प्रभू का।
चहुँ दिशि है ध्यान प्रभू का जब पथिक प्रभू में लय है ॥

सन्त वचन—सच्चा सेवक स्वयं ही प्रभु की कृपा का पात्र बन जाता है और गुरुजनों का आशीर्वाद उसे बिना माँगे ही मिल जाता है। जो जिसके काम आता है वही उसका प्रेम पात्र हो जाता है। दीन दुखी के काम आना दीनबन्धु प्रभु का प्रिय हो जाना है।

हे नटवर श्याम मुरारी ! गिरधारी ॥

विनय यही है तुमसे दीनानाथ।
दे दो अपना हे जीवनधन ! हाथ।
जिसके बल से तज दूँ जग की।
माया ममता सारी, गिरधारी ॥

तुम बिन मेरी और सुनेगा कौन।
पतित समझ कर मत हो जाना मौन।
देव तुम्हारी शरणागत हूँ।
रखना लाज हमारी, गिरधारी॥

यद्यपि मैं हूँ तप बल साधनहीन।
विषय विकारों से है हृदय मलीन।
किन्तु यही आशा बल मुझको।
तुम दीनन हितकारी, गिरधारी॥

मुझको तो कुछ अधिक नहीं है ज्ञान।
करुणा निधि की करुणा का है ध्यान।
मैं हूँ पथिक तुम्हारा हे प्रभु।
चाहूँ भक्ति तुम्हारी, गिरधारी॥

सन्त वचन—शरणागत को आवश्यक वस्तु बिना माँगे ही मिलती है, अनावश्यक वस्तु माँगने पर भी नहीं मिलती। काम का अन्त होने पर राम की कृपा राम से मिलती है।

जीवन के आधार हमारे राधेश्याम॥
भजलो बारम्बार हमारे राधेश्याम॥

चलते फिरते रोके गाके दुख सुख में मन समझा के।
कहो पुकार पुकार हमारे राधेश्याम॥

जय योगेश्वर कृष्ण मुरारी भक्त भाव मय लीलाधारी।
करते भव से पार हमारे राधेश्याम॥

हृदय रमण करुणा के सागर अनुपम अति सुन्दर नटनागर।
स्वयं प्रेम—साकार हमारे राधेश्याम॥

कुछ ही दिन का यह जीवन है प्रभू ध्यान ही सुखमय धन है।
पथिक मुक्तिदातार हमारे राधेश्याम॥

सन्त वचन—जिसके सभी द्वार बन्द हो जाते हैं तब प्रभु कृपा का द्वार अवश्य खुलता है। जो प्राप्त का अनादर और अप्राप्त का चिन्तन करते हैं वे प्रार्थना के अधिकारी नहीं हैं। प्रार्थना आस्तिक का जीवन और निर्बल का बल है।

हम आये शरण तुम्हारी, दयानिधान हे भगवान्॥
अब सुध लो नाथ हमारी जीवन प्राण हे भगवान्॥

यही विनय है तुम्हारा हृदय में ध्यान रहे।
तुम्हीं सर्वस्व हो अपने यही अभिमान रहे।
दीन दुनियाँ का मुझे और न कुछ भान रहे।
जहाँ कहीं भी रहूँ नाथ का गुण गान रहे।
तुम हेतु रहित उपकारी दया निधान हे भगवान्॥

तुम्हीं आधार हो केवल तुम्हीं सहारे हो।
सभी जीवों के एक तुम्हीं प्राण प्यारे हो।
सभी के मध्य हो सबसे परे किनारे हो।
अनेक हमसे तुम्हें एक तुम हमारे हो।
दुखियों के तुम दुखहारी दयानिधान हे भगवान्॥

वही जीवन है जो कि सत्य सुपथ पा जाये।
वही पावन है जो सद्गुरु की शरण आ जाये।
तभी आनन्द है भक्ती का नशा छा जाये।
कि रोम रोम में प्रभु प्रेम धुन समा जाये।
मम अन्तर हृदय बिहारी दयानिधान हे भगवान्॥

कुछ भी पाऊँ या मैं खोऊँ तो यही कह करके।
कभी हंसूँ या मैं रोऊँ तो यही कह करके।

सदा ही जागूँ या सोऊँ तो यही कह करके।
पथिक तुम्हारा ही होऊँ मैं यही कह करके।
प्रभु सरबस के अधिकारी दया निधान हे भगवान्॥
हम आये शरण तुम्हारी दया निधान हे भगवान्॥

सन्त वचन—जिसके द्वारा अनुभव करते हो वह स्वयं प्रकाश आपका निज स्वरूप है। अपने निज स्वरूप की एक रसता का बोध ही सत्य ज्ञान है। निज स्वरूप सभी अवस्थाओं से अतीत है।

नमो परमात्मन नमो परमात्मन,
परमात्मन सुखधाम नमो॥

कुछ भी दुनियाँ के करूँ काम यही कहते हुये।
मिटै दुर्वासना तमाम यही कहते हुये।
बीतें दिन रात सुबह शाम यही कहते हुये।
जिधर देखूँ करूँ प्रणाम यही कहते हुये।

नमो परमात्मन नमो परमात्मन,
परमात्मन सुखधाम नमो॥

हर एक नाम में हर रूप में हो ध्यान यही।
मिटा देता है जो अज्ञान है वो ज्ञान यही।
यही पूजा स्वधर्म और व्रत विधान यही।
मन से बाणी से सदा होता रहे गान यही।

नमो परमात्मन नमो परमात्मन,
परमात्मन सुखधाम नमो॥

यही मेरा सदा आधार इसी में आनन्द।
भूल जायें सभी संसार इसी में आनन्द।
रहूँ इस पार या उस पार इसी में आनन्द।
रहे यह ध्यान लगातार इसी में आनन्द।

नमो परमात्मन नमो परमात्मन,
परमात्मन सुखधाम नमो ॥

कहीं तो राम रूप में तुम्हीं परमेश्वर हो।
किसी को कृष्ण रूप में तुम्हीं जागदीश्वर हो।
तुम्ही सर्वेश हो रमेश हो महेश्वर हो।
सभी भावों में तुम्हीं पथिक जीवनेश्वर हो।

नमो परमात्मन नमो परमात्मन,
परमात्मन सुखधाम नमो ॥

सन्त वचन—किसी का ध्यान न करो इससे परमात्मा का ध्यान स्वतः शेष रह जायगा। मन के निस्संकल्प होने पर ध्यान दृढ़ होता है। हम अहं को नहीं भूलते और अहं के भीतर जो सत्य है उसे भूले रहते हैं।

न भूलो परमात्मन को ध्यान यही तो अपने जीवन प्रान ॥

यह सब सङ्गी कुछ ही दिन के तुम चल रहे भरोसे जिनके।
समझ कर यह समभ्रम अज्ञान न भूलो परमात्मन को ध्यान ॥

जग के वैभव बल जन धन में रहना निरासक्त इस तन में।
छोड़ के इन सबका अभिमान न भूलो परमात्मन को ध्यान ॥

केवल सर्वाधार यही है सुन्दर सुखमय सार यही है।
जोकि अति सूक्ष्म अतुल महान न भूलो परमात्मन को ध्यान ॥

ममता देह गेह की तजकर आ जाओ सतपथ में भजकर।
पथिक जो तुम चाहो कल्यान न भूलो परमात्मन को ध्यान ॥

सन्त वचन—जो हमारे अति निकट है जिसे पाने के लिये किसी देश काल की ओर नहीं देखना उसे ही नहीं प्राप्त कर पाते। निकट सत्य से दूर रहना और दूर प्रतीत होनेवाले असत्य के पीछे जन्मान्तरों से दौड़ते रहना यही प्रमाद है।

परमेश नमो विश्वेश नमो अखिलेश महान तुम्ही हो॥
हृदयेश रमेश महेश नमो व्यापक भगवान तुम्हीं हो॥
घनश्याम नमो श्रीराम नमो हे भक्तन हित अवतारी।
सुखधाम नमो सब ठाम नमो अनुपम मतिमान तुम्ही हो॥
सद्रूप नमो चिद्रूप नमो आनन्द रूप अविकारी।
इस ओर नमो उस ओर नमो सर्वत्र समान तुम्ही हो॥
हम माया में हैं भूल रहे मायापति शरण तुम्हारी।
उद्धार करो प्रभु पार करो हे दयानिधान तुम्ही हो॥
तुमसे गति है तुमसे पति है तुम परम सुहृद हितकारी।
हे नटनागर सद्गुण आगर सर्वज्ञ सुजान तुम्ही हो॥
दिन बीत रहे यह जीवन के सुध ले लो हृदय विहारी।
हम पथिक पतित के रक्षक नित करते कल्याण तुम्ही हो॥

सन्त वचन—अहं मिटे बिना भगवान से भक्ति नहीं होती। सब कुछ से विमुख होने पर साधन तीव्र होता है। कामना रहित होने पर ही कोई समर्पण कर सकता है। अनुकूलता ने ही भगवान से विमुख कर रक्खा है।

हे केशव ! हे कृष्ण मुरारी ! हे प्रभु पूरण काम ॥
मोर मुकुट पिताम्बर धारी, कुञ्जविहारी श्याम ॥

हे त्रैलोक्यनाथ नटनागर, हे कोमल चित करुणा सागर।
सौम्य सुजान सरल गुण आगर, हे परमाश्रय धाम ॥

हे अनन्त ! अविचल अविनाशी, हे व्यापक ! हे हृदय निवासी।
अकथ अलौकिक आनन्द राशी, प्रेम निधे अभिराम ॥

हे श्रद्धेय विभूति भुवन के, हे प्रियतम ! प्राणों के मन के।
तुम ही हो सरवस जीवन के, ध्याऊँ आठो याम ॥

हे स्वामिन ! मेरे मन भावन, हे योगेश्वर शोक नशावन।
पथिक पतित को करलो पावन, अधम उधारन नाम ॥

सन्त वचन—कोई भी भगवान का होकर भक्त हो सकता है। भक्त होकर ही कोई भगवान को उनकी कृपा से जान सकता है। परम प्रभु कृपा से ही मिलते हैं, कुछ करने से नहीं।

आनन्द सिन्धु परमेश्वर को,
मन भजले बारम्बार ॥
जो अखिल विश्व का जीवन,
प्रभु है अनुपम सर्वाधार ॥
जिसके कारण नाना तन धर,
यूं भटक रहे हो इधर उधर।
वह निधि तो है तेरे अन्दर,
तुम खोज फिरे संसार ॥

इस तन का कौन ठिकाना है,
कुछ दिन में ही तो जाना है।
क्यों माया में दीवाना है,
करले अपना उद्धार ॥
धन है तो कुछ नेकी करले,
बल विद्या से भक्ती भरले।
श्री सद्गुरु का आश्रय धर ले,
हो जाये भव से पार ॥
जो खुद को यहाँ फँसायेगा,
वह उतना ही दुख पायेगा।
यह कुछ भी काम न आयेगा,
जायेगा हाथ पसार ॥
जब जाग गया तो सोना क्या,
यदि समझ गया तो रोना क्या।
पा करके अब फिर खोना क्या,
यह पथिक मुक्ति का द्वार ॥

सन्त वचन—जितना वैराग्य प्रबल होगा उतना ही शीघ्र योग होगा। शव बने बिना शिव की प्राप्ति नहीं होती। विचार करो! जो कुछ भी दीख रहा है सब मिट रहा है। जो पहले था वह नहीं रहा जो कुछ है यह भी न रहेगा।

भजलो श्री भगवान जगत में, कुछ दिन के मेहमान ॥
रहे न रावण सम अभिमानी, हिरणाकश्यप सम वरदानी।
बल वैभव की खान जगत में, कुछ दिन के मेहमान ॥

आये अर्जुन सम धनुधारी, धर्मराज सम धर्माचारी।
दानी कर्ण समान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥

युग-युग की सब बात पुरानी, कलियुग की भी बहुत कहानी।
जो करि गये बखान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥

कहाँ विक्रमादित्य यहाँ हैं, कालिदास अरु भोज कहाँ हैं।
वह कारूं लुकमान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥

सुनी सिकन्दर दारा की कृति, सुनी बीरबल की सुन्दर मति।
अकबर से सुल्तान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥

अब न कहेंगे आँखों देखी, समझ रहे हैं सब की शेखी।
कितने दिन की शान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥

दुखी जनों का दुख न रहेगा, सुखी जनों का सुख न रहेगा।
क्यों भूला नादान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥

जगदीश्वर का नाम रहेगा, वही परम सुखधाम रहेगा।
यही खोज सद्ज्ञान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥

वह परमात्मन घट घट वासी, परमानन्द रूप अविनाशी।
'पथिक' न भूलो ध्यान जगत में, कुछ दिन के मेहमान॥

सन्त वचन—विचार करो ! किसके बिना तुम रह ही नहीं सकते। उसे जानो जो तुम्हारा कभी भी त्याग नहीं करता, जिससे तुम भिन्न हो ही नहीं सकते। उसे जाने बिना तुम्हें कहीं भी परम शान्ति मिल ही नहीं सकती।

जगत के स्वामी सिरजन हार,नमो परमात्मन परमाधार॥
जिसकी कहीं न इति है अथ है, ऐसी लीला अगम अकथ है।
तुम्हीं से व्यक्त हुआ संसार, नमो परमात्मन परमाधार॥

तुमको कभी न भूलूं मन से, वाणी से कर्मों से तन से।
तुम्हीं को ध्याऊँ वारम्बार, नमो परमात्मन परमाधार ॥

तुम सबके परमाश्रय दाता, तुम से जीव अभय वर पाता।
तुम्हीं अनुपम सुख के भण्डार, नमो परमात्मन परमाधार ॥

मैं भी शरण तुम्हारी आया, हे जीवनधन हर लो माया।
पथिक अब तुमको रहा पुकार, नमो परमात्मन परमाधार ॥

सन्त वचन—या तो जिसे चाहते हो उसके बिना कहीं चैन न लो या फिर चाह का ही त्याग करो। इस सत्य को समझ लो ! जिसका तुम त्याग नहीं कर पा रहे हो उसे ही चाहते हो, उसी से तुम्हारी प्रगाढ़ प्रीति है।

जो खोजते हैं पायेंगे वह ध्यान किसी दिन ॥
सद्भाव से मिल जायेंगे भगवान् किसी दिन ॥

गज गीध अजामिल वो गणिकादि को देखो।
इनका भी किया प्रभु ने कल्याण किसी दिन ॥

मुनि यती व्रती तपसी सब पीछे पड़ गये।
शबरी के घर में हो चुके मेहमान किसी दिन ॥

सुनते हैं वे हृदय की सच्ची पुकार को।
दिखलायेंगे फल अपना विनयगान किसी दिन ॥

सुमिरन करो हरि नाम को हर काम धाम में।
होगा सभी दुखों का अवसान किसी दिन ॥

मिल जाते पथिक प्राण नाथ प्रेम भाव में।
अपने ही को कर देते हैं वे दान किसी दिन ॥

सन्त वचन—सभी प्रकार की चाह शरीरभाव धारण करने से ही उत्पन्न होती है, चाह से कर्म का जन्म होता है। चाह मिटते ही ईश्वर से मानी हुई दूरी का संसार से माने हुए सम्बन्ध का अन्त हो जाता है।

इस दुनिया में सार यही है मिल जाँयें भगवान किसी दिन॥

नाम कीर्तन में या जप में इन्द्रिय संयम हठ व्रत तप में।
साधन का आधार यही है मिल जायें भगवान किसी दिन॥

तीर्थ धाम में दान धर्म में योग यज्ञ निष्काम कर्म में।
पापों से उद्धार यही है मिल जायें भगवान किसी दिन॥

चतुर शिरोमणि पण्डित ज्ञानी निश्चल चित अभ्यासी ध्यानी।
भक्तों का उद्गार यही है मिल जायें भगवान किसी दिन॥

अपने सर्वस जीवन धन से कर्मों से वाणी से मन से।
पथ में 'पथिक'-पुकार यही है मिल जायें भगवान किसी दिन॥

सन्त वचन—सर्व साधारण प्राणियों में विषयों के रसास्वाद की ही चाह प्रबल रहती है किन्तु विवेकी पुरुष में सब प्रकार से पूर्ण होने की चाह भोग सुखों से विरक्त बना देती है। जब तक सांसारिक सुखों की चाह है तब तक माँगनेवाले सभी दीन हैं। चाह-रहित होने पर मुक्ति फिर भक्ति सुलभ होती है।

प्रेम से ध्याओ बारम्बार।
नमो परमात्मन परमाधार॥
दुनिया सदा आराम के सामान को चाहे।
इन्सान तो इसी लिए इन्सान को चाहे।

कोई यहाँ अपने ही यशोगान को चाहे।
सब अपने अपने दीन और ईमान को चाहे।
कोई चहै कुरान या पुरान को चाहे।
है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे॥

प्रेम से ध्याओ बारम्बार।
नमो परमात्मन परमाधार॥

कोई तो यहाँ आके जरोमाल में खुश है।
पण्डित व मूर्ख अपनी अपनी चाल में खुश हैं।
हो करके कैद अपने अपने हाल में खुश हैं।
देखो तो सभी अपने ही स्वर ताल में खुश हैं।
पर भक्त तो सभी अपने प्रभू के ध्यान को चाहे।
है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे॥

प्रेम से ध्याओ बारम्बार।
नमो परमात्मन परमाधार॥

खुश किस्मती समझ के कोई नाम में भूले।
कोई यहाँ दिन रात अपने काम में भूले।
देखो किसी को ऐश व आराम में भूले।
आग़ाज में भूले कोई अन्जाम में भूले।
पर वो नहीं भूले कि जो सतज्ञान को चाहे।
है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे॥

प्रेम से ध्याओ बारम्बार।
नमो परमात्मन परमाधार॥

बुलबुल को रहा करती गुलिस्तान की तलाश।
उल्लू को देखिये तो है वीरान की तलाश।
हैवान को खुद जात के हैवान की तलाश।
सबको है अपने अपने इतमीनान की तलाश।

कोई जमीन कोई आसमान को चाहे।
है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे॥
प्रेम से ध्यावो वारम्वार।
नमो परमात्मन परमाधार॥

कङ्गाल की नजरों में है धनवान ही सब कुछ।
मोही हृदय के वास्ते सन्तान ही सब कुछ।
कमजोर को दिखता है बलवान ही सब कुछ।
आशिक को है माशूक की मुसकान ही सब कुछ।
पर बुद्धिमान जीवन कल्यान को चाहे।
है वही) भाग्यवान जो भगवान को चाहे॥
प्रेम से ध्यावो वारम्बार।
नमो परमात्मन परमाधार॥

कुछ लोग प्रेमिका के भाव प्यार में अटके।
कोई सभी प्रकार से परिवार में अटके।
अपकार में अटके कोई उपकार में अटके।
कुछ आगे बढ़ के स्वर्ग के सत्कार में अटके।
भोगों के लिये कोई परिस्तान को चाहे।
है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे॥
प्रेम से ध्यावो बारम्बार।
नमो परमात्मन परमाधार॥

कोई है परेशान अपनी जान के खातिर।
कोई लड़े मरते हैं अपनी शान के खातिर।
कुछ तन्त्र मन्त्र कर रहे बरदान के खातिर।
रोते हैं कोई हँसते हैं अरमान के खातिर।
पर पथिक तो अपने दया निधान को चाहे।
है वही भाग्यवान जो भगवान को चाहे॥

प्रेम से ध्यावो बारम्बार।
नमो परमात्मन परमाधार॥

सन्त वचन—अपने में अपना न दीखे तभी भजन हो सकता है। भगवान वहीं मिलते हैं जहाँ कोई और नहीं होता। जो भगवान को चाहते हैं वे भगवान को पाते हैं, जो भगवान से संसार की वस्तु चाहते हैं वे संसार में आबद्ध रहते हैं।

श्री शंकराचार्य विरचित चर्पट मंजरी के आधार पर भावानुवाद

भजु गोविन्दं भजु गोबिन्दं।
गोबिन्दं भजु मूढ़ मते॥

बाल वयस सब खेल गवांई तब तो रहा नहीं कुछ ज्ञान।
तरुणावस्था की मादकता में केवल तरुणी का भान।
वृद्ध भये तब रात दिवस, है नाना चिन्ताओं का गान।
दुर्लभ मानव तन पा करके, किया न परमेश्वर का ध्यान॥

भजु गोबिन्दं भजु गोबिन्दं।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते॥

बीती रात दिवस फिर आया, दिन बीता फिर आई रात।
सदा यही क्रम चलता रहता, नित्य शाम है नित्य प्रभात।
कभी ग्रीष्म है, कभी सिशिर है, कभी बसन्त कभी बरसात।
इसी चक्र में बद्ध जीव को, नचा रही है आशा वात॥

भजु गोबिन्दं भजु गोबिन्दं।
गोबिन्दं भजु मूढ़ मते॥

केश पक गये नेत्र कान भी, काम न देते मति गति भङ्ग।
धीरे धीरे दाँत गिर गए, सभी हो गए जीरण अङ्ग।
अस्थि पिण्ड से खाल लटकती, बिगड़ गया जीवन का रङ्ग।
तब भी तृप्त न हुई वासना, श्वासा है आशा के सङ्ग।

भजु गोबिन्दं भजु गोबिन्दं।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते॥

जन्म मरण के इस बन्धन से, हो न सकेगा यूँ उद्धार।
जब तक तू आसक्त स्वार्थ बस, करता जग से ममता प्यार।
इस दुस्तर माया से मानव, तब तेरा होगा निस्तार।
जब माया पति परमेश्वर को, सौंप चुकेगा जीवन भार।

भजु गोबिन्दं भजु गोबिन्दं।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते॥

जब तक तेरे तन मन धन से, पूरे होते सबके काम।
तब तक तुझसे प्रेम पूर्वक, लिपटा है परिवार तमाम।
जरा ग्रस्त होने पर एक दिन, छुट जायेगा यह धन धाम।
बात न पूछेंगे फिर कोई, संत न लेंगे तेरा नाम।

भजु गोबिन्दं भजु गोबिन्दं।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते॥

सलिल बिना है व्यर्थ सरोवर, धन से हीन व्यर्थ परिवार।
धर्म बिना धन धान्य व्यर्थ है, प्रेम दया बिन व्यर्थ विचार।
सद्गुण बिन सौन्दर्य व्यर्थ है, सेवा बिना व्यर्थ शृंङ्गार।
सद् विवेक बिन कर्म व्यर्थ है, भक्ति ज्ञान बिन जीवन भार।

भजु गोविन्दं भजु गोबिन्दं।
गोबिन्दं भजु मूढ़ मते॥

मूरख इतना मोहित होकर, है जिस सुन्दरता में लीन।

मांस भरे स्नायु जाल से, कसे पिण्ड के ही आधीन।
जिस विधि अपने रुधिर स्वाद में, श्वान मानता सुख मति हीन।
यही दशा है विषयी नर की, तृष्णा से रहता अति दीन।

भजु गोविन्दं भजु गोविन्दं।
गोबिन्दं भजु मूढ़ मते॥

अपने ही स्वारथ के भूँखे, कर न सके कुछ पर उपकार।
अपनी क्षुधा पूर्ति के कारन, झाँके किनके किनके द्वार।
मूड़ मुड़ाये जटा रखाये, भेष बनाये बिविध प्रकार।
तब तक शांति नहीं जीवन में, जब तक मिटै न विषय विकार॥

भजु गोविन्दं भजु गोबिन्दं।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते॥

त्यागी बन के बन बन डोले, कर तल भिक्षा तरु तर वास।
किन्तु जहाँ लौं आशा तृष्णा, तब तक पाता रहता त्रास।
क्यों न देखते निज अन्तर में, परमात्मन का प्रेम प्रकाश।
जिसकी कृपा किरण से होता है, अज्ञान तिमिर का नाश॥

भजु गोबिन्दं भजु गोबिन्दं।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते॥

अब न भूल तू इस माया में, करता रह भगवद् गुण गान
निज धन से दीनों दुखियों को, स्वार्थ छोड़ कर ले कुछ दान।
सन्त संग से पावन हो जा, धारण कर गीता का ज्ञान।
पुनि विवेक समता के द्वारा, परम तत्व को ले पहिचान।

भजु गोबिन्दं भजु गोबिन्दं।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते॥

जिसने श्रद्धा भक्ती का कुछ, थोड़ा भी पाया आनन्द।
गंगा जल गीता ज्ञानाश्रय से, कब रह सकती मति मंद।

मुक्त हो चला वह बंधन से, छूट गये सारे दुख द्वन्द ।
अनुरागी जो हुआ प्रभू का, पड़ न सकेंगे फिर यम फन्द ।

भजु गोविन्दं भजु गोविन्दं ।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते ॥

यही देख ! क्या रूप तुम्हारा, कौन पिता है माता कौन ।
कब से कितने दिन के सङ्गी, यह पत्नी सुत भ्राता कौन ।
यह संसार स्वप्नवत लीला, तेरा इससे नाता कौन ।
जाग ! जाग ! अब जाग, पथिक तू तेरा पालक त्राता कौन !

भजु गोविन्दं भजु गोविन्दं ।
गोविन्दं भजु मूढ़ मते ॥

सन्त वचन—जो संसार से काम नहीं लेते, वही भगवान का नाम लेकर भगवान की ओर जाते हैं। जिससे भगवदाकार वृत्ति हो वही भजन है ।

हे सुन्दर सलोने श्याम हमारे मन मोहन ॥
हे परमात्मन सुखधाम हमारे मन मोहन ॥
हे निर्गुण ! हे बिभु गुणाधार !
हे प्रभु सर्वज्ञ ललाम हमारे मन मोहन ॥
हे नित्य ! निरंजन ! हे निष्क्रिय !
हो तुम निर्भय निष्काम, हमारे मन मोहन ॥
हे करुणामय ! अविचल अव्यय !
अतुलित अनुपम अभिराम हमारे मन मोहन ॥
हे ज्ञान ध्यान के परमाश्रय !
हे मुक्ती के विश्राम हमारे मन मोहन ॥
तुम बाल्मीक के उलटे जप !
अरु तुलसी के श्रीराम हमारे मन मोहन ॥

तुम मीरा के गिरधर गुपाल !
हे सूरदास के श्याम हमारे मन मोहन ॥
भक्तों के हित हे भाव रूप !
तुम धारे अगणित नाम हमारे मन मोहन ॥
यह पथिक प्रेम से तुमको ही !
अब ध्याये आठो याम हमारे मन मोहन ॥

सन्त वचन—दोषों के रहते अथवा किसी कमी के रहते चैन न लो तो सारे दोष या प्रत्येक कमी से निवृत्ति मिल जायगी। अनुकूलता ने ही हमें भगवान से विमुख बना रक्खा है।

क्या करें भगवन बतादो

तिमिर तीव्र दिखा रहा हे प्रभु मिटा दो ॥
चोर अन्तर घुस पड़े हैं, निपट नटखट ये बड़े हैं।
दुर्दशा हैं कर रहे, इनको हटा दो ॥
उम्र बीती जा रही है, मृत्यु सन्मुख आ रही है।
कुछ न कर पाया प्रभो, बिगड़ी बना दो ॥
तुम्हे तजि मैं कहाँ जाऊँ, निज व्यथा किसको बताऊँ।
दयानिधि करके दया, दर्शन दिखा दो ॥
विश्व में व्यापक तुम्ही हो, और सब के परे भी हो।
पथिक के बन पथप्रदर्शक, दुख भगा दो ॥

सन्त वचन—जिस प्रकार सुख उदार होने के लिये मिला है। उसी प्रकार दुःख सुखोपभोग से विरक्त होने के लिये मिला है। विचार से उत्पन्न दुःख उन्नति का कारण होता है। दुःख दोषों को मिटा कर स्वयं मिट जाता है।

हे भगवन् भूल रहा भव में,
भ्रम विपति छुटैया कोई नहीं॥
यदि तुम भी नाथ न सुधि लोगे,
तब और सुनैया कोई नहीं॥
क्या इस भाँति भूलते हुए,
जीवन दिन सब खो जावेंगे।
शरणागत हूँ प्रभु आप बिना,
सत सुपथ दिखैया कोई नहीं॥
इतने पर भी यदि अधम जान,
अनकृपा दृष्टि से काम लिया।
तब तुम बिन मेरा इस जग में,
दुख द्वन्द मिटैया कोई नहीं॥
सन्तोष हेतु तुमही धन हो,
तुम बिन तो कुछ आधार नहीं।
हम निबल अपावन जन को तो,
तुम बिन अपनैया कोई नहीं॥
हे अधमोद्धारक दीनबन्धु,
मैं सत्य प्रेम का भिक्षुक हूँ।
भूलना न हे विभु आप बिना,
पथिक पति रखैया कोई नहीं॥

सन्त वचन—व्याकुलता रहित साधन प्राण हीन साधन है। व्याकुलता अनेकों दोषों का नाश करती है। अपने प्रेमास्पद के योग लाभ के लिये सच्ची व्याकुलता वही है जो किसी के संयोग की इच्छा ही न करे।

प्राण धन यह प्राण अब घबरा रहे हैं ॥
व्यर्थ जीवन दिवस बीते जा रहे हैं ॥

इसी आशा में कभी प्रियतम मिलेंगे।
विरह पीड़ा बीच मोद मना रहे हैं ॥

इस अनाश्रित के परम आश्रय तुम्हीं हो।
आपका गुण गान निशिदिन गा रहे हैं ॥

स्वर्ग भी सूना मुझे हे देव तुम बिन।
ये मनोहर सुख दुखद दिखला रहे हैं ॥

छद्म वेशी रुचिर भोग विलास सारे।
रम्य उपवन तपन सी अब ला रहे हैं ॥

निरख पाऊँ कब तुम्हारी प्रेम छवि को।
दरस बिन हम बहुत ही दुख पा रहे हैं ॥

मुझ पथिक को हे प्रभो पावन बनाओ।
आप ही का नाम लेते आ रहे हैं ॥

सन्त वचन—अनेकता का अन्त जहाँ होता है वही एकान्त है। एकान्त ही प्रियतम प्रभु के योग सिद्धि का स्थल है। सच्चा प्रेमी एकान्त सेवी होता है, उसके हृदय में प्रियतम तथा उसके प्रेम के अतिरिक्त किसी अन्य को स्थान नहीं मिलता।

प्राण तुम बिन रो रहे हैं ॥

हृदय धन ! तुमको न पाकर, शून्यता की शरण जाकर।
मनो मंदिर में तुम्हारी, मानसिक प्रतिमा बिठाकर।
इस सुलभ सद्भाव से, निज कलुषता को धो रहे हैं ॥

आज सूनी राह मेरी, कौन जाने आह मेरी।
यह अरण्य रुदन हमारा, विफल हैं सब चाह मेरी।
भग्न उर अरमान मेरे व्यथा मूर्छित सो रहे हैं॥

विभवभूतिअसार तुम बिन, शून्य सब शृंगार तुम बिन।
उठ रहे क्या क्या हृदय में, मूक हृदयोद्गार तुम बिन।
तुम्हीं देखो किस तरह हम, व्यर्थ जीवन खो रहे हैं॥

तुम्हें तज हम कहाँ जायें, तुम्हीं को अपनी सुनायें।
बतादो क्या करैं जिससे, तुम्हें परमाधार पायें।
हम पथिक अबतो तुम्हारे, ही भिखारी हो रहे हैं॥

सन्त वचन—विरह सर्वोपरि साधन है। वियोग का बढ़ा हुआ दुःख योग हो जाता है। संसार से निराश होने पर दुखहारी हरि दुःख हर लेते हैं।

मेरे उर की पीर कोई जाने ना॥

मैं जानूँ या प्रभु तुम जानो,
और तमाशेगीर कोई जाने ना॥

तरसभरी चितवन की करुणा,
वहत रहत दृग नीर कोई जाने ना॥

इक आशा लालसा चाह इक,
किहि विधि करत अधीर कोई जाने ना॥

वे सुध मगन लगन इक लागी,
रहूँ सदा गम्भीर कोई जाने ना॥

एकहि नाम ध्यान इक गायन,
एक बसी तस्वीर कोई जाने ना॥

जाके लगे पथिक सोइ जाने,
और प्रेम की तीर कोई जाने ना ॥

सन्त वचन—वियोग के बिना योग का आनन्द नहीं आता इसी लिये प्रियतम प्रभु छिपे हुए हैं। जब उनके बिना हम कहीं भी चैन न लेंगे तब वह अपने में ही प्रगट दीखेंगे।

जो जन चलते राह विरह की ॥
किसहू विधि कहूँ चैन न पावत,
रह रह निकले आह विरह की ॥
मन झुलसे तन तपै निरन्तर,
उठत हिये में दाह विरह की ॥
भूंख मरै नींदहु हरि जावै,
उपजत विथा अथाह विरह की ॥
सुध बुध तजि गावत हूँ रोवै,
अति दुःख भरी कराह विरह की ॥
जीवत मारै मारि जियावै,
इक आशा इक चाह विरह की ॥
पथिक विरह गति बिरही जानत,
उनको ही परवाह विरह की ॥

सन्त वचन—त्याग से शान्ति, तप से शक्ति, अपनत्व से प्रीति सेवा से पवित्रता स्वतः आ जाती है। उन सभी प्रवृत्तियों का अन्त करना होगा जो दीन और अभिमानी बनाती हैं।

प्रभु शरण तुम्हारी आता हूँ, जब शान्ति न जग में पाता हूँ ॥

जीवन में माया मान लिए, कुछ इधर उधर का ज्ञान लिए।
अपने सुख दुख के गान लिए, दर्शन के प्यासे प्रान लिये।
जैसा हूँ तुम्हें दिखाता हूँ, प्रभु शरण तुम्हारी आता हूँ ॥

है प्रभुता विभव तमाम कहीं, सन्मान पूर्वक नाम कहीं।
दिखता सुन्दर धन धाम कहीं, मिलता जब कुछ आराम कहीं।
इससे मैं अब घबराता हूँ, प्रभु शरण तुम्हारी आता हूँ ॥

मेरे सन्मुख कुछ भी आये, आकर चाहे कुछ भी जाये।
मन कितना ही सुख दिखलाये तुम बिन न मुझे कुछ भी भाये।
तुमको निज विथा सुनाता हूँ, प्रभु शरण तुम्हारी आता हूँ ॥

कुछ खीज रहा हूँ इस तन पर, चिढ़ उठता हूँ अशांत मन पर।
है ग्लानि हो रही जीवन पर विश्वास करूं किस साधन पर।
चलता हूँ गिर गिर जाता हूँ, प्रभु शरण तुम्हारी आता हूँ ॥

मुझको दुख देते पाप कहीं, बाधक बनते-अभिषाप कहीं।
करता हूँ व्यर्थ प्रलाप कहीं, होता अति पश्चात्ताप कहीं।
तुमको ही नाथ बुलाता हूँ, प्रभु शरण तुम्हारी आता हूँ ॥

किससे मैं कहूँ कहाँ जाऊँ, क्या क्या रोऊँ क्या क्या गाऊँ।
निज मन की किससे बतलाऊँ मैं पथिक तुम्हें कैसे पाऊँ।
इस धुनि में समय बिताता हूँ, प्रभु शरण तुम्हारी आता हूँ ॥

सन्त वचन—जब तुम किसी अन्य पर अपनी प्रसन्नता निर्भर न करोगे तब दीन न बनोगे। जब किसी वस्तु को अपना न मानोगे तब अभिमानी न बनोगे।

जीवनेश प्रभु जीवन के दिन यूं ही बीते जाते हैं ॥
हम तुममें तुम हममें ही हो फिर भी देख न पाते हैं ॥

शांति सुलभ पर त्याग नहीं है शक्ति सुलभ पर तप से हीन।
कैसे सदगति प्राप्त करें हम सभी भाँति से दुर्बल दीन।
तृष्णा तल पर भटक रहा मन होकर चंचल महाँ मलीन।
मेरा उठना तो अब केवल एक तुम्हारे ही आधीन।
कृपा दृष्टि से वञ्चित रहने तक ही पाप सताते हैं ॥

चढ़ा हुआ है जब तक उर में राग द्वेष का कलुषित रङ्ग।
जब तक दुर्गुण दोषों से यह शुद्ध न होते दूषित अंग।
तब तक तुमको पा न सकेंगे कितनी ही हो प्रबल उमंग।
अब कुछ ऐसी शक्ति हमें दो जिसके बल हो सकें असंग।
वही देखते जाते हम जो कुछ भी आप दिखाते हैं ॥

जो चाहा वह मिला अभी तक केवल शेष यही अभिलाष।
सब कुछ तजकर भजूँ तुम्हीं को कर दो यह भी पूरी आश।
मिट जायें सब दुःख हमारे कट जायें सारे भव पाश।
हर लो मेरी दुर्मति सारी कर दो मुझ में यतन प्रकाश।
यही प्रतीक्षा है अब कब तक मेरा मोह मिटाते हैं ॥

यह सच है हो चुका अभी तक अगणित पतितों का उद्धार।
मिल न सकेगा ऐसा कोई जिस पर हो न तुम्हारा प्यार।
सर्व समर्थ परम संरक्षक प्राणिमात्र के परमाधार।
हम भी एक पतित प्राणी हैं अब हमको भी करदो पार।
भूले भटके हुए पथिक हम शरण तुम्हारी आते हैं ॥

सन्त वचन—जिसकी आवश्यकता केवल भगवान ही रह जाते हैं वही भक्त बनता है। विषयी अनेक का और विरागी एक का भजन करता है।

यही एक अभिलाष हमारी, किस विधि से प्रभु तुमको पाऊं ॥
तुममें ही अपने को खोकर, हे प्रियतम तुम मय हो जाऊं ॥

तुम्हीं बताओ कौन जतन से, पूरी हो यह मेरी आशा।
किस प्रकार के प्रिय शब्दों में, अपने प्रेमोद्गार सुनाऊँ॥

निज अन्तर की अकथ वेदना, मूक भावनाओं के द्वारा।
कब तक चुपके चुपके कह कर, कैसे उर की प्यास बुझाऊँ ॥

मैं अति दीन मलीन अकिंचन, आज क्या करूं क्या न करूं मैं।
बोलो किस विधि प्रिय मन मोहन, तुम संग मिलनानन्द मनाऊँ ॥

किस विधिमुक्त हो सकूं अब मैं जग प्रपंच के बंधन दुःख से।
मुझे वही साधन बतला दो कैसे मन का राग मिटाऊँ ॥

नाथ तुम्हारी कृपा किरण से चमक उठे यह मेरा जीवन।
योग्य तुम्हारे बनूँ पथिक मैं तुमको निज सर्वस्व बनाऊँ ॥

सन्त वचन—बीते हुए का मनन न करो, आगे की चिन्ता न करो, वर्तमान में किसी संयोग में रस न लो, परम प्रभु के लिये व्याकुल रहो यही भजन है।

प्रभु मेरा मोह मिटाओ ! मिल जाओ ॥
किस साधन से तुमको पाऊँ, क्या लेकर मैं सन्मुख आऊँ।
कैसे तुमको नाथ रिझाऊँ, किन भावों में विनय सुनाऊँ
देव यही बतलाओ, मिल जाओ ॥
तुमहीं हो जीवन के जीवन, प्राणों के अरु मनके भी मन।
निर्बल के बल निर्धन के धन, तुम में ही है सब कुछ अरपन।

बिगड़ी दशा बनाओं, मिल जाओ ॥

वही दृष्टि दो हे करुणा मय, अहंभाव तुममें ही हो लय।
मैं तुममें हो जाऊँ निरभय, इतनी स्वामिन सुन लो अनुनय।

यह आवरण हटाओ, मिल जाओ ॥

यद्यपि दूर नहीं तुम स्वामी, घट घट व्यापक अन्तर्यामी।
अज सच्चिदानन्द गुण धामी, दिव्य प्रेम मय देवनमामी।

पथिक हृदय धन आओ, मिल जाओ ॥

सन्त वचन—भगवान की आवश्यकता प्रतीत होने पर और उनसे अपनत्व का भाव बढ़ने पर प्रीति बढ़ती है। प्रीति की प्रबलता में लोभ मोहादि विकार मिट जाते हैं।

कब पाऊँ तुमको जीवन धन ॥

रहते हैं तुम बिन विकल प्रान, भाये न किसी का ज्ञान ध्यान।
आ चुका तुम्हारी शरणागत सर्वस्व तुम्हीं में है अरपन ॥

हो रहा आज यह हृदय दीन, तुम अति पावन मैं अति मलीन।
हे प्रभु किस विधि सन्मुख आऊँ, लेकर अपना कलुषित तन मन ॥

अब इतनी कर दो दयानाथ, दे दो अपना वह पुण्य हाथ।
जिसका बल पाकर धन्य बनूँ, है रोम रोम की यही लगन ॥

हे सुन्दर हे प्रेमावतार, हे करुणामय! सुन लो पुकार।
मैं भिक्षु पथिक हूँ तेरा ही, मिलनाशा में नित रहूँ मगन ॥

कब पाऊँ तुमको जीवन धन ॥

सन्त वचन—जिसके योगानुभव से भय चिन्ता दुःख मिट जाते हैं वही महान है। जगत दृश्य से दृष्टि हटा लेने पर उस महान प्रभु का अनुभव होगा।

है उस महान् को नमस्कार ॥

जो केवल परमानन्द रूप, है जिसका कणकण में निवास।
उसको ही सब जग रहा खोज, जिसका यह जगमय चिद्‌विलास।
उस शक्तिमान् को नमस्कार ॥

जिसकी विभुता इतनी विशाल, बसता है उसमें शून्य व्योम।
जिसमें रहते पृथ्वी सागर, जिसमें चलते हैं सूर्य सोम।
उस प्रकृति प्राण को नमस्कार ॥

जो एक प्रेम के भाववश्य, पाते जिसको प्रेमी प्रवीन।
आते रहते जिसके सम्मुख, नीचातिनीच दीनातिदीन।
उस दयावान् को नमस्कार ॥

जिसको कहते हैं दीनबन्धु, जो दुखियों की सुनता पुकार।
जिसकीमहिमा अतुलितअनन्त, जिसका चहुँदिशिसेखुला द्वार।
उस गुण निधान को नमस्कार ॥

जिसकी इतनी है सरल प्राप्ति, मिल सकते हैं जो सभी ठाम।
भक्तों के ही भावानुसार, दर्शन देते आनन्द धाम।
उसके विधान को नमस्कार ॥

जो जीवन का निर्मल प्रकाश, मिटती है जिससे भूल भ्रान्ति।
गल जाता है देहाभिमान, मिलती है पावन परम शान्ति ॥
उस दिव्य ज्ञान को नमस्कार।

जिस बल से वह अज्ञेय तत्व, अनुभव होता यद्यपि अरूप।
जिसबलसेवह चिन्मयअचिन्त्य चिन्तनमें आता निज स्वरूप।
उस सतत ध्यान को नमस्कार॥

बढ़ती जिससे अनुरक्ति भक्ति, होता जिससे परमानुराग।
ऐसा जिसका सुन्दर प्रभाव, हो जाय पथिक में मोह त्याग।
उस सत्य गान को नमस्कार॥

सन्त वचन—भगवद् चिन्तन से विषय चिन्तन को, त्याग से ही राग को, प्रेम से ही द्वेष को, योग से ही भोग को, आत्म ज्ञान से ही देहाभिमान को मिटा सकोगे।

प्रेमी प्रेम भाव से गाके ध्याओ नारायण हरि ओम॥
मनकी सच्ची सुरति लगा के ध्याओ नारायण हरि ओम॥

इससे दूर रहेगी माया सार्थक हो जायेगी काया।
सन्तों की संगति में जाके ध्याओ नारायण हरि ओम॥

जिससे मन सुस्थिर हो जाये प्रज्ञा में विवेक बल आये।
ऐसा साधन नियम बना के ध्याओ नारायण हरि ओम॥

जिसकाकुछ भी नहीं ठिकाना, उससे क्याफिर प्रीति बढ़ाना।
इस दुनिया से हृदय बचा के ध्याओ नारायण हरि ओम॥

अपना जीवन व्यर्थ न खोना यहाँ कहीं मत मोहित होना।
सेवा में निज स्वार्थ मिटा के ध्याओ नारायण हरि ओम॥

चाहे कुछ भी आये जाये लक्ष्य न कहीं भूलने पाये।
पथिक शरण सद्गुरुकी आके ध्याओ नारायण हरि ओम॥

सन्त वचन—ममता सहित प्यार ही राग है। ममता रहित प्यार ही निष्काम प्रीति है। प्रेम को व्यापक सीमायुक्त बना लेना ही भक्ति है। अपने आप में विश्राम करना मुक्ति है।

प्रियतम दयानिधान, तुम्हें हम कैसे पायें॥
भक्तों के भगवान, तुम्हें हम कैसे पायें॥

जबकि ध्रुव के समान, तप के लिये शक्ति नहीं।
और शबरी की भाँति, भाव नहीं भक्ति नहीं।
मन में मीरा की तरह, धुन नहीं अनुरक्ति नहीं।
त्यागियों की तरह, भोगों से भी विरक्ति नहीं।
ऐसे पतित महान, तुम्हें हम कैसे पा ॥

जगत् को ब्रह्ममय देखें, हमें वह ज्ञान कहाँ।
करें विचार तो हैं, ऐसे बुद्धिमान कहाँ।
जागते सोते तुम्हें ध्यायें, ऐसा ध्यान कहाँ।
तुम हो घट घट में रमे, पर हमें पहिचान कहाँ।
हैं मूरख नादान, तुम्हें हम कैसे पायें॥

कोई दिन रात भजन में समय बिताते हैं।
कोई तप करके मन की वासना जलाते हैं।
कोई हठयोग से कुछ शक्तियाँ जगाते हैं।
हमीं ऐसे हैं जो कुछ भी नहीं कर पाते हैं।
हो किस विधि कल्याण तुम्हें हम कैसे पायें॥

तीर्थों में गए, तुमको वहाँ नहीं पाया।
यज्ञ, व्रत, दान ने तो स्वर्ग मार्ग दिखलाया।

जिधर देखा उधर ही, घोर अँधेरा, छाया।
तुम कहीं भी न मिले, मिली तुम्हारी माया।
हुए देख हैरान, तुम्हें हम कैसे पायें॥

तुम्हारी खोज में लाखों, यहाँ भटकते हैं।
जिधर ही जाते हैं, उस ओर ही अटकते हैं।
तरह तरह की ख्वाहिशों में, सब लटकते हैं।
घूम फिर करके फिर, यहीं पै सर पटकते हैं।
खो करके अभिमान, तुम्हें हम कैसे पायें॥

बहुत से तपसी व्रती, सत्यमार्ग भूल गए।
वो सिद्धियों के ही, अभिमान में बस फूल गए।
बहुत से जानकर भी, धर्म के प्रतिकूल गए।
कण से पर्वत बने, पर्वत से फिर बन धूल गए।
अजब निराली शान, तुम्हें हम कैसे पायें॥

तुम्हारी राह में कोई तो, सूली चढ़के चले।
बहुत से वेद वो शास्त्रों, को ही पढ़पढ़ के चले।
गिरे हुए भी उठे, जोश में फिर बढ़के चले।
कुछ तो मत सम्प्रदाय, और धर्म गढ़ के चले।
विरले पाये जान, तुम्हें हम कैसे पायें॥

गिरे हुए के लिये, तुम्हीं उठाने वाले।
दुखों से रोते हैं जो, उनको हँसाने वाले।
सद्गुरु रूप में, सोते से जगाने वाले।
सुन लो भूले हुए को, राह दिखाने वाले।
दीन पथिक का गान, तुम्हें हम कैसे पायें॥

सन्त वचन—स्थूल शरीर से सेवा करो, सूक्ष्म शरीर से परमात्मा का चिन्तन करो, कारण शरीर से सत्य में ही स्थिति प्राप्त कर लो। मन को परमात्मा में लगाओ बुद्धि को संसार में लगाओ।

प्रभो अपने मन में बसाऊँ तुम्हीं को।
हृदय में हृदय धन बिठाऊँ तुम्हीं को॥

यही एक स्वीकार मेरा विनय हो,
विमल हो मलिन मन सदा ध्यान लय हो।
तुम्हीं में हमारा ये जीवन अभय हो,
स्वचित चेतना वृति मति प्रेम मय हो।
हर इक स्वास से अब बुलाऊँ तुम्हीं को॥

दिखाया है मुझको किनारा तुम्हीं ने,
दिया मुझ निबल को सहारा तुम्हीं ने।
सुपथ में कुपथ से पुकारा तुम्हीं ने,
मुझे घोर दुख से उबारा तुम्हीं ने।
जगत में दयानाथ पाऊँ तुम्हीं को॥

कहीं भी रहूँ पर रहे ध्यान तुम पर,
निकलते रहें यह विरह गान तुम पर।
रमो प्रान में तुम रमें प्रान तुम पर,
निरन्तर रहे ज्ञान अवधान तुम पर।
सुनूँ मैं तुम्हारीं सुनाऊँ तुम्हीं को॥

तुम्हीं एक हो जीवनाधार मेरे,
परम देवता पूज्य साकार मेरे।
तुम्हीं एक इस पार उस पार मेरे,
मिले हो मुझे प्रेम अवतार मेरे।

पथिक के तुम्हीं एक ध्याऊँ तुम्हीं को ॥
प्रभो अपने मन में बसाऊँ तुम्हीं को ॥

सन्त वचन—प्रीति की प्यास वही जो कभी बुझे नहीं, प्रीति का पेट वही जो कभी भरे नहीं, प्रीति का जल वही जो कभी घटे नहीं।

हे प्रभु तुम आ के चले गए ॥

सोचा था तुमको पायेंगे, अपने उद्‌गार सुनायेंगे।
यह जीवन सफल बनायेंगे, मेरे सब दुख मिट जायेंगे।
पर मेरी सब आशाओं को क्यों व्यर्थ बना के चले गये ॥

अब देखो हे भगवन तुम बिन यूं ही बीते जाते हैं दिन।
मिलनाशा में घड़ियाँ गिन गिन, होते रहते अधीर छिन छिन।
किन अपराधों से तुम हमको इक राह बता के चले गये ॥

यह सच है हममें भक्ति नहीं, साधन में भी अनुरक्ति नहीं।
भोगों से अभी विरक्ति नहीं, हम हैं अधिकारी व्यक्ति नहीं।
क्या इसीलिए हे दीनबन्धु हमको फुसला के चले गये ॥

हम होकर अतिशय दीन हृदय, हैं शरण तुम्हारी करुणामय।
मेरे पापों का कर दो क्षय, जिससे मैं हो जाऊँ निर्भय।
फिर मिलो पथिक के मन मोहन, क्यों झलक दिखाकेचलेगये ॥

सन्त वचन—चाह को व्याकुलता से, प्रेम को त्याग से, ज्ञान को समता से, तप को सहन शीलता से, प्यार को सेवा से, प्रीति को चिन्तन से, शक्ति को श्रम से, उदारता को दान से नाप कर देखो।

कौन जतन प्रभु तुमको पाऊँ ॥

प्रेम ज्ञान नहिं, योग ध्यान नहिं,
पुण्यवान नहिं, किहि बल जाऊ ॥

चरित विमल नहिं, मन निश्छल नहिं,
विद्या बल नहिं कसत रिझाऊँ ॥

शील सुमति नहिं, शान्ति सुकृति नहिं,
त्याग विरति नहिं, काह दिखाऊँ ॥

पथिक विरह दुख निकसत ना मुख,
कतहुँ न कछु सुख दिवस बिताऊँ ॥

सन्त वचन—निराशा दासता से मुक्त करती है। निराशा के विना निर्मोहता नहीं आती। संसार से निराश होने पर ही कोई भगवद भजन कर सकता है।

अपना दुख प्रभु किसे सुनाऊँ ॥

तुमही केवल देख रहे हो जो कुछ भी मैं रोऊँ गाऊँ॥
इस जग में जब रहना ही है, सुख के सँग दुख सहना ही है।
यही बता दो हे जीवनधन किस विधि से अब दिवस बिताऊँ ॥
जब तक यह मोहान्धकार है, दीख न पड़ता कहीं पार है।
वह प्रकाश दो जिससे अपनी, गति मति सुन्दर शुद्ध बनाऊँ ॥
विघ्न रोकते राह हमारी, दुर्बल है कुछ चाह हमारी।
ऐसी शक्ति मुझे दो भगवन, जिससे अपने दोष मिटाऊँ ॥
तुमसे ही अनुराग करूँ मैं, सकल कामना त्याग करूँ मैं।
पथिक तुम्हारा होकर अब तो, जैसे भी हो तुमको पाऊ ॥

सन्त वचन—विचार के बिना अनुराग हृदय की पीड़ा बनता है और अनुराग के बिना विचार मस्तिष्क का बोझ बन जाता है ।

हमारे प्रेमनिधे भगवान ॥

तुम्हीं ऐसे सुन्दर श्रद्धेय, परम धन जीवन के आधार ।
तुम्हारी अकथप्रीति प्रिय नीति, तुम्हारा अतुलित अनुपम प्यार ।
रमे यह रोम रोम में ध्यान ॥

आज किस मुँह से बिनती करूँ, जबकि मैं अतिमलीनमतिमन्द ।
पतित हूँ निर्बल हूँ सब भाँति, कहूँ क्या क्या हे आनन्द कन्द ।
जानते सब तुम दयानिधान ॥

जहाँ इतना अपनाया मुझे, कहीं मैं भूल न जाऊँ नाथ ।
सफल हैं जनम जनम के पुण्य, थाम लो हे प्रभु मेरा हाथ ।
तुम्हीं तो अपने प्रियतम प्रान ॥

तुम्हारा बिरही हो फिर भला, चाह कब लेने देती चैन ।
सदा उत्सुक उत्कण्ठित हृदय, व्यथित रहता तुमबिन दिन रैन ।

पथिक पथ में गाकर यह गान ॥
हमारे प्रेमनिधे भगवान ॥

सन्त वचन—बड़ी से बड़ी अच्छाई अभिमान आने पर बुराई में बदल जाती है । देहाभिमानी संसार का दास होता है । सत्य से भिन्नता, असत्य से अभिन्नता स्वीकार करने पर अभिमान बढ़ता है । विवेक से अभिमान की निवृत्ति होती है ।

जिसका तुम्हें अभिमान है यह भी न रहेगा।
जिस बल पै तुम्हें शान है यह भी न रहेगा॥

तुम गा रहे हो गर्व से अपना विभव प्रताप।
झूँठा सभी सामान है यह भी न रहेगा॥

सोचो तो कैसे कैसे जमाने गुजर गए।
जिनसे कि तू हैरान है यह भी न रहेगा॥

आये हैं चले जायँगे कुछ देर के मेहमान।
क्या देखता नादान है यह भी न रहेगा॥

ऐ पथिक परम भक्त और भगवान् के सिवा।
जो कुछ है नाशमान् है यह भी न रहेगा॥

सन्त वचन—परम प्रभु जिसे अपनाना चाहते हैं उसके सभी विश्वास तोड़ देते हैं। अपना सब कुछ देते ही प्रियतम मिल जाते हैं। मन को खाली कर लेना ही प्रियतम के पाने का साधन है।

हे जीवन धन मिल जाओ॥

मैंने देख लिया जग सारा, मिला न मुझको कहीं सहारा।
होश हुआ तब तुम्हें पुकारा, अब मत देर लगाओ॥

तुम किस विधि देते हो दर्शन, कैसे निश्चल हो चंचल मन।
कौन सुलभ मिलने का साधन, वही मुझे बतलाओ॥

तुमही अपना ऐसा बल दो, तुम्हीं हमारे दोष कुचल दो।
तुमही मुझको मति निर्मल दो, निज अनुकूल बनाओ॥

अब प्रभु तुम बिन कुछ न सुहाये, चाहे कुछ भी आये जाये।
पथिक हृदय तुमहीं को ध्याये, अब न कहीं भरमाओ॥

सन्त वचन—सद्‌गुरु के महत्त्व को जान लेने पर गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा होती है। गुरु का दर्शन आंखों से नहीं होता वह तो गुरु कृपा से बुद्धि दृष्टि खुलने पर ज्ञान प्रकाश में होता है।

सद्‌गुरु एक तुम्हीं आधार॥
जब तकतुम न मिलोजीवनमें, शान्ति कहाँ मिल सकती मन में।
खोज फिरे संसार॥
जब दुख पाते अटक अटक कर, सब आते हैं भूल भटक कर।
एक तुम्हारे द्वार॥
जीव जगत् में सब कुछ खोकर, बस बच सका तुम्हारा होकर।
हे मेरे सरकार॥
कितना भी हो तरन हारा, लिया न जब तक शरण सहारा।
हो न सका वह पार॥
हे प्रभु तुम्हीं विविध रूपों से, सदा बचाते दुख कूपों से।
ऐसे परम उदार॥
हम आये हैं शरण तुम्हारी, अब उद्धार करो दुख हारी।
सुन लो पथिक पुकार॥
सद्‌गुरु एक तुम्हीं आधार॥

सन्त वचन—आवश्यकता होने पर सच्ची चाह और सुनने से बनावटी चाह होती है। भोग सुखों की चाह ही योग सिद्धि की ओर नहीं बढ़ने देती।

भक्तों की एक चाह में, दर्शन दिखाते आप हैं।
दुखियों की सच्ची आह में, हे नाथ आते आप हैं॥

जीवों पर प्यार करते हुए, नीचों के बीच उतरते हुए।
पतितों के पाप हरते हुए, बिगड़ी बनाते आप हैं॥

जो मोह नींद में सो रहे, जीवन व्यर्थ ही खो रहे।
जो स्वप्न दुःख में रो रहे, उनको जगाते आप हैं॥

तुमसे ही शान्ति के सारे साज, भूले भलेही मानव समाज।
अपनी शरण लिये की लाज, सच में निभाते आप हैं॥

कोई तुम्हें पाते ज्ञान में, हैं देखते कोई ध्यान में।
जो कि पथिक अज्ञान में, उनको उठाते आप हैं॥

सन्त वचन—सुख के भोगी सौभाग्यवान नहीं है क्योंकि उनके सुख भोग का अन्त अवश्य होगा, दुखी सौभाग्यशाली होता है क्योंकि वह सुख से विरक्त होकर परमेश्वर की शरण लेता है। जो दुख से डरता है वह कुछ नहीं कर सकता। दुख दोषों को मिटाने आता है।

दुखों से अगर चोट खाई न होती।
तुम्हारी प्रभो याद आई न होती॥

कभी जिन्दगी में ये आँखें न खुलतीं।
जो सतगुरु से मेरी रसाई न होती॥

मेरे नाथ तुमको कहाँ कौन पाता।
जो मिलने की सूरत दिखाई न होती॥

कहीं पर मुझे चैन मिलती न जग में।
जो तुमसे ये तकसीन पाई न होती॥

पथिक ऐसे पापी भी कैसे सुधरते।
तुम्हारे यहाँ जो सुनाई न होती॥

सन्त वचन—नम्रता ही बुद्धि को झूठे विचारों से अभिमान से बचाती है। विनीत नम्र एवं त्यागी ही परमार्थ सिद्धि पाता है। पथ की कठोर परीक्षा में नम्रता और धैर्य के द्वारा सफलता मिलती है।

बताऊँ कैसे मन की बात॥

हे मनमोहन प्रियतम तुम बिन और न कछू सुहात!
जग प्रपंच के कोलाहल से रहि रहि जिय अकुलात॥
नाथ किसी विधि मोहिं उबारो अवसर बीतो जात।
कब वह दर्शन द्वार खुलेंगे मग निरखत दिन रात॥
मेरी जो कुछ पतित दशा है मुख सों कहत लजात।
एक तुम्हारी दया दृष्टि पर हमहुँ लगाये घात॥
तुम्हीं एक सबके परमाश्रय ज्ञात और अज्ञात।
पथिक तुम्हें जितनों ही समुझत सुध बुध जात भुलात॥

सन्त वचन—परम प्रभु के प्रीति-पूर्वक स्मरण से प्रपञ्च विस्मरण हो जाता है। प्रपञ्च विस्मरण से ही निरन्तर स्मरण दृढ़ होता है। प्रभु की सतत दया के ज्ञान से स्मरण का ध्यान रहता है।

यही विनय है कभी कहीं भी, प्रभो! तुम्हें हम भूल न जायें।
जीवन के इन प्रति द्वन्दों में, जीवनेश, तुमको ही ध्यायें॥
कितना ही मुझको सुख दुख हो, जो कुछ भी मेरे सम्मुख हो।
सभी दशा में निर्भय होकर, तुममें ही आनन्द मनायें॥

दीन बन्धु भगवान् सही हैं, पर हम तो दीन भी नहीं हैं।
अब अपनी ही ओर देख कर, मेरी मति गति शुद्ध बनायें ॥
अद्भुत अकथ तुम्हारी माया, इसने किसको नहीं नचाया।
जिसमें सुर मुनि जन भी मोहे, हम अपनी क्या बात चलायें ॥
यहाँ न भक्ति प्रेम का बल है, साधन में मन अति चंचल है।
पथिक तुम्हारी ही शरणागत, अब तो जैसे बने निभायें ॥

सन्त वचन—महान के चिन्तन से महत्ता प्राप्त होती है। चिन्तन के अनुसार ही चित्त का रूप बन जाता है। अशुद्ध का चिन्तन चित्त की अशुद्धि है, शुद्ध का चिन्तन ही चित्त की शुद्धि है।

हे समर्थ शक्ति मान ! हे परम गुरो महान ॥
हे निज जन मन रंजन, हे सत्वर भय भंजन।
हे नर हरि मद गंजन, परम वन्द्य जगत प्रान ॥
कोमल करुणावतार सर्वोपरि सुखाधार।
सबके प्रति अमित प्यार दुखहारी दयावान ॥
अतिशय गम्भीर धीर, हे सुन्दर परम वीर।
तुम तम का हृदय चीर, देते हो दिव्य ज्ञान ॥
हे निर्भय परम बुद्ध, माया ममता विरुद्ध।
हे प्रभु सर्वाङ्ग शुद्ध, चाहे यह पथिक ध्यान ॥

सन्त वचन—हीरा से जौहरी बड़ा क्योंकि उसी से हीरा का मूल्यांकन होता है। औषधि से वैद्य बड़ा है क्योंकि उसी के द्वारा औषधि का उपयोग होता है इसी प्रकार भगवान से गुरू बड़ा क्योंकि गुरू के द्वारा ही भगवान का परमात्मा का बोध होता है। भगवान के ज्ञान स्वरूप को गुरू कहते हैं।

गुरुदेव की दया

सौभाग्य से गुरुदेव की जो शरण में आया ॥
गुरुदेव की दाया से छुटी जीव की माया ॥

माया के छद्म रूप में संसार भुलाना ।
गुरुदेव की दया बिना मिलता न ठिकाना ।
माया में देह गेह से ही नेह लगाना ।
गुरुदेव की दया से सत स्वरूप को जाना ।

माया की मोहनी से गुरु ने ही बचाया ॥
सौभाग्य से गुरुदेव की जो शरण में आया ॥

ये माया सदा सुखियों को है सुख में फँसाती ।
दुखियों को तो सद्गुरु की दया आके बचाती ।
गुरुदेव की दया इधर किसको न छुटाती ।

माया ने गिराया वहीं सद्गुरु ने उठाया ॥
सौभाग्य से गुरुदेव की जो शरण में आया ॥

माया ने भोगियों को भोग रोग में डाला ।
गुरुदेव ने निज योगियों को इनसे निकाला ।
माया में है अज्ञान तिमिर से पड़ा पाला ।
गुरुदेव की दया से मिला ज्ञान उजाला ।

असहाय दलित दीन को हृदय से लगाया ॥
सौभाग्य से गुरुदेव की जो शरण में आया ॥

ये माया के पर्दे हैं जो सद्वस्तु छिपाते ।
गुरुदेव की दया है जो कि आ के लखाते ।
ये माया है जिसमें कि सभी गोते लगाते ।
ये दाया है गुरुदेव की जो तारते जाते ।

अपना बना लिया जिसे कि सामने पाया ॥
सौभाग्य से गुरुदेव की जो शरण में आया ॥

माया तो जन्म देके हमें जगत में लावै।
सद्गुरु की दया वहीं मुक्ति द्वार दिखावै।
माया में काम क्रोध लोभ मोह सतावै।
गुरुदेव की दया समर्थ इनसे छुटावै।
माया ने रुलाया वहीं सद्गुर ने हँसाया ॥
सौभाग्य से गुरुदेव की जो शरण में आया ॥

माया में मिला करते हैं सब भोग के सामान।
सद्गुरु की दया से मिलें मायापती भगवान्।
गुरुदेव न भूलें चहे भूले सकल जहान।
गुरुदेव की अकथ दया बनी रहे महान।
इस पथिक को मिलती रहे सद्ज्ञान की छाया ॥
सौभाग्य से गुरुदेव की जो शरण में आया ॥

सन्त वचन—वर्तमान जीवन से असन्तोष होने पर उन्नति का आरम्भ होता है। जब प्राणी गुणों का उपभोग करने लगता है तब विकास रुक जाता है।

प्रभो तुम्हें हम कहाँ पै खोजें, यहाँ तो कुछ भी खबर नहीं है।
ये जिन्दगी यूँ ही जा रही है, किसी तरह से सबर नहीं है ॥

कोई कहीं पै मना रहा मन, किसी को प्यारा है अपना तनधन।
बिना तुम्हारी शरण के भगवन, कहीं चैन उम्र भर नहीं है ॥

अगर तुम्हें प्रेम से बुलाते, तुम अपने को यूँ छिपा न पाते।
इन आहों से खिंच के आ ही जाते, यही कसर है असर नहीं है ॥

कहो किस तरह तुम्हें पुकारूँ कहाँ प्रेममय वो छवि निहारूँ ।
मैं अपना सर्वस तुम्हीं पे वारूँ और किसी विधि गुजर नहीं है ॥

यही विनय है भूल न जाऊँ सभी तरह से तुम्हीं को ध्याऊँ ।
पथिक तुम्हारा हूँ तुमको पाऊँ हमें और कुछ फिकर नहीं है ॥

सन्त वचन—जो अचानक अज्ञात रहकर भी आपत्ति से मुझे बचा लेता है मेरा हित उन्हीं के हाथों में सुरक्षित है ।

क्या अनोखी शान है गुरुदेव के दरबार में ।
खुले हाथों ही दया का दान है इस द्वार में ॥

तर रहे कितने पतित शठ, ज्ञान शून्य सुधर रहे ।
भर रहे सुचि शान्ति से गुरुनाम के आधार में ॥

जिसने देखा है वही बस जानता इस बात को ।
कह नहीं सकते कि क्या जादू है इनके प्यार में ॥

कीर्ति, मति, गति बुद्ध, वैभव जिसको जो कुछ है मिला ।
गुरुकृपा से ही सुलभ सब कुछ हुआ संसार में ॥

प्रेममय भगवान प्रियतम हृदय के अतिशय सरल ।
रीझ जाते हैं पथिक के तनिक से उद्गार में ॥

सन्त वचन—परम प्रभु को शरण लेकर जब अनुकूल सुख मिले तब उनकी दया को देखो और जब प्रतिकूलता आती जाये, दुख मिलें तब कृपा का अनुभव करो ।

प्रभु हम भी शरणागत हैं, स्वीकार करो तो जानें।
अब हमें पतित से पावन, सरकार करो तो जानें ॥
प्रेमी जन तुमको पाते, तुम भक्ति भाव वश आते।
हम कुटिल, हृदय के कलुषित निस्तार करो तो जानें ॥
ज्ञानी तुमसे तन्मय हैं, ध्यानी भी तुम में लय हैं।
हम अज्ञानी चंचल चित, उपचार करो तो जानें ॥
क्या मुख ले विनय सुनायें, हम कैसे तुमको भायें।
अगणित अपराध किये हैं, उद्धार करो तो जानें ॥
जीवन नैया जर्जर है, क्षण-क्षण विनाश का डर है।
ऐसे भी एक पथिक को अब पार करो तो जानें ॥

सन्त वचन—जो प्रतिकूलता को अपनाते हैं वे भगवान के सन्मुख होते हैं। वे जिसे अपने से दूर रखना चाहते हैं उसे अनुकूल परिस्थिति देते हैं।

प्रभो आनन्दघन, नमो परमात्मन ॥

परम प्रेममय पूरन, प्रेमियां का भजन—नमो परमात्मन ॥
सबके आश्रयदाता कोई भी हो शरन—नमो परमात्मन ॥
सुमिरन मुदमंगलमय लगी जिनकी लगन—नमो परमात्मन ॥
जितना ही जो ध्यावै, रहे जीवन मगन—नमो परमात्मन ॥
और न कोई दूजा, एक सर्वस्व धन—नमो परमात्मन् ॥
हर रूप में हर रंग में, पथिक के मन हरन—नमो परमात्मन् ॥

सन्त वचन—सच्ची चाह ही मिलन की राह बना देती है, चित्त को स्थिर करती है। जो प्रियतम के लिये त्याग, तप, तथा शुभ सुन्दर का दान नहीं कर पाता उसमें सच्ची चाह नहीं है।

कहीं भी चैन जो लेने न दे वह चाह सच्ची है।
रहे उनकी फिकर हरदम यही परवाह सच्ची है॥

उसी को हम असर समझें कसर बिलकुल न रहजाय।
विरह का दर्द भड़काती रहे वह आह सच्ची है॥

बहुत कुछ पाठ पूजा और तप व्रत करके यह समझे।
विकल होकर के रोना हो मिलन की राह सच्ची है॥

यहाँ जीते हुए ही मुक्ति मिलती मौत मरती है।
ये पहुँचे प्रेमियों की ही कही अफवाह सच्ची है॥

कहीं बाहर न भटको अब तो खोजो उनको अपने में।
पथिक यह देह मन्दिर और दिल दरगाह सच्ची है॥

सन्त वचन—जिसकी आवश्यकता होती है उसी से सम्बन्ध होता है, सम्बन्ध होने पर ही चिन्तन ध्यान स्वतः होने लगता है। भगवान से भगवान की आवश्यकता का अधिक महत्व है।

अभिलाष यही निशि दिन, प्रियतम तुम्हें पाऊँ मैं।
जिस भाँति बने तन मन, सेवा में लगाऊँ मैं॥

अपने हृदय मन्दिर में, आसन बिछा श्रद्धा का।
तुमको बुला बुला कर, प्राणेश बिठाऊँ मैं॥

तप त्याग मयी शुचिता, से विमल हृदय होकर।
कर्तव्य की सुविधि से शृंगार सजाऊँ मैं॥

अति तरस दीनता से, तल्लीन हुए मन से।
निस्वार्थ प्रणय भावों की भेंट चढ़ाऊँ मैं॥

निज भाग्य वश कहीं, भी जीवन दिवस बिताऊँ।
पर नाथ तुम्हें दुख सुख, में भूल न जाऊँ मैं॥

हूँ पथिक तुम्हारा ही तुम बिन न कुछ अब चाहूँ।
निष्काम हो के तुममें आनन्द मनाऊँ मैं॥

सन्त वचन—प्रेमी प्रेमपात्र में, प्रेमपात्र प्रेमी में निरन्तर निवास करते हैं परन्तु सीमित प्रेम से असीम प्रेमास्पद नहीं मिलते।

प्रियतम मन के चोर तुम्हें मैं कैसे पाऊँ॥
घर बैठूँ या बन को जाऊँ, वस्त्र रंगूँ या खाक रमाऊँ।
होकर भाव-विभोर, तुम्हें मैं कैसे पाऊँ॥
कौन जतन से बन्धन खोलूँ किस विधि मन के मल को धो लूँ।
चलता नहिं कछु जोर तुम्हें मैं कैसे पाऊँ॥
किस साधन से नाथ रिझाऊँ, मूरख हूँ क्या रोऊँ गाऊँ।
बिना प्रेम की डोर तुम्हें मैं कैसे पाऊँ॥
हमसे तो कुछ बनि नहिं आवे, तुम चाहो तो सब बनि जावे।
लखो पथिक की ओर तुम्हें मैं कैसे पाऊँ॥

सन्त वचन—परम प्रभु प्रलोभन और दण्ड के द्वारा प्रेम को नापते हैं यदि प्रेमी विचलित न हुआ तो आश्चर्य से अपना योग देते हैं और संसार के साथ खेलने का संयोग दे देते हैं।

अधम उधारन मेरे श्याम सुध लेते रहना।
भूल न जाना लीलाधाम सुध लेते रहना॥
नाथ तुम्हारी यदि दाया है भुला न सकती फिर माया है।
हो जाऊँ निर्भय सब ठाम, सुध लेते रहना॥

परम प्रेममय अन्तर्यामी अकथ अनोखे सब के स्वामी।
मेरे जीवन धन अभिराम, सुध लेते रहना॥

जब अपना मन निश्छल होगा जहाँ प्रेम का कुछ बल होगा।
मिलते तभी हो तुम बिन दाम, सुध लेते रहना॥

पथिक आ चुका शरण तुम्हारी यही विनय है भवभयहारी।
देना भक्ति इसे निष्काम, सुध लेते रहना॥

सन्त वचन—परम प्रभु दीनता और अपनत्व के भाव से रीझते हैं और अपना प्रेम प्रदान करते हैं।

हे मन मोहन! हे जीवन धन!!

प्रेमनिधे अनुपम महान तुम, हो समर्थ सद्गुण निधान तुम।
तुममें हो सर्वस्व समर्पन॥

तुम जैसे हो कहे न जाते, किसी तरह से गहे न जाते।
किन्तु तुम्हीं में तन्मय जग तन॥

कहीं तुम्हारा ध्यान न भूलूँ, तुम अनन्त यह ज्ञान न भूलूँ।
तुम सब विधि सुन्दर आनन्दघन॥

तुम अपने प्रियतम अपने में, हो जाग्रत सुषुप्ति सपने में।
अनुभव करते प्रेम पथिक जन॥

सन्त वचन—सुख से विरक्त बनो, व्यर्थ चेष्टाओं का निरोध करो व्याकुलता की शरण लो, गुरू आज्ञा को पूर्ण करो।

अनोखी देखी प्रभु की शान ॥

प्रभु का है दरबार निराला, सब को आश्रय देने वाला।
राजा रङ्क समान ॥

जितने धर्मी, दानी, मानी, जो कि धुरन्धर ध्यानी ज्ञानी।
गाते महिमा गान ॥

जो धनपति जनपति कहलाते, यहीं शान्ति सब आकर पाते।
जब होते हैरान ॥

जिनकी सुनकर अमृत वानी, पत्थर दिल बन जाते पानी।
खो करके अभिमान ॥

जहाँ न रहती ममता माया, परम तृप्ति कर जिनकी छाया।
खुला दया का दान ॥

जगा रहे सोने वालों को, हँसा रहे रोने वालों को।
देकर पावन ज्ञान ॥

बड़े बड़े पापी व्यभिचारी, हो जाते त्यागी व्रतधारी।
करके सुमिरन ध्यान ॥

जो कोई भी शरणागत हैं, श्री चरणों में जो अवनत हैं।
पथिक वही मति मान ॥

सन्त वचन—संसार से विमुख होकर प्रियतम प्रभु की ओर जाना ही सच्चा भजन है।

तुम सर्वोपरि महान हे प्रियतम परमात्मन् ॥
अखिलेश्वर शक्तिमान् हे प्रियतम परमात्मन् ॥

तुम अनुपम अकथनीय, अगम अगोचर अव्यय।
तुम अनादि विश्वम्भर, हे परमेश्वर जय जय।
तुम जीवन ज्योति प्रान, हे प्रियतम परमात्मन्॥

तुम निरीह निर्गुण हो, अमल अचल निर्विकार।
तुम अरूप सर्वरूपमय, अभेद प्रकृति पार।
तुम सुन्दर गुण निधान, हे प्रियतम परमात्मन्॥

तुम सद्‌चिद्‌ आनँद्घन, अगणित हैं रूप नाम।
विविध भाँति तुम्ही, एक सबके नयनाभिराम।
जानत विरले सुजान, हे प्रियतम परमात्मन्॥

तुम कितने अद्‌भुत हो, समुझत ही बने नाथ।
सभी ओर तुम समर्थ, हो अभिन्न सदा साथ।
पथिक करत विनय गान, हे प्रियतम परमात्मन्॥

सन्त वचन—अपने में ही अपने प्रियतम को देखना, दूरी मिटाना है। जिनके विना तुम रह न सको उसे ही अपना प्रेमपात्र समझो।

खोजनहारा खोज लगाये तुम मुझमें हो मैं तुममें हूँ।
जो जाने सोई यह गाये तुम मुझमें हो मैं तुममें हूँ॥

कहाँ-कहाँ पर भूले भटके, बन्द रहे पट अन्तर घट के।
जबतक हम यह समझ न पाये तुम मुझमें हो मैं तुममें हूँ॥

खोज फिरे मन्दिर मूरति में, मुग्ध हुये अपनी ही कृति में।
दृष्टि खुली तो यही दिखाये, तुम मुझमें हो मैं तुममें हूँ॥

कोई तुमको निर्गुण माने, कोई तुमको सगुण बखाने।
अकथ विश्वमय रूप बनाये तुम मुझमें हो मैं तुम में हूँ॥

तुम ऐसे हो या वैसे हो, जो कुछ भी हो या जैसे हो।
पथिक यही आनन्द मनाये तुम मुझमें हो मैं तुम में हूँ॥

सन्त वचन—सभी वस्तुयें अनुकूल और पवित्र, सब घटनायें लाभकारी, सब दिन शुभ, सभी मनुष्य देव रूप जिसे दिखाई दें वही कवि तत्वदर्शी सन्त है।

सब के लिये खुला जो, यह द्वार ही ऐसा है॥
कोई भी चला आये, दरबार ही ऐसा है॥

दुनिया में होशवालों का है यही ठिकाना।
पर सब नहीं समझेंगे, संसार ही ऐसा है॥

दोनों यहाँ कठिन हैं, रुकना या चले जाना।
कुछ मार ही ऐसी है, कुछ प्यार ही ऐसा है॥

भावानुसार अपने भगवान भी बन जाते।
जैसे के लिये तैसा व्यवहार ही ऐसा है॥

जिसके बिना जीवन में सद्-शान्ति नहींमिलती।
दिखता यहाँ जीवन का, आधार ही ऐसा है॥

छुट जाते जहाँ बन्धन, भव दुःख भी मिट जाते।
होता यहाँ पथिक का उपचार ही ऐसा है॥

सन्त वचन—संसार की कोई भी अवस्था ऐसी नहीं जिसमें कोई न कोई कमी शेष न रहे। निराश होने पर हो कोई भगवान की शरण लेता है।

हम आप के गुण गान न गायें तो क्या करें॥
दुखिया हैं आप को न बुलायें तो क्या करें॥

जब आप के सिवा यहाँ कोई न हमारा।
तब आप को अपनी न सुनायें तो क्या करें॥

हैरान हो रहे हैं अपने मन के मोह से।
ये वासनायें हमको भुलायें तो क्या करें॥
सेवा के लिये शक्ति, शान्ति स्वयं के लिये।

हे नाथ चाहते हैं न पायें तो क्या करें॥
है आप की कृपा समर्थ पतित पावनी।

हम दीन पथिक शरण न आयें तो क्या करें॥

सन्त वचन—संसार की सहायता से दुःख नहीं मिटता। दुःख तो सुख का अन्त है। अज्ञानी को ही दुःख होता है। संसार के समस्त कष्ट दुःख मनुष्य से सत्य को ढुँढ़वाना चाहते हैं।

भगवन मैंने यह देख लिया तुम बिन है हमारा कोई नहीं॥
तुम वहाँ सहायक होते जहाँ संगी सुत दारा कोई नहीं॥

मैं दीन हूँ दिखतीशक्ति नहीं, सद्भाव नहीं कुछ भक्ति नहीं॥
इस भवसागर में भटक रहा, दिखता है किनारा कोई नहीं॥

बहती वासना बयारि महाँ, मुझको अटकाती कहाँ कहाँ।
चक्कर खाती जीवन तरणी, है खेवनहारा कोई नहीं॥

मुझ पर हे नाथ दया करिये, मेरी सारी बाधा हरिये।
प्रभु एक तुम्हारी शरण बिना, अब और है चारा कोई नहीं॥

तुम ही हो सुधि लेने वाले, बल बुद्धि तुम्हीं देने वाले
हो तुम्ही पथिक के परमाश्रय तुम बिनहै सहारा कोई नहीं॥

सन्त वचन—वस्तु तथा व्यक्ति की दासता ने-ही सत्य से, आनन्द से विमुख कर रक्खा है। मान तथा भोग सुख की तृष्णा ने ही वस्तु व्यक्ति के दासत्व में बाँध रक्खा है।

हे केशव हे माधव मनमोहन गिरधारी ॥
हे प्रियतम परमेश्वर हे अच्युत अविकारी ॥

हो समर्थ दानी तुम पूर्ण परम ज्ञानी तुम।
हो अगम असानी तुम चक्रसुदर्शन धारी ॥

अघमोद्धारक हो तुम दोष निवारक हो तुम।
विघ्न विदारक हो तुम दीनन के दुखहारी॥

निर्बल के बल हो तुम सुन्दर निर्मल हो तुम।
रहते अविचल हो तुम, सबके अतिहितकारी ॥

दिव्य शक्ति धर हो तुम अनुपम अद्दर हो तुम।
पूर्ण परात्पर हो तुम भक्तन हित अवतारी ॥

हृदय निवासी हो तुम परम प्रकाशी हो तुम।
अज अविनाशी हो तुम परम सुहृद उपकारी ॥

चिदानन्दघन हो तुम शान्ति निकेतन हो तुम।
पथिक प्राण धन हो तुम निज जन के अघहारी ॥

हे केशव हे माधव मनमोहन गिरधारी ॥

सन्त वचन—चित्त जहाँ जाय वहाँ से लौटाकर स्थिर करो और सोचो कि सब नाशमान है, दुख रूप है, त्याज्य है।

हे प्रियतम भगवान प्रेममय मेरे परमाधार प्रभो ॥
हे समर्थ सबके संरक्षक हे अच्युत अविकार प्रभो ॥

हे समदर्शी पूर्ण परात्पर हे सबके आश्रय दाता।
बिना हेतु के प्राणि मात्र पर करते हो उपकार प्रभो ॥

कितना ही कोई पापी हो फिर भी नहीं किसी का त्याग।
शरणागत का जैसे भी हो करते तुम उद्धार प्रभो ॥

हममे सारी शक्ति तुम्हीं से तुम में ही हम रहते नाथ।
किन्तु तुम्हारा ध्यान न रखकर करते स्वेच्छाचार प्रभो ॥

हममें कितने ही दुर्गुण हैं अगणित होते आये पाप।
फिर भी हम पाते रहते हैं नित्य तुम्हारा प्यार प्रभो।

हम कितना ही भूलें भटकें पाते तुममें ही विश्राम।
सन्मुख आ जाते हम जब भी कर लेते स्वीकार प्रभो ॥

हे दानी तुम सब विधि पूरण हे करुणा निधि हे निष्काम।
हम लेते तुम देते रहते अनुपम परम उदार प्रभो ॥

जितने बन्धन दुःख यहाँ हैं वह निज मन से ही उत्पन्न।
तुम तो परमानन्द रूप हरि हरते हो दुःख भार प्रभो ॥

हम विचित्र अपराधी हैं पर यही सोचकर हैं निश्चिन्त।
कितने ही हम पतित पथिक हों तुम कर दोगे पार प्रभो ॥

सन्त वचन—दोष अपने देखो और उन्हें दूर करो। गुण जहाँ कहीं देखो परमेश्वर के समझो। ज्ञान स्वरूप गुरू की शरण लो।

हे सद्गुरु शरणागत हम हैं स्वीकार करो ॥
अधम उधारक हे प्रभु मेरा उद्धार करो ॥

हम माया मान बद्ध अजितेन्द्रिय कृपण दीन,
राग द्वेष परिपूरित मेरा मन अति मलीन।
मुझको शुभ मति गति दो सद्यः उपचार करो ॥

दूर करो दुखहारी दुर्गम देहाभिमान,
देख सकें सत्स्वरूप ऐसा दो विशद ज्ञान।
हे समर्थ मेरे प्रति भी यह उपकार करो ॥

बन जायें हम पवित्र प्रेमी निष्काम हृदय,
और अचञ्चल चित हो मिल जाये आत्म विजय।
मेरे दुख दोषों का स्वामिन संहार करो ॥

हम तुममय हो जायें तब समझें सत्यसंग,
मिट जायें अन्तर से जो कुछ भी असत् संग।
पथिक तुम्हारे पथ में परमेश्वर पार करो ॥

सन्त वचन—चाह के मिटाने का नाम सन्तोष है। जितना कुछ है उतने ही में प्रसन्न रहना सन्तोष है। जो कुछ नहीं चाहता उसे कोई दुख नहीं दे सकता। त्याग ज्ञान तथा प्रेम की कमी में सन्तोष न करना चाहिये।

मुझको इतना ही क्या कम है ॥

जो इतना अयोग्य होकर भी मैं आता हूँ द्वार तुम्हारे,
जो न कहीं भी पा सकता हूँ वह पाता हूँ द्वार तुम्हारे।
यद्यपि सब विधि मैं मलीन हूँ यहाँ न कुछ साधन संयम है ॥

नाथ तुम्हारा आश्रय लेकर भव सागर में वह न सकेंगे,
निश्चय ही उस कृपा दृष्टि से पाप हमारे रह न सकेंगे।
क्योंकि तुम्हीं हो पतितोद्धारक प्रेम तुम्हारा सुन्दर तम है॥

देव मिल गये हो जीवन में यह कुछ कम सौभाग्य नहीं है।
चाहे जब हो जैसे भी हो मेरा तो कल्याण यहीं है।
मेरे तुम्हीं एक अवलम्बन तुमसे मिलती शान्ति परम है॥

ऐसा कुछ हो मेरे प्रियतम तुम्हें कहीं भी भूल न जाऊं।
चाहे कहीं रहूँ पर उर से तुमको ध्याऊं तुमको पाऊं।
यह अतिशुभ जो चरणशरणमें आज पथिकका क्षुद्रअहं है॥

सन्त वचन—संसार से आशा और सम्बन्ध ही परमात्मा के योग सिद्धि में बाधक हैं। आशा और सम्बन्ध को छोड़ दो।

तुम सम कौन उदार परम प्रभु॥
तुम्हें भूलकर हम इस जग में, बनते अपराधी पग पग में।
तुम करते उद्धार परम प्रभु॥
जो कुछ पाते व्यर्थ गंवाते, फिर भी तुम देते ही जाते।
ऐसा अनुपम प्यार परम प्रभु॥
तुमसे ही तुममें सबकी गति, तुमसे ही सद्‌गुण शुभ सन्मति।
तुममें जग विस्तार परम प्रभु॥
कितने अधः पतित होकर हम, जब आते सन्मुख रोकर हम।
तुम करते स्वीकार परम प्रभु॥
तुमने ही मुझको अपनाया, तुमको ही इक अपना पाया।
तुमही परमाधार परम प्रभु॥

तुम बिन कुछ भी लगे न प्यारा, तुमसे मागूँ प्रेम तुम्हारा।
सुन लो पथिक पुकार परम प्रभु ॥

सन्त वचन—नित्य आत्मा में जो अर्पित है वही आस्तिक है। आस्तिक के जीवन में भय चिन्ता का कहीं स्थान नहीं मिलता।

सकल भुवन के गान तुम्हीं हो॥
सर्वाधार महान् तुम्हीं हो॥

तुम नास्तिक की प्रकृति शक्तिमें, आस्तिक की श्रद्धेय अस्ति में।
ज्ञानो की तत्वानुरक्ति में आदि मध्य अवसान तुम्हीं हो॥

सर्व रूप में सर्व नाम में, सर्वकाल में सर्व धाम में।
तुमहीं गति में तुम विराम में, शक्तिमान भगवान् तुम्हीं हो॥

तुममें दनुज देवगण तुममें, तुममें पर्वत हैं तृण तुम में।
तुममें कल्प और क्षण तुममें, सबके परम स्थान तुम्हीं हो॥

मानव में सत धर्म तुम्हीं से, कर्म विकर्म अकर्म तुम्हीं से।
मिले गुह्यतम मर्म तुम्हीं से, सबको देते ज्ञान तुम्हीं हो॥

तुम अमान के मानी के भी, ज्ञानी के अज्ञानी के भी।
तुम दरिद्र के दानी के भी, आश्रय एक समान तुम्हीं हो॥

तुममें जीवन मरण तुम्हीं में, सबका है निस्तरण तुम्हीं में।
पथिक पा रहा शरण तुम्हीं में, करते शान्ति प्रदान तुम्हीं हो॥

सन्त वचन—तत्व का बोध होना ही सम्यक् ज्ञान है। जब तक राग द्वेष मोह लोभादि दोष हैं तब तक सम्यक् ज्ञान नहीं।

असफल को प्रभु सफल बनाने वाले तुमको अब मैंने पहिचाना॥
भूले हुये को राह दिखाने वाले भूल भूल कर तुमको जाना॥

देख न पाऊँ तुम्हें भले ही पर मैं तुमसे दूर नहीं हूँ;
तुम सागर मैं हूँ तरंग वत तुममें ही हूँ जहाँ कहीं हूं।
तुमहीं मेरा चित्तचुराने वाले अब मायिक सुख में न भुलाना॥

कैसे मैं उन्मुक्त हो सकूँ रोक रहे हैं स्वरचित बन्धन,
नाथ बता दो ऐसा साधन जीत सकूँ अपना चंचल मन।
तुमहीं मेरे दुःख मिटाने वाले और कहीं मेरा न ठिकाना॥

सभी रूप में तुमको देखूं जो कुछ करूं वही हो पूजा,
जो कुछ बोलूं वही स्तुति हो मन को भाये और न दूजा।
तुम प्रियतम हो कहीं न भुलाने वाले हमको तो तुमको ही पाना॥

यही चाह अब शेष रही है सब चाहों का त्याग करूं मैं,
हे चिद्घन आनन्द रूप तुमसे ही दृढ़ अनुराग करूं मैं।
पथिक पतित को तुमही उठाने वाले जैसे भी हो पार लगाना॥

सन्त वचन—जब तक दूसरे को अपना मानते हो, स्वरूप को भूले हुए हो, तब तक यथार्थ विवेक नहीं है।

पतितों का संसार में उद्धार करने वाले प्रभु तुम॥
जग प्रपंच विस्तार में निस्तार करने वाले प्रभु तुम॥

जब देता कोई न सहारा, छुट जाता जन धन बल सारा।
उस असहाय पुकार में उपकार करने वाले प्रभु तुम॥

तुमसे मिलती सबको शुभ मति तुमसे ही प्राणों की सदगति।
पापों के प्रतिकार में उपचार करने वाले प्रभु तुम॥

महापुरुष जो तुमको भजते उनको तो तुम कहीं न तजते।
उनके भावोदगार में शुचि प्यार करने वाले प्रभु तुम॥

तुमही जानो सबके चितकी तुम करते हो सब कुछ हितकी।
पथिक भवार्णवधार में अब पार करने वाले प्रभु तुम॥

सन्त वचन—यदि परमात्मा को जानना चाहते हो तो विरक्त ज्ञानी की आज्ञा पर चलो। संसार में लाखों मनुष्य पर को देखते हुए, पर कथा कहते और सुनते हुए समय नष्ट करके विनाश को प्राप्त हो रहे हैं।

प्रभु मेरी भी सुध लो॥

सुनता हूँ कि तुम मिलते हृदय की पुकार में,
पूजा तुम्हारी होती है दीनों के द्वार में।
तुम रीझते हो भक्त के भावोदगार में,
पा सकता है कोई तुम्हें निष्काम प्यार में।
मैं क्या करूं मेरे लिये कुछ साधना-बलदो॥प्रभु मेरी भी सुधलो॥

कोई तुम्हें कहते हैं कि निर्गुण हो निराकार,
कोई तुम्हें हैं मानते ऐश्वर्यमय साकार।
कोई तुम्हारा ध्यान करें लेके कुछ आधार,
करते विभूतियों में कोई तुमको नमस्कार।
कुछ खोज लगाते हैं कि तुम कैसे हो क्या हो॥प्रभुमेरी भी सुधलो॥

कुछ मानते हैं मन्दिरों में तुमको ही भगवान्,
कुछ मस्जिदों में खोजते हैं तुमको शक्तिमान।

कुछ कहते यह सब झूठ है बस सत्य आत्म ज्ञान,
कोई तुम्हें भजते हैं अखिल विश्व रूप जान।
सब कोई विविध भाँति चाहते हैं तुम्हींको।।प्रभु मेरीभी सुधलो।

मुझको भी दो वह शक्ति जिससे हो सकूं अभय,
निर्दोष होके पा सकूं आनन्द निरति शय।
मैं अपने रूप में तुम्हें ही देखूं सर्वमय,
जैसे हो किसी रूप से मेरी सुनो विनय।
इस पथिक का पतन नहीं अब चाहते हो जो।।प्रभु मेरी भी सुधलो।।

सन्त वचन—वासना का समूह ही मन है। वासनाओं का अन्त करने से मन मिटता है। वासनाओं का अन्त यथार्थ ज्ञान से होता है।

प्रभु मेरा उद्धार करो

कितने अभिशापों को लेकर, आया हूँ पापों को लेकर।
बोझिल हूँ गिर गिर पड़ता हूँ, तुम्हीं उचित उपचार करो॥

तुमसे ही सब कुछ पाता हूँ, खोता हूँ लेता जाता हूँ।
अब जैसे भी मेरा हित हो, इसका तुम्हीं विचार करो॥

मैं अभिमान रहित हो जाऊँ, सत्यज्ञान जिस विधि से पाऊं॥
उस विधि से ले चलो दयामय, अब तो शीघ्र सुधार करो॥

जग से पूर्ण विरक्त बनूँ मैं, नाथ तुम्हारा भक्त बनूँ मैं।
शरणागत मैं दीन पथिक हूँ, सेवा में स्वीकार करो॥

सन्त वचन—यथार्थ ज्ञान हृदय शुद्ध होने पर होता है। हृदय तो त्याग और प्रेम से शुद्ध होता है। अपना कुछ भी न मानना त्याग है। प्रियतम को किञ्चित भिन्न न मानना प्रेम है।

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाये ॥
यह मन न जानेक्या क्या दिखाये कुछ बन न पायामेरे बनाये ॥

संसारमें ही आसक्त रहकर दिनरात अपनेमतलबकी कहकर ।
सुखके लियेलाखों दुःख सहकर येदिन अभी तक योंहीबिताये ॥

ऐसा जगादो फिर सो न जाऊँ, अपनेको निष्काम प्रेमी बनाऊँ ।
मैं आपको चाहूँ और पाऊँ संसार का कुछ भय रह न जाये ॥

वह योग्यता दो सत्कर्मकर लूँ, अपनेहृदय में सद्भाव भर लूँ ।
नरतन है साधन भवसिंधु तरलूँ,ऐसा समयफिर आये न आये ॥

हे प्रभु हमें निरभिमानी बना दो, दारिद्र हरलो दानी बना दो ।
आनन्दमय विज्ञानी बनादो, मैं हूँ पथिक यह आशा लगाये ॥

सन्त वचन—अपने को सब ओर से विमुख कर लेना निवृत्ति है स्वीकृति ही प्रवृत्ति है। निवृत्ति आनन्द घन से अभिन्न करती है। प्रवृत्ति संसार की ओर ले जाती है।

राखहु अब प्रभु लाज हमारी ॥
हे परमेश्वर हृदय विहारी ॥

मैं दरिद्र हूँ अति उदार तुम, हरलो हे हरि पाप भार तुम ।
इस भव दुख से करो पार तुम, अपकारी मैं तुम उपकारी ॥

मैं अशुद्ध हूँ परम शुद्ध तुम, मैं विमूढ़ हूँ महा बुद्ध तुम ।
मैं सकाम इसके विरुद्ध तुम, मुझे सुगति हो दुर्गति हारी ॥

गुणावद्ध मैं गुणातीत तुम, महा मलिन मैं अति पुनीत तुम ।
फिर भी हो आद्यन्त मीत तुम, मैं विकार युत तुम अविकारी ॥

मैं निर्बल हूँ शक्तिमान तुम, महा क्षुद्र मैं हो महान तुम ।
मैं दुख पीड़ित दयावान तुम, पथिक पतित हूँ शरण तुम्हारी ॥

सन्त वचन—प्रेम-पूर्वक जिसका जीवन दूसरों की पूर्ति के लिये है वही मानव जीवन है। दोषों का ज्ञान और उन्हें मिटाने का प्रयत्न मानवी प्रकृति में होता है। मानव ही त्याग, ज्ञान और प्रेम को पूर्ण कर सकता है।

वह जीवन क्या जिस जीवनमें जीवनको मुक्त बना न सके॥
वह अज्ञानी अभिमानी है जो मन का मोह मिटा न सके॥

कोई बल मद में फूल रहे, ऊंचे पद पाकर भूल रहे।
लेकिन वह शक्ति निरर्थक है जो काम किसी के आ न सके॥

जो भ्रम वश भोगा सक्त बने जो अपने मन के भक्त बने।
वह सब से यदि न विरक्त हुए सत पथ में पैर बढ़ा न सके॥

जिस संगति से सदज्ञान न हो कर्तव्य धर्म का ध्यान न हो।
हम उसे कुसंगति क्यों न कहें जो हमें प्रकाश दिखा न सके॥

मिटती है जिससे भ्रान्ति नहीं मिलती है जिससे शान्ति नहीं।
ऐ पथिक उसी का त्याग करो जो प्रियतम तक पहुँचा न सके॥

सन्त वचन—वह वीर है जो दूसरों पर विजय प्राप्त करता है किन्तु जो अपने मन बुद्धि को स्ववश में रखता है वह तो महात्मा है।

साथी आना है तो आ ले॥

देख, जगत का ले न सहारा, खुद भूला है जगत विचारा।
वह क्या देगा, तू क्या लेगा, उससे नजर हटा ले॥

कोई अपने सुख में फूला, कोई अपने दुख में भूला।
सुख भी झूठा, दुख भी झूठा, अपना मन समझा ले॥

लम्बी मंजिल हिम्मत भर ले, अपने को अपने बश करले।
राह कठिन है, थोड़ा दिन है, जल्दी कदम बढ़ा ले॥

जीवन के स्वर ताल मिला ले, इसमें प्रेम गीत कुछ गा ले।
पथिक प्रगति से, निश्चल मति से निज प्रियतम को पाले॥

सन्त वचन—अपने कार्यों की उसी तरह परीक्षा करो जैसे वे दूसरे के हों। सभी के साथ शान्ति युक्त व्यवहार, सभी जीवों के प्रति सहानुभूति, प्रत्येक परिस्थिति में अबोध शान्ति—यह लक्षण वीर महापुरुष के हैं।

तुम्हारी शान यही वीर बनो बढ़े चलो॥
शूरों का गान यही वीर बनो बढ़े चलो॥

रुकने का नाम न लो असमय विश्राम न लो,
सच्चे निष्काम बनों पुण्यों का दाम न लो।
कहते भगवान यही वीर बनो बढ़े चलो॥

दुख ले लो दो न कभी सुख दो पर लो न कभी,
गिरो उठो दम ले लो पर निराश हो न कभी।
गति की पहिचान यही वीर बनो बढ़े चलो॥

जो जाये जाने दो, जो आये आने दो,
मन को अपने स्वर में रोने दो गाने दो।
गुरु प्रदत्त ज्ञान यही वीर बनो बढ़े चलो॥

सच्चे त्यागी होकर तुम बड़भागी होकर,
जग से कुछ चाहो मत सत अनुरागी होकर।
पथिक स्वाभिमान यही वीर बनो बढ़े चलो॥

शूरों का गान यही वीर बनो बढ़े चलो॥
तुम्हारी शान यही वीर बनो बढ़े चलो॥

सन्त वचन—प्राप्त शक्ति का सदुपयोग करो और शक्ति के दाता शक्तिमान को न भूलो। जो सब कुछ परमेश्वर का नहीं जानते वे ही अभिमानी होते हैं।

लिये चलो सत पथ में शक्तिमान लिये चलो॥
अधः पतित जीवन को हे महान लिये चलो॥

हर लो हे ज्योतिर्मय मेरा अज्ञान तिमिर,
जिससे शुभ गति मति हो चन्चल चित्त हो सुस्थिर।
देकर हे करुणा मय दिव्य ज्ञान लिये चलो॥

मिट जायें अन्तर के सब दुर्दमनीय दोष,
प्रभु प्रदत्त सद्गुण से हों मम निष्कलुष कोष।
मिल जाये हमको भी प्रेम दान लिये चलो॥

वह बल दो जिससे मैं तृष्णा को सकूँ त्याग,
जग के नश्वर सुख में रह जाये कुछ न राग।
उसी तरह जैसा कुछ हो विधान लिये चलो॥

हे मेरे जीवनेश तुमसे ही है पुकार,
अब तो जिस भाँति बने भवदुख से करो पार।
'पथिक' पूर्व पापों पर दो न ध्यान लिये चलो॥

सन्त वचन—मानव वही है जो कुछ जानता भी है और मानता भी है। सभी दुर्बलताओं की निवृत्ति मानव जीवन की माँग है।

॥ मानव हो जाओ सावधान ॥

जो कुछ दिखता है दृश्य जगत इसमें ही तुम जाना न भूल।
जिस सुख के पीछे दौड़े रहे वह निश्चय ही है दुःख मूल।
दिखता उसको ही जिसे ज्ञान॥

संघर्ष कलह का कारण है यह ऊँच नीच की भेद दृष्टि।
तुमने ईश्वर की दुनियाँ में रच ली है अपनी क्षुद्र सृष्टि।
जिसका कि तुम्हें मिथ्याभिमान॥

कुछ पद पाकर मद आ जाता होने लगती निज अर्थपूर्ति।
परहित तो वह कर पाते हैं जो होते सच्चे त्याग मूर्ति।
अब देखो तुम किनके समान॥

प्रभुता पाकर भोगी न बने ऐसे भी जग में पुरुष वीर।
देखो उनको उनसे सीखो वे कितने हैं गम्भीर धीर।
यदि तुम भी हो कुछ बुद्धिमान॥

है शक्ति जहाँ तक भी तुममें तुम पुण्य करो या महापाप।
तुम देव बनों या दानव ही लो सुख प्रद बर या दुखद शाप।
बन लो कठोर या दयावान॥

दुख बोकर दुख ही काटोगे बच सकते केवल सुख बोकर।
जो कुछ दोगे वह आयेगा कितने ही गुना अधिक होकर।
है अटल प्रकृति का यह विधान॥

तुम अतिशय सरल विनम्र बनों समझो न किसीको तुच्छ नीच।
कटुता कर्कशता निर्दयता लाओ न कहीं व्यवहार बीच।
परहित का रक्खो सदा ध्यान॥

जो संग न सदा रह सकेगा अब उसका तुम दो मोह छोड़।
जो तुमसे भिन्न न हो सकता ऐ पथिक उसी से नेह जोड़।
इस त्याग प्रेम का फल महान॥

सन्त वचन—दोषों के त्याग से ही शान्ति और सद्‌गुणों के प्रति प्रीति से आनन्द प्राप्त होता है। विवेकी मानव वहीं जो शक्ति का सदुपयोग करता है।

फिर मत कहना कुछ कर न सके ॥

जब नरतन तुम्हें निरोग मिला, सत्संगति का भी योग मिला।
फिर भी प्रभुकृपानुभव करके, यदि भवसागर तुम तर न सके ॥

तुम सत्य तत्व ज्ञानी होकर, तुम सद्धर्मी दानी होकर।
यदि सरल निरभिमानी होकर, कामनाविमुक्त विचर न सके ॥

जग में जो कुछ भी पाओगे, सब यहीं छोड़के जाओगे।
पछताओगे तुम यदि अपना, पुण्यों से जीवन भर न सके ॥

जो सुख सम्पति में फूल रहे, जो वैभव मद में भूल रहे।
उनसे फिर पाप डरेंगे क्यों, जो परमेश्वर से डर न सके ॥

जब अन्त समय आजायेगा, तब क्या तुमसे बन पायेगा।
यदि समय शक्ति के रहते ही, आचार विचार सुधर न सके ॥

होता तब तक न सफल जीवन, है भार रूप सब तन मन धन।
यदि पथिक प्रेम पथमें चलकर, अपना या पर दुःख हर न सके ॥

सन्त वचन—असत से विरक्त रहना सत में मन बुद्धि को अनुरक्त रखना ही सत्संग है। तत्व रूप से सत् सर्वत्र विद्यमान है परन्तु असत की इच्छाओं ने उसे ढक लिया है।

मिलता है बड़े भाग्य से सत्संग समागम ॥

सत्संग के विना कभी होता नहीं है ज्ञान।
यदि ज्ञान न हो सत्य का रहता नहीं है ध्यान।

बिन ध्यान के मिलते नहीं हैं प्रेम मय भगवान।
भगवान बिना जीव का होता नहीं कल्याण।
सत्संग के सुयोग से मिटता है मोहतम ॥ मिलता है० ॥

सत्संग के बिना किसी की गति नहीं होती।
जिससे कि पुण्य प्राप्त हों सन्मति नहीं होती।
पापों से जो बचाती वह सुकृति नहीं होती।
उद्वेग को दबाती जो वह धृति नहीं होती।
इसके बिना होता नहीं है शक्ति का संयम ॥ मिलता है० ॥

सत्संग से ही ध्रुव ने पाया था अटल धाम।
प्रहलाद ने इससे ही दिखाया था कहाँ राम।
सत्संग से ही पाण्डवों के दुख मिटे तमाम।
सत्संग से बन जाते हैं बिगड़े हुये सब काम।
सत्संग से सुधर गये लाखों महाँ अधम ॥ मिलता है० ॥

इसके बिना कितने ही शक्ति शान्ति खो रहे।
इस मोह मयी नींद में लाखों हैं सो रहे।
जो लघु थे वो सत्संग से महान हो रहे।
जो थे मलिन वह इससे ही निज मलको धो रहे।
मिलती है पथिक को यहीं पै शांति मनोरम ॥ मिलता है० ॥

सन्त वचन—ज्यों ज्यों असत से छुटकारा हो जाता है त्यों त्यों सब से अभिन्नता होती जाती है।

शुभ चाहे तो प्रभु गुनगाय ले।
निज मन का तू मोह मिटाय ले ॥
नाम प्रभु के अनेक पर हैं वे तो एक।
ऐसा उर में विवेक बसाय ले ॥

करो दोषों का त्याग भरो सत्यानुराग।
यहाँ तृष्णा की आग बुझाय ले॥

करो पर उपकार सभी जीवों से प्यार।
अपना हृदय उदार बनाय ले॥

करो उसका ही संग जिससे निर्मल हो अंग।
प्रेम भक्ति का रंग चढ़ाय ले॥

तुम्हें ऐसा हो ज्ञान कहीं भूले न ध्यान।
अपना देहाभिमान हटाय ले॥

जग का कुछ धन धाम सदा आता न काम।
पथिक होके उपराम सुख पाय ले॥

सन्त वचन—त्याग न करोगे तो राग की वस्तु छिन ही जायगी। तप न करोगे तो रोग भोग को छीन ही लेगा। दान न दोगे तो कोई अपने आप ले ही लेगा।

दुनियाँ में कुछ भी पा करके, तुम कब तक रस लोगे॥
अपना सत लक्ष भुला करके, तुम कब तक रस लोगे॥

जीवन की घड़ियाँ बीत रहीं, इन्द्रियाँ तुम्हें हैं जीत रहीं।
विषयों में चित्त फँसा करके, तुम कब तक रस लोगे॥

जितना भी भोगों का सुख है, उसके पीछे निश्चित दुख है।
उसमें ही समय बिता करके, तुम कब तक रस लोगे॥

क्षण क्षण जिसमें है परिवर्तन, पाता है शान्ति न जिसमें मन।
उससे ही प्रीति लगा करके, तुम कब तक रस लोगे॥

सब अन्त समय छुट जायगा, जो कुछ है काम न आयेगा।
जन बल धनवान कहा करके, तुम कब तक रस लोगे ॥

तपसी भोगी राजा रानी, मर गये करोड़ों अभिमानी।
अपना वैभव यश गा करके, तुम कब तक रस लोगे ॥

जोशक्तिमिली परहित कर लो, सच्चे प्रभु का आश्रय धर लो।
वैभव अधिकार वढ़ा करके, तुम कब तक रस लोगे ॥

यदि सत स्वरूप का ध्याननहीं, निष्काम प्रेम सद्ज्ञान नहीं।
ऐ पथिक कहीं आ जा करके, तुम कब तक रस लोगे ॥

सन्त वचन—जीव का धर्म है साधना, परमेश्वर का धर्म है कृपा। जिसकी प्रत्येक प्रवृति दूसरों के हित तथा प्रसन्नता का हेतु बने वही धर्मात्मा है। योग द्वारा सत्य दर्शन ही परम धर्म है।

सत्य-धर्म वीरों का पथ है इसमें दुर्बल आ न सकेंगे ॥
जब तक वे न जितेन्द्रिय होंगे तब तक सद्गति पा न सकेंगे ॥

दिखते लाखों नरआकृति में असुरप्रकृति के अति अभिमानी।
सुख लोलुप शोषक उत्पीड़क सत्यविमुख भौतिक विज्ञानी।
मानवता का घोर अनादर करते हैं निज सुख के ध्यानी।
सर्व भूत-हित में जो रत हों दुर्लभ ऐसे प्रेमी दानी।
वे सब के ढिग आते रहते सब उनके ढिग जा न सकेंगे ॥

जब अतिशय ही पुण्य प्रबल हों तब लगती सत्संगति प्यारी।
फिर भी यदि श्रद्धा न प्रबल हो बाधक बनते संशय भारी।
बड़े भाग्य से सन्त पुरुष का जब कोई हो आज्ञाकारी।
वह मानव सद्भाव पूर्वक बन पाता है पर उपकारी।
हित प्रद सेवा के बिन कोई अपने पाप मिटा न सकेंगे ॥

सद् विवेक से रहित पुरुष की सुत कलत्र के प्रति रति होती।
असत् संग देहाभिमान वश सत स्वरूप की विस्मृति होती।
जहाँ शक्ति का दुरुपयोग है जीवन की अति अवनति होती।
धर्म-ग्लानि कर्तव्य हीनता संचित पुण्यों की क्षति होती।
यह अज्ञान मोह सद्गुरु विन कोई और हटा न सकेंगे॥

जिस साधक में धैर्य नम्रता सहिष्णुता यह दैवी धन है।
उसका ही साधन के द्वारा उठता अधः पतित जीवन है।
तप संयम करना ही होता जब भोगों में चंचल मन है।
व्रत हठ भी बनता आवश्यक जब विषयों का प्रबल व्यसन है।
पथिक त्याग बिन शान्ति द्वार में रागी पैर बढ़ा न सकेंगे॥

सन्त वचन—सारे दोषों का जन्म जाने हुए को न मानने से होता है। जहाँ तक शुभ सुन्दर का ज्ञान है उसे स्वीकार न करना और जिस अशुभ असुन्दर का ज्ञान है उसे त्याग न करना भारी अपराध है।

उपदेश गुरुजनों के भुलाना नहीं अच्छा॥
अपने समय को व्यर्थ बिताना नहीं अच्छा॥
जब संग के प्रभाव से तुम बच नहीं सकते।
तब तो कुसंग में कहीं जाना नहीं अच्छा॥
भोगों की अधिकता से भी होता है मन मलिन।
तब उनमें अपनी शक्ति मिटाना नहीं अच्छा॥
कुछ योग्यता है तुममें तो दुष्कर्म से बचो।
अपने लिये किसी को सताना नहीं अच्छा॥
तुम बुद्धिमान हो तो तुम्हें याद रहे यह।
चोरी से छल से धन कमाना नहीं अच्छा॥

आराम चाहते हो तो लो राम की शरण।
झूठे सुखों में चित्त फँसाना नहीं अच्छा॥
माया के लिये और कहीं मान के लिये।
वैराग्य बिना ज्ञान दिखाना नहीं अच्छा॥

जब तक नहीं होता है पूर्ण त्याग और प्रेम।
तब तक किसी भी सिद्धि का आना नहीं अच्छा॥

संसार में आनन्द मय भगवान के सिवा।
ऐ पथिक कहीं मन का लगाना नहीं अच्छा॥

सन्त वचन—अपने वनाये दोषों को दूसरा कोई नहीं मिटा सकता दोषों के त्याग करने में हम सदा स्वतन्त्र हैं। सुखासक्ति ही त्याग नहीं करने देती।

हम जो संदेश सुनाते हैं इसको सब कोई क्या जाने॥
यह परम लाभ की बातें हैं इसको सब कोई क्या जाने॥

ऐसा जग में संयोग नहीं, हो जिसका कभी वियोग नहीं,
ऐसा कोई सुख भोग नहीं, जिसके पीछे दुख रोग नहीं।
भोगी बन सब पछिताते हैं, इसको सब कोई क्या जाने॥

है सफल उसी का नर जीवन जो रहता जग में त्यागी बन,
जिसने जीता है अपना मन दैवी सम्पति ही जिसका धन।
वे महा पुरुष कहलाते हैं, इसको सब कोई क्या जाने॥

धन पाकर जो दानी न वने, जो सरल निरभिमानी न बने,
जो ईश्वर का ध्यानी न बने, जो आत्म तत्व ज्ञानी न बने॥
वह जीवन व्यर्थ बिताते हैं इसको सब कोई क्या जाने॥

जो व्यक्ति वस्तु का दास नहीं, दोषों का जिसमें वास नहीं,
जिसमें दुर्व्यसन विलास नहीं, दुख आते उसके पास नहीं।
वह पथिक महद् पद पाते हैं, इसको सब कोई क्या जाने ॥

सन्त वचन—सत्संग का सुयोग मिलने पर भी यदि मनुष्य विचार न करेगा, अपने दोषों को न देखेगा तो सैकड़ों वर्ष बीत जाने पर दुखों से बन्धनों से मुक्ति न मिलेगी। सबसे बड़ा बुद्धिमान वही है जो अपने हित का साधन जानता है।

यदि तुम बुद्धिमान हो मानव जीवन व्यर्थ बिताते क्यों हो ॥
ऐसा अवसर पाकर अपने हित में देर लगाते क्यों हो ॥
चाहे जिसे देखिये जग की सभी वस्तु में परिवर्तन है।
कुछ भी तुम पा जाओ लेकिन वह सब सपने का साधन है।
अन्त दुखद सुख ही बन्धन है रचने वाला चंचल मन है।
यदि तुम मुक्ति चाहते हो तो देखो जो चिदानन्द घन है।
वह है जन्म मरण का साथी उसकी याद भुलाते क्यों हो ॥
पुण्यवान होना है तुमको सेवा पर उपकार करो तुम।
यदि अपना उत्थान चाहते प्राणिमात्र से प्यार करो तुम।
हृदय निष्कलुष रखना हो तो सबसे सद्‌व्यवहार करो तुम।
सत्य ज्ञान से दुखद अविद्या की सीमा को पार करो तुम।
जिन दोषों से दुर्गति होती भ्रमवश उसे छिपाते क्यों हो ॥
जिसके द्वारा मानवता में सरस दिव्यता लाई जाती।
शुभकर्मी बन सद्‌भावों की जिससे शक्ति बढ़ायी जाती।
जिसके बल से दृढ़ प्रतिज्ञ बन पाशव प्रकृति मिटाई जाती।
कितने ही जन्मों के पीछे जो जीवन में पाई जाती।
उस विद्या का दुरुपयोग कर अपने पाप बढ़ाते क्यों हो ॥

जो कुछ भी है पास तुम्हारे उससे तुम दानी बन जाओ।
विनम्रता के द्वारा ही तुम सरल निरभिमानी बन जाओ॥
प्राप्त ज्ञान का गर्व छोड़कर अधिकाधिक ज्ञानी बन जाओ।
निर्मोही होकर तुम सच्चे प्रेमी पुनि ध्यानी बन जाओ।
होकर अमृत पुत्र पथिक तुम मृत्यु मार्ग में जाते क्यों हो॥

सन्त वचन—जितने भी साधन हैं सब चित्त की शुद्धि के लिये हैं चित्तशुद्ध होने पर कुछ करना शेष नहीं रहता क्योंकि भगवान तो अपनी कृपा से ही मिल जाते हैं।

धन्य जीवन है जो कि निर्विकार होता है।
वह घड़ी धन्य है जब सद्विचार होता है॥

अपने ही दोषों से दुःख बार-बार होता है।
छाया अज्ञान का जब अन्धकार होता है॥

क्यों उन्हें भूले हो जिनसे तुम्हें सब कुछ मिलता।
समझो प्रभु का हृदय कितना उदार होता है॥

जगत की प्रीति में क्या रीझे हो उधर देखो।
बिना बदले में जहाँ सबका प्यार होता है॥

कितनी उनकी है दया जो कोई चाहे देखे।
उनके गुण ज्ञान से पापी भी पार होता है।

क्यों न तर जायें उबर जायें पतित लाखों जब।
नाम लेने से ही पापों का छार होता है॥

पथिक अब सावधान हो गहो उन्हीं की शरण।
जहाँ पतितों का सदा ही सुधार होता है॥

सन्त वचन—वे भगवान ही किसी को शान्ति के रूप में, किसी को दिव्य ज्ञान के रूप में किसी को परमानन्द के रूप में मिलते हैं।

अब सन्मति दो हे परमात्मन्॥
तुम्हीं प्रगति दो हे परमात्मन्॥

जिसके द्वारा दिखने लगता इस दुनिया का दुख सुख सपना।
जिससे तुम बिन और कहीं कुछ समझ न पड़ता कोई अपना।
वह उपरति दो हे परमात्मन्॥

जिसके बल से हानि लाभ मानापमान में रहें अचंचल।
जिसके बल से सतत जाग्रत रहकर तुमको ध्यायें अविकल।
ऐसी धृति दो हे परमात्मन्॥

जिससे दोषों के आने का मिलता कोई द्वार नहीं है।
जिससे प्रलोभनों के आगे होती दुखप्रद हार नहीं है।
वही सुकृति दो हे परमात्मन्॥

जिससे माया मान मोह में फंसकर कहीं न धोखा खायें।
जिसके कारण जग में बंधते, पुनः न ऐसे कर्म बनायें।
वह सुस्मृति दो हे परमात्मन्॥

व्याकुल विरही प्रेमी को जो सकुशल तुम तक पहुँचा देती।
जिसका अन्त तुम्हीं में है जो नहीं किसी का आश्रय लेती।
वह सदगति दो हे परमात्मन्॥

जिसके द्वारा जग प्रपंच का रहता कुछ भी ज्ञान नहीं है।
जिसके द्वारा पथिक तुम्हारा कहीं भूलता ध्यान नहीं है।
वही सुरति दो हे परमात्मन्॥

सन्त वचन—निष्कामता पूर्ण परितृप्ति प्रदान करती है और योगी बना देती है। कामना सत्यानन्द से विमुख रखती है।

तुम्हीं को हे आनन्द घन चाहता हूँ॥
जगत का मैं कोई न धन चाहता हूँ॥

न रह जाय मुझमें कहीं मोह माया।
प्रभो तुममें तल्लीन मन चाहता हूँ॥
वही अब करूं जो कि तुम चाहते हो।
मैं चाहों का अपनीं दमन चाहता हूँ॥

जहाँ चित हो चंचल जगत के सुखों में।
वहीं पर मैं इसका शमन चाहता हूँ॥
मिटे जिस तरह से यह भव दुख बन्धन।
मैं ऐसा ही साधन भजन चाहता हूँ॥

नहीं दिख रहा और कोई सहारा।
पथिक मैं तुम्हारी शरन चाहता हूँ॥

सन्त वचन—अपना अनुभव करने के लिये अपने से भिन्न मत देखो। निज स्वरूप का बोध अभ्यास से नहीं सर्व त्याग से होता है। अपने आप में सन्तुष्ट होने से माना हुआ मैं मिट जाता है।

निज सत्स्वरूप का जिसे पहिचान नहीं है॥
वह है मनुष्य किन्तु बुद्धिमान नहीं है॥
जो अपने दुर्विकारों के रहता है वशीभूत।
वह पाप के पथ में है पुण्यवान नहीं है॥

दुर्भाग्य से अपने को वो है मानता विद्वान।
जिसको कि निज अज्ञान का भी ज्ञान नहीं है॥
भोगों की अधिकता से वहीं होता मन मलीन।
दुखियों के लिये सुख का जहाँ दान नहीं है॥
वह धन्य है जिसको मिला सन्तोष परम धन।
धन की जिसे है चाह वो धनवान नहीं है॥
तब तक किसी को शान्ति कहीं मिल नहीं सकती।
आनन्द मय भगवान का यदि ध्यान नहीं है॥
सद्भक्ति मुक्ति प्राप्त वो कर पाता है पथिक।
जिसको किसी भी वस्तु का अभिमान नहीं है॥

सन्त वचन—हमारा वही है जो हमें कभी त्याग नहीं करता हम उसी के हैं जिसे कभी नहीं छोड़ सकते।

प्रभो तुम्हीं को अपना पायें॥
सदा तुम्हारे ही गुण गायें॥

मान रहे थे जिसको अपना, अब जाना वह सब है सपना।
एक तुम्हीं से नेह लगायें॥

तुम्हीं दिखाते चलो नाथ मग, अधिक नहीं, बस एक एक पग।
सकुशल हम तुम तक आ जायें॥

रोक न दें मम प्रगति प्रलोभन, लगा रहे तुममें ही यह मन।
मिटती जायें सब बाधायें॥

जिस प्रकार से मेरा हित हो, वही करो तुम जो कि उचित हो।
अब यह जीवन सफल बनायें॥

ऐसे हम हो जायें ज्ञानी, रहें न मोह भ्रमित अभिमानी।
हम माया में मन न फँसायें॥
अहंकार यह तुममें खोकर, हे परमेश्वर तुममय होकर।
पथिक मुक्ति आनन्द मनायें॥

सन्त वचन—भगवान की अहेतुकी कृपा को और अपने कर्तव्य को कभी न भूलो। सत्य लक्ष्य पर सदा दृष्टि रक्खो।

प्रभु तुमको न भूलें यही सौभाग्य हमारा है॥
तुमने ही तो लाखों को तारा है उबारा है॥
जो अशुभ किया मैंने तुमने न किया कुछ भी।
दुख उस किये का फल है तुमने न दिया कुछ भी।
जो तुमसे मिल रहा है वह दान ही न्यारा है॥
जो बिगड़ी वो हमसे ही तुमसे नहीं कहीं पर।
तुमतो बनाने वाले हम देखते यहीं पर।
फिर भी मुझे यह अपना अहंकार ही प्यारा है॥
जब भूले हमी भूले तुमको तुम्हीं में रहकर।
तुमने कभी न छोड़ा हमको अयोग्य कहकर।
बदले के बिना अनुपम यह प्यार तुम्हारा है॥
जो कुछ न कर सके हम या जो रहा अधूरा।
वह सब तुम्हारे बल से होता ही गया पूरा।
ऐसा ही मुझ पथिक को आगे भी सहारा है॥

सन्त वचन—वह भगवान समाज सेवक को सुखद संसार के रूप में, भक्त को प्रेम के रूप में, जिज्ञासु को ज्ञान के रूप में और प्रत्येक भावुक प्रेमी को भावानुसार विविध रूप में मिलते हैं।

हम जान गए तुम हो पर यह कुछ भी नहीं हो ॥
जो कुछ हो विलक्षण हो तुम जैसे भी कहीं हो ॥

तुम झलक दिखाते कभी ज्ञानी के ज्ञान में।
तुम समझ में आते कभी ध्यानी के ध्यान में।
तुम चेतना बन चमकते हो स्वाभिमान में।
तुम क्षुद्र में हो और तुम्हीं हो महान में।
इस झूठ के पर्दे में हो जो कुछ हो सही हो ॥ हम०॥

जिस दर पै आके फिर कहीं जाना नहीं रहे।
मन के लिए कोई भी बहाना नहीं रहे।
माया के लिए मन में ठिकाना नहीं रहे।
पाकर तुम्हें फिर कुछ कहीं पाना नहीं रहे।
मेरी ये चाह है कि तुम्हारी ही चही हो ॥ हम०॥

तुमको कभी दूरातिदूर मान रहे हम।
आनन्द मय चिन्मात्र कभी जान रहे हम।
अपने ही रूप में कहीं पहिचान रहे हम।
संसार में क्या सार है! यह छान रहे हम।
हम से वो दूर कर दो जो कुछ भूल रही हो ॥ हम०॥

तुमसे ही मिला करता पुण्य पाप का जीवन।
तुमसे मिला करता है वर या शाप का जीवन।
तुमसे ही दीखता है शीत ताप का जीवन।
तुमसे ही मैं पाता हूँ अपने आप का जीवन।
मुझ पथिक को दिखते नहीं हो फिर भी यहीं हो ॥ हम०॥

सन्त वचन—तुम भले ही ध्यान न दो परन्तु दुःख संसार में इसी लिये है कि तुम विनाशी सुख से विरक्त होकर आनन्द को प्राप्त करो।

गुरु जन जो कुछ कह जाते हैं तुम उसे भुलाओगे कब तक ॥
देखना यही है इस जग में तुम चैन मनाओगे कब तक ॥

अगणित अभिमानी चले गये माया ममता से छले गये।
वे न ले गये कौड़ी संग में तुम लोभ बढ़ाओगे कब तक ॥

जो गया न अब वह आयेगा जो है वह निश्चय जायेगा।
जब कोई सदा न रह सकता तब तुम रह पाओगे कब तक ॥

जिसको गा कर रोना होता जिसको पा कर खोना होता।
उस नश्वर वैभव सुख के तुम यह गीत सुनाओगे कब तक ॥

मिलती है परम शान्ति जिससे मिटती है दुखद भ्रांतिजिससे।
ऐ पथिक उसी परमेश्वर की तुम शरण न आओगे कब तक ॥

सन्त वचन—संसार में भय तथा चिन्ता इसीलिये है कि तुम विनाशी वस्तुओं का आश्रय छोड़कर अविनाशी सत्य का आश्रय लेकर अभय तथा चिन्ता मुक्त हो जाओ।

हे परमेश्वर परमात्मन हृदय विहारी तुमको नमस्कार ॥
हे प्रणत पाल विश्वम्भर हे दुख हारी तुमको नमस्कार ॥

हे शान्ति सिन्धु हे परम पुरुष घट घट व्यापक अन्तर्यामी।
हे सर्वगुणाश्रय गुणातीत असुरारी तुमको नमस्कार ॥

हे नित्य शुद्ध हे परम बुद्ध हे पूर्ण परात्पर अकथनीय।
हे प्राणि मात्र के जीवन हे हितकारी तुमको नमस्कार ॥

हे पूर्ण काम सच्चिदानन्द हे नित्य मुक्त भव भय भंजन।
जन तारन भक्त उबारन हित अवतारी तुमको नमस्कार ॥

हे विभु हे सर्वैश्वर्य पूर्ण हे प्रेम मूर्ति अनुपम दाता।
हो पथिक तुम्हीं मय पाकर शरण तुम्हारी तुमको नमस्कार ॥

सन्त वचन—तुम भले ही न समझो पर मृत्यु इसीलिये है कि तुम विनाशी जीवन के द्वारा अविनाशी नित्य जीवन को प्राप्त कर लो इस देह को अपना रूप न मानो।

मैं हूँ पथिक सखे तुम मुझसे समझ बूझकर प्रीति बढ़ाना॥
फिर मत कहना आगे चलकर मैंने तुम्हें नहीं पहिचाना॥

यदि तुम मेरे सच्चे साथी हो तो इस सत्पथ में आओ।
आकृति नहीं, किन्तु तुम अपनी परम विरागी प्रकृति बनाओ।
होकुछभीनिजभाग्यपरिस्थिति कभीन न अपना लक्ष्य भुलाओ।
ऐसा न हो, कहीं कुछ लालच वश तुम पीछे ही रह जाओ।
याद रहे! अति दुष्कर होगा मुझे छोड़ करके फिर पाना॥

यदि तुम अपने मन में कुछ दुनियावी ममता प्यार लिये हो।
और साथ ही मान शान के पद उपाधि अधिकार लिये हो।
भौतिक जीवन रक्षा के हित धन वैभव का भार लिये हो।
सत्य-विमुख क्षण भंगुर सुखके ही यदि तुम आधार लिये हो।
तब तो मेरे संग में तुम को बहुत कठिन है पैर उठाना॥

कितने प्रेमी मिले; छुट गए, कुछ आगे भी छुट जायेंगे।
रुकने वाले, बढ़े हुओं को देख देखकर पछतायेंगे।
इस पथ में चंचल चितवाले जहाँ तहाँ ठोकर खायेंगे।
जो कि तपस्वी त्यागी हैं वह सत्वर परम शान्ति पायेंगे।
प्रेमी का कर्तव्य यही है कहीं न रुकना चलते जाना॥

चलते हुए चतुर्दिक अपने किसी-किसी को सोते देखूँ।
कभी किसी को दुखद स्वप्न से भी भयवस जाग्रत होते देखूँ।
सुख के कारण ही इस जग में बद्ध जीव को रोते देखूँ।

सत्य ज्ञान से वंचित रहकर सबको जीवन खोते देखूँ।
सोचो कब तक साथ रहेगा जिसको तुमने अपना माना॥

प्रभु के पथ में चलते रहना मेरा तो बस यही काम है।
जहाँ किया विश्राम कहीं पर कहने भर को वही धाम है।
जीवन के दिन बीत रहे हैं नित्य प्रात है नित्य शाम है।
ठहर न सकता अधिक दिवस तक इसीलिये तो पथिक नाम है।
इस अनन्त के पथ में मेरा कोई निश्चित नहीं ठिकाना।
मैं हूँ पथिक सखे तुम मुझसे समझ बूझकर प्रीति बढ़ाना॥

सन्त वचन—परम प्रभु की याद उलटकर दया बन जाती है, जो अभिमानी हैं वही दया का अनुभव नहीं करते। दया दीन के साथ रहती है। दया के साथ सभी सद्‌गुण रहते हैं।

हे समर्थ प्रभु दया तुम्हारी मेरे सारे दुःख हरती है॥
तुमसे मिलकर ही हे प्रियतम अनुपम शांति मिला करती है॥

इसी दया से प्राणिमात्र को तुमने बहु बिधि दान दिया है।
शरणागत अधमातिअधम को अपने निकट स्थान दिया है।
सबको सबकी इच्छित विधि से अपनी गति का ज्ञानदिया है।
अपने से अनुरक्त जनों को सर्वोपरि सन्मान दिया है।
पतित पावनी इसी दया से असुरों की माया डरती है॥

करते आये और करोगे नाथ सदा तुम प्यार हमारा।
तुम्हीं जानते हो किस विधि से होना है उपचार हमारा।
तुमसे हमने सब कुछ पाया तुममें ही संसार हमारा।
तुमको ही तो भव बन्धन से करना है उद्धार हमारा।
नाथ तुम्हारे चिन्तन से ही मेरी सब बाधा टरती है॥

हम न समझ पाते हैं तुमको, किन रूपों में क्या कर जाते।
जहाँ भूलते हैं इस जग में तुम करुणानिधि राह दिखाते।
गिर पड़ते हैं जहाँ कहीं हम तुम्हीं शक्ति दे शीघ्र उठाते।
सुख से अधिक सदा दुख में हम अपने निकट तुम्ही को पाते।
हम तुम में ही हैं, इस अनुभव से चित की चिन्ता मरती है॥

अब समझे हैं अन्तर्यामी तुम किंचित भी दूर नहीं हो।
कितना ही हम भूलें तुमको तुम न भूलते हमें कहीं हो।
तुम्हीं चाहते हो जब जिसको तत्क्षण मिलते उसे वहीं हो।
मेरे जन्म मृत्यु के संगी नित्य सत्य तुम अभी यहीं हो।
पथिक हृदय में भक्ति तम्हारी अति आनन्द सुधा भरती है॥

सन्त वचन—अपना कुछ न मानो, सब कुछ भगवान का जानो मिले हुए का सदुपयोग करो। अपने दोषों के अतिरिक्त किसी अन्य को दुखदाता न समझो।

यह समय न सदा रहेगा॥
परिवर्तन शील जगत में किस किस को चित्त चहेगा॥
जो पुण्य कर सको, कर लो, सदभावों से हिय भर लो।
सदगुरु का आश्रय धर लो, भवसागर से अब तर लो।
यह कर न सके तो जीवन माया से विवश बहेगा॥

यदि धन है तो दानी बन, विद्या है तो ज्ञानी बन।
परमेश्वर का ध्यानी बन, अति सरल निरभिमानी बन।
चिन्ता न करो तुम इसकी, कोई क्या मुझे कहेगा॥

तुम सावधान हो जाओ, अपना अज्ञान मिटाओ।
आओ, सत्पथ में आओ, जो बिगड़ी उसे बनाओ।

अभिमान मोह वश मानव जग में अति दुःख सहेगा ॥

जागो, तुम सोते क्यों हो, यह अवसर खोते क्यों हो।
अपराधी होते क्यों हो, भयवश तुम रोते क्यों हो।
वह पथिक अभय होगा जो सद्‌गुरु का ज्ञान गहेगा ॥

सन्त वचन--परमेश्वर से मिली हुई प्रीति पदार्थों से मिलकर मोह बन जाती है और पदार्थों से हटाते ही वही भगवान के प्रति भक्ति बन जाती है।

॥ मङ्गलमय घड़ी आई है कोई जाने न जाने ॥

जब ते मिले दरश सद्‌गुरु के मनहुँ परम निधि पाई है ॥कोई॥
शुभ सत्संगति सुलभ भई जब ज्ञानामृत झरि लाई है ॥कोई॥
सुनि-सुनि निज प्रियतमकी महिमा मन में सुरति समाई है॥कोई॥
एकहि मनन एकहि चिन्तन एकहि छवि मन भाई है ॥कोई॥
सकल विश्व में उस सुन्दर की शुचि सुन्दरता छाई है॥कोई॥
पथिक धन्य वह जिसने अपने प्रभुसे प्रीति लगाई है ॥कोई॥

सन्त वचन--सार्थक, सफल वही है जिससे दैवी-सम्पत्ति की अर्थात् सद्‌गुणों की वृद्धि होती जाये। जिससे दोषों की पुष्टि हो वही निरर्थक है।

व्यर्थ जीवन न जाए, सजग रहना ॥

जहाँ तक हो सके तुम पुण्य दान करते रहो।
गुमान छोड़कर गुणियों का मान करते रहो।

प्रेम के नेम से ईश्वर का ध्यान करते रहो।
उनकी लीलाओं का सविवेक गान करते रहो।
मन को प्रभु में लगाए सजग रहना॥

पूरी होगी अवश्य जो कि चाह सच्ची है।
खाली जायेगी नहीं जो कि आह सच्ची है।
सच्चे प्रेमी बनो वस यह सलाह सच्ची है।
समझ लो अपने लिए कौन राह सच्ची है।
भूल होने न पाये सजग रहना॥

फिसल जाना न कहीं सुखों के प्रलोभन में।
त्याग दो उनको जो दुर्वासना भरी मन में।
देखो भगवान को सब प्राणियों में जन-जन में।
कहीं आसक्त न होना यहाँ वैभव धन में।
भाव डिगने न पाये सजग रहना॥

सदा सम रह के यह संसार देखते जाना।
प्यार हो या कि तिरस्कार देखते जाना।
झूठ है जगत का व्यवहार देखते जाना।
अपना जैसे भी हो उद्धार देखते जाना।
पथिक जो कुछ भी आये सजग रहना॥

सन्त वचन—चिन्तन उसी का करो जिससे भिन्नता हो, दूरी न हो जड़ता न हो और जो जन्म मृत्यु से परे हो।

मेरे प्रियतम मुझको अपने कब दरश दिखाओगे॥
जीवन दिन बीते जाते मनमोहन कब आओगे॥

प्रभु नाम तुम्हारा इतना सुमधुर शुभ मंगलमय है।
जिसका आश्रय लेने से होता दोषों का क्षय है।
हे दुखहारी मेरे कब सारे दुःख मिटाओगे॥

तुम नित्य एक रस व्याप रहे हो जग के कण-कण में।
तुमसे ही तो है नित नवीन परिवर्तन क्षण-क्षण में।
मैं देख सकूँ तुमको, कब वह साधन बतलाओगे॥

जग भूला जिसको देख तुम्हें जो इतनी सुखकर है।
वह प्रकृति तुम्हारी सत्ता से जब इतनी सुन्दर है।
तब तुम कितने सुन्दर होगे कैसे मिल जाओगे॥

हम छूट सकें जैसे भी इस सुख-दुःख के बन्धन से।
हे नाथ तुम्हारी शरणागत हैं हारे निज मन से।
मुझ दीन पथिक के जीवन को कब मुक्त बनाओगे॥

सन्त वचन—जो हमारे जन्म के पहले और मृत्यु पश्चात् भी हमारा संरक्षक सहायक है वही परमेश्वर है।

॥ तुम साँचे सबके मीत ॥

किसी किसी ने तुमको जाना और तुम्हें जैसा भी माना।
भक्तों के भावानुसार बन नित्य निबाही प्रीत॥

तुम रहते हो सदा संग में शक्ति तुम्हारी अंग अंग में।
किन्तु तुम्हें प्रभु पहिचाने बिन हम दुर्बल भयभीत॥

तुममें कुछ भी चाह नहीं है यहाँ चाह की थाह नहीं है।
तुमसे ही सब कुछ पाकर हम गाते सुख के गीत॥

तुम ही दुखियों के दुख हरते तुम पतितों को पावन करते।
नाथ तुम्हारे चिन्तन से ही होता चरित पुनीत॥

तुमने हमको कभी न छोड़ा हमने ही तुमसे मुख मोड़ा।
इसीलिए भूलते भटकते गए बहुत दिन बीत॥
हर लो अब अज्ञान हमारा रहे सदा ही ध्यान तुम्हारा।
देख सकें सर्वत्र पथिक हम तुमको मायातीत॥

सन्त वचन—कृपा सभी बलों से श्रेष्ट है। अभिमान युक्त मानव कृपा का आश्रय नहीं ले सकता। दुःख अपनी भूल से, आनन्द प्रभु की कृपा से प्राप्त होता है।

अधम उद्धारने दीन दुख टारने,
प्रेम के वश सदा प्रभो आते तुम्हीं॥
परम मंगल करन सर्व संकट हरन,
रूप अनुपम अनेकों बनाते तुम्हीं॥
कोई कितना ही पापी अधम क्यों न हो,
छाया अज्ञान का घोर तम क्यों न हो।
मोह निद्रा में सोते हुये जीव को,
युक्ति से हे दयामय जगाते तुम्हीं॥
याद कर प्रेम से या कि भय से तुम्हें,
जब पुकारा किसी ने हृदय से तुम्हें।
तुमने सबकी सुनी जिस तरह हो सका,
पार भव-सिन्धु से हो लगाते तुम्हीं॥
भूलता है तुम्हें जीव अभिमान में,
लीन रहता सदा असत के ध्यान में।
अपने हितके बचन मानता जब न मन,
पतित होने पै उसको उठाते तुम्हीं॥

आपका योग तो नित्य ही प्राप्त है,
आपकी शक्ति ही सब कहीं व्याप्त है।
जो पथिक प्रेम से चाहता है तुम्हें,
उसे मिलने का साधन दिखाते तुम्हीं ॥

सन्त वचन—यह होश किस काम का जो मानव को स्वार्थी अभिमानी क्रूर कठोर बना दे। जाग्रत् वही है जो मन में विकारों दोषों का प्रवेश न होने दे।

शुभ अवसर बीते जाते हैं तुम बुद्धिमान मानव जागो ॥
अविवेकी देर लगाते हैं तुम बुद्धिमान मानव जागो ॥
यह महा दुखद अज्ञाननिशा, जिसमें सूझती न सत्य दिशा।
इसको सब समझ न पाते हैं तुम बुद्धिमान मानव जागो ॥
यह झूठे दुख-सुख के सपने, जिनको तुम समझ रहे अपने।
सब मन के माने नाते हैं तुम बुद्धिमान मानव जागो ॥
भोगों से जोकि विरक्त बने, जो सच्चे प्रभु के भक्त बने।
वे गुरुजन नित्य जगाते हैं तुम बुद्धिमान मानव जागो ॥
जो उठते मोह नींद तजकर, चलते शुभ सद्गुण से सजकर।
वे पथिक सुपथ में गाते हैं तुम बुद्धिमान मानव जागो ॥

सन्त वचन—तुम्हें आनन्द प्राप्त करना है अतः सदा आनन्द स्वरूप का चिन्तन करो। तुम्हें प्रेमी होना है इसीलिये प्रेम स्वरूप का ही मनन करो।

हे कृष्ण केशव हे पूर्ण काम, कितने तुम्हारे सुमधुर हैं नाम ॥
माधव मदन मोहन हे मुरारी, गोविन्द गोपाल हे गिरधारी।

हे गोपियों के नयनाभिराम ॥

हे राधिका के चित चोर स्वामी, हे सर्वेश्वर अन्तर्यामी।
हे सर्वमय व्यापक सब ठाम ॥

हे रुक्मिणी कान्त हे असुरारी, हे भक्त वत्सल कल्याणकारी।
हे मंगलमय लीला ललाम ॥

हे अविनाशी शंकर वन्दित, देव तुम्हारा प्रेम अखण्डित।
भूलूँ न तुमको मैं आठों याम ॥

कोई तुम्हें जान पाये न पाये, कोई शरण में आये न आये।
मिलता सभी को तुममें विराम ॥

तुमने न जाने कितनों को तारा, सुनली उसी की जिसने पुकारा।
तुम्हीं पथिक के आनन्द धाम ॥

सन्त वचन—माया के चक्कर से बचना चाहते हो तो मायापति परमेश्वर की शरण लो संसार की सम्पत्ति को अपनी न मानो भगवान की जानो।

मनमोहन अपनी माया से क्यों हमें भुलाते हो ॥
मेरे इस मूरख मन की पूरी करते जाते हो ॥

तुमसे मैंने सब कुछ पाया पर तुम न मिले अब तक।
मिलते भी कैसे, उर में सच्ची चाह नहीं जब तक।
तुम तो सच्चे प्रेमी को ही प्रभु दरश दिखाते हो ॥

हे नाथ बता दो हम भी ऐसा प्रेम कहाँ पायें।
तुमसे ही माँग रहे हैं बोलो और कहाँ जायें।
हम योग्य नहीं हैं इसीलिए तो देर लगाते हो ॥

हे दानी वह बल दो जिससे हम हो जायें त्यागी।
अब देख सकें प्रियतम तुमको होकर अनुरागी।
सुनता हूँ एकाकी होने पर ही मिल पाते हो॥

अज्ञान तिमिर छाया है तुमको पहिचाने कैसे।
यह अहंकार बाधक है तब तुमको जाने कैसे।
हम दीन पथिक के दोषों को अब क्यों न मिटाते हो॥

सन्त वचन—संसार में जितना भी सुख है चित्त की एकाग्रता का सुख है यदि चित्त को अविनाशी परमात्मा में एकाग्र कर लिया जाय तो अविनाशी आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।

एक ईश्वर के गुण गान गाते चलो॥
अपने मन को उन्हीं में लगाते चलो॥

जो समय है उसे व्यर्थ खोना नहीं,
मोह निद्रा में जग बीच सोना नहीं,
भाग्यवश कष्ट आयें तो रोना नहीं,
भूल से अब सुखासक्त होना नहीं,
अपने कर्तव्य सारे निभाते चलो॥

कभी कुविचार अन्तर में लाओ नहीं,
भूलकर भी कुसङ्गति में जाओ नहीं,
किसी की वस्तु में मन लुभाओ नहीं,
किसी के चित्त को तुम दुखाओं नहीं,
मान माया के बन्धन छुड़ाते चलो॥

पुण्य के लिये तुम पूर्ण दानी बनो,
गुरु कृपा के लिये निरभिमानी बनो,

भक्ति चाहो तो प्रभु के ही ध्यानी बनो,
मुक्ति के लिये स t तत्व ज्ञानी बनो।
त्याग अनुराग उर में बढ़ाते चलो॥

व्यर्थ चिन्तन से निज चित्त को मोड़कर,
लोभ को भी सदा के लिये छोड़कर।
कामना की कठिन बेड़ियाँ तोड़कर,
परम प्रभु से अहङ्कार को जोड़कर।
पथिक अपने को पावन बनाते रहो॥

सन्त वचन—मुक्त होना चाहते हो तो देह के स्वामी को जान लो और भक्त होना चाहते हो तो संसार के स्वामी को जान लो।

देखो जो कोई देख सको है जीवन दाता कौन॥
शरणागत दीनों दुखियों के है दुःख मिटाता कौन॥

यह किसकी सत्ता है जिसके बिन तृण भी हिल न सके।
यह शक्ति कौन देता जिसके विन कण भी मिल न सके।
सत नियम धर्म से पूर्ण व्यवस्थित विश्व बनाता कौन॥

वह कौन जागता रहता है जब हम सो जाते हैं।
है कौन याद रखता हमको जब हम खो जाते हैं।
उस विस्मृत अपने सत्स्वरूप की याद दिलाता कौन॥

होता भीषण संहार कहीं नव सृजन दीखता है।
यह मिटा-मिटा कर रूप बनाना कौन सीखता है।
इस अशुभ असुन्दर से सुन्दर शुभ का निर्माता कौन॥

जल के बिन मीन तड़पती कहीं पतिंगे जलते हैं।
हँसते हैं खिल-खिल सुमन मुदित मन भ्रमर उछलते हैं।
सम्भ्रान्त पथिक को भक्ति मुक्ति का मार्ग दिखाता कौन॥

सन्त वचन—संसार से सुख की आशा करना उसी से सम्बन्ध जोड़ना संसार में बद्ध होना है। परमेश्वर से परम शान्ति की आशा करना और उन्हीं से सम्बन्ध जोड़ना संसार से मुक्त हो जाना है।

हे नाथ तुम्हारे दर्शन की कब पूरी होगी आश॥
सेवा में सफल बने तन मन यह जीवन की अभिलाष॥

वासना जगत के भोगों की इस जग में लाती है।
अब सभझे हमको कहाँ-कहाँ कामना नचाती है।
हे देव हमें वह बल दो जिससे तोड़ सकें यह पाश॥

सुनता हूँ निर्मल मन जिनका वह तुमको पाते हैं।
फिर पतित जनों को भी तो पावन आप बनाते हैं।
पर हमको ही सन्मुख होने का मिल न सका अवकाश॥

सब कुछ पाया पर तुम न मिले दिन बीत गये इतने।
हम बता न सकते हैं अब तक अपराध किये कितने।
बस तुम्हीं एक मेरे दोषों का कर सकते हो नाश॥

अभिमान शून्य हो जाऊँ सब कुछ तुमको ही मानूँ।
जो कुछ भी देखूँ सबमें केवल तुमको ही जानूँ।
मैं दीन पथिक हूँ मुझको दे दो अपना ज्ञान प्रकाश॥

सन्त वचन—संसार में संसार की सेवा के लिये रहो पर अपने लिये परमेश्वर के अतिरिक्त कुछ भी न चाहो। सेवा के लिये सभी को अपना समझो अपने लिये किसी को अपना न मानो।

अब और कहाँ जायें, प्रभु आपके गुण गायें ॥

संसार में सब कुछ के हे नाथ प्रकाशक तुम।
शरणागतों के रक्षक हो विघ्न विनाशक तुम।
सङ्गी जनम मरण के सर्वस्व तुम्हें पायें ॥

जब तक कि तुममें रहकर तुमसे बने विमुख हैं।
तब तक सुखों के पीछे मिलते महान दुःख हैं।
इस दुर्दशा से हे हरि अब आप हीं बचायें॥

हे हृदय निवासी तुम सुधि ले रहे जन जन की।
कुछ कहने के पहले ही सब जानते हो मन की।
तुमसे ही पूरी होती हैं मेरी कामनायें ॥

हे दीनबन्धु मेरा अब किस प्रकार हित हो।
बतलाओ वही साधन जिससे प्रशान्त चित हो।
मुझ पथिक के हृदय का सब भेद भ्रम मिटायें॥

सन्त वचन—परमेश्वर जो दूर प्रतीत होते हैं वह केवल न जानने के कारण, और संसार जो निकट प्रतीत होता है वह भी न जानने के कारण। परमेश्वर का ज्ञान होने पर दूरी मिट जायगी। संसार का ज्ञान होने पर सम्बन्ध मिथ्या प्रतीत होगा।

तुमको छलिया हम क्यों न कहें जब नहीं समझ में आते हो॥
निज छाँह न छूने देते हो इक क्षण भी दूर न जाते हो॥

तुम साधे हुए अगाध मौन हो सबके अन्तर में बैठे।
कोई तुमको बाहर खोजे कोई जग के भीतर पैठे।
हम सबको नहीं दीखते हो पर सबको राह बताते हो॥

तुममें ही प्रलय सृजन होता तुममें प्राणी जगते सोते।
तुमसे कर्मों का फल पाकर कोई हँसते कोई रोते।
तुमही तो अपनी माया में सारा संसार नचाते हो॥

कितने ही असुरों के समान यूँ कह करके ललकार रहे।
ईश्वर है तो सन्मुख आकर अपने होने की बात कहे।
तुम सुन लेते हो सबकी पर सबको अपनी न सुनाते हो॥

कोई तुमको पाना चाहे जप तप व्रतादि साधन बल से।
पर आगे आता अहंकार तुम सब देखा करते छल से।
फिर जिसे चाहते उसी पथिक को अपना भेद लखाते हो॥

सन्त वचन—अहंकार महादोष है जो किसी भी शुभ कर्म से दूर नहीं होता। केवल आस्तिक में ही विनम्रता के द्वारा अहंकार का दमन हो जाता है।

दे दुखहारी शरण तुम्हारी तुमसे निज दुख रो न सके हम॥
नाथ तुम्हारे प्रेमामृत में अब तक हृदय भिगो न सके हम॥

तीरथ गये किया जप तप भी शास्त्र पढ़े ज्ञानी कहलाये।
किंतु खेद सब कुछ के पीछे अहंकार को खो न सके हम॥

व्यर्थ गया दीखता हमारा सद्विवेक बिन सकल परिश्रम।
यदि मुनियों की भाँति जगत में जाग सके या सो न सके हम॥

जीवन कुछ करते ही बीता फिर भी हो न सका वह कुछ भी।
जिससे सब अभाव मिट जाते ऐसी शक्ति सँजो न सके हम॥

देव तुम्हारे द्वारा ही हो सकता है यह निर्मल जीवन।
कृपा वृष्टि से धुल जाएगा जो मल अब तक धो न सके हम॥

हे सुख दाता दोष विनाशक पूरी हो यह भी अभिलाषा।
जीवन बीत रहा पर अब तक पथिक तुम्हीं मय हो न सके हम॥

सन्त वचन—प्रियतम प्रभु की दया कृपा कब किस रूप में होती रहती है उसे समझने के लिये सावधान रहो। विश्वास रक्खो वे चाहे कुछ करें पर अपनी ही ओर हमें लिये जा रहे हैं।

जब कभी प्रभो तुम आ जाते, सारे दुःख द्वन्द्व मिटा जाते॥
मेरे जीवन की मति गति में, तन या मन वाणी की कृति में।
जैसा कुछ जहाँ उचित होता, वैसा आदेश सुना जाते॥
हम अपना व्यर्थ समय खोकर, फिरते जब कभी भ्रमित होकर।
तब तुम्हीं नाथ करुणा करके, हमको सन्मार्ग बता जाते॥
जब व्याकुल हो कोई तुम बिन, सबका है यह अनुभव उस दिन।
प्रत्यक्ष नहीं मिलते तब भी, सपने में दरश दिखा जाते॥
बिरले ही तुमको जान सके, जो प्रेमी वह पहिचान सके।
माया ममता से रहित 'पथिक' जो तुम्हें खोजते पा जाते॥

सन्त वचन—इन्द्रिय दृष्टि से जो कुछ सुखद सत्य प्रतीत होता है बुद्धि दृष्टि से वहीं दुखद असत्य दीखता है। मानव वही जो बुद्धि दृष्टि से जगत दृश्य को देखता हो।

मानव तुमने क्या पाया॥

देखो सुख के बदले में कितना है दुःख उठाया॥
इन भोग सुखों के पथ में होकर तन मन के रोगी।
कितने ही पुण्य मिटाकर मर गए करोणों भोगी।
उनकी दुर्गति को लखकर शुभमति ने तत्क्षण गाया॥

कितने राजे महराजे हो गए महा अभिमानी।
वे भी न रहे इस जग में उनकी रह गई कहानी।
उसने सुनने वालों को सुख का दुखान्त बतलाया॥

जिनके महलों में प्रभुता के राग सदा बजते थे।
इच्छित सुख दाता सेवक जिनको न कभी तजते थे।
उनकी समाधि के सूनेपन ने यह शब्द सुनाया॥

जिनको इस जग में सुन्दर सुखकर सत्कार मिला है।
जिनको पुण्यों के बदले में उत्तम प्यार मिला है।
उनसे पूछो यदि इतने पर भी सन्तोष न आया॥

जो कुछ है अभी समय है तुम कर लो अपने हित की।
अन्तर्मुख होकर त्यागो चंचलता अपने चित की।
यदि कर न सके तुम ऐसा तो जीवन व्यर्थ गवांया॥

उन सत्पुरुषों को देखो जो परम तपस्वी त्यागी।
तज मान मोह माया को जो हुए साथ अनुरागी।
हम पथिक जनों को ऐसे सदगुरु ने मार्ग दिखाया॥

सन्त वचन—न रहनेवाली देह में रहनेवाले को पहचान लो। न रहनेवाले सुख दुख के प्रकाशक को जान लो वही अविनाशी है।

मानव सोचो जग के सुख का विस्तार रहेगा कितने दिन॥
सत्कार रहेगा कितने दिन यह प्यार रहेगा कितने दिन॥

चाहे पितु हो या माता हो पत्नी हो सुत या भ्राता हो।
जिसको अपना कहते उस पर अधिकार रहेगा कितने दिन॥

कोई आता कोई जाता सबसे थोड़े दिन का नाता।
जिसका भी आश्रय लेते वह आधार रहेगा कितने दिन॥

जो जग में सच्चे ज्ञानी हैं परमात्म-तत्व के ध्यानी हैं।
उनसे पूछो मन का माना संसार रहेगा कितने दिन ॥

तुम प्रेम करो अविनाशी से मिल जाओ सब उरवासी से।
ऐ पथिक यहाँ 'मैं मेरा' का व्यापार रहेगा कितने दिन ॥

सन्त वचन—अदूरदर्शी मनुष्य ही लोभी मोही अभिमानी होते हैं क्योंकि वे विनाशी वस्तुओं के अथवा क्षण स्थाई सुखों के आगे नहीं देख पाते। जो जहाँ तक देखते हैं वहीं तक जीते हैं और वहीं तक कर्म करते हैं।

सोचो किसने क्या पाया, मानव जब जग में आया ॥

आने वालों को देखो क्या लेकर वे आते हैं।
जानेवालों को देखो क्या सँग लेकर जाते हैं।
कुछ पुण्य किये या यूँ ही यह नर तन व्यर्थ गवाँया ॥

उस लोभी को भी देखो संचय का जिसे व्यसन है।
लाखों की सम्पत्ति जोड़ी पर तृप्त न होता मन है।
कौड़ी न साथ जायेगी फिर किसके लिये कमाया।

उस कामी को भी देखो मन भरा या कि रीता है।
इच्छाएँ पूरी करते कितना जीवन बीता है।
यह वही काम है जिसने किस किसको नहीं नचाया ॥

उस मोही को भी देखो सबकी ममता में फूला।
निज देह गेह में फँसकर उस परमेश्वर को भूला।
यह मोह दुःखों की जड़ है इसने किसको न रुलाया ॥

उस अभिमानी को देखो यह विभव रहेगा कब तक।
उससे भी बढ़कर जग में हो गये करोड़ों अब तक।

मिट्टी में खोजे कोई उनकी कंचन सी काया ॥
उस दानी को भी देखो क्या सुख मिलता देने में।
वह क्या जानेंगे इसको जो लगे हुए लेने में।
इन देने वालों ने ही है सच्चा लाभ उठाया ॥
उस ज्ञानी को भी देखो जिसको न कहीं कुछ भय है।
दिख रहा दृष्टि में उसको यह विश्व आत्मा मय है।
जो कोई सन्मुख आया उसका अज्ञान मिटाया ॥
उस प्रेमी को भी देखो जो प्रियतम में लय होकर।
स्वाधीन विचरता जग में तन मन की चिन्ता खोकर।
वह पथिक धन्य है जिस पर पड़ जाती इनकी छाया ॥

सन्त वचन—दूरदर्शी पुरुष ही असत्य की सीमा को पार कर सत्य तक देखते हैं वे सत्य से मिलकर अमर जीवन प्राप्त करते हैं। संसार के सभी महापुरुष दूरदर्शी होने के कारण नित्य जीवन प्राप्त कर चुके हैं।

तुमने मुझको कभी न छोड़ा, मैंने ही तुमसे मुख मोड़ा ॥
भोग सुखों में मुग्ध हुआ मन, तुम्हें भूलकर हे जीवन धन।
परम तृप्त की आशा लेकर, नश्वर जग से नाता जोड़ा ॥
मिले हुए शुभ अवसर खोकर, मैं अक्षम्य अपराधी होकर।
देखूँ एक तुम्हीं को ऐसा, कभी कृपा का तार न तोड़ा ॥
क्या मुख लेकर मैं कुछ माँगू, दोष वहुत हैं किस विधित्यागू।
तुम तक आने में मेरे ही, पाप बन रहे मग के रोड़ा ॥
जहाँ कहीं आता जाता हूँ, अपने को तुममें पाता हूँ।
इतना अतुलित प्यार पथिकपर, जितना भी समझूँ वह थोड़ा ॥

सन्त वचन--अपने प्रियतम प्रभु की अपने में ही स्थापना कर जो और मन को उन्हीं के निकट रखते हुए निरन्तर उपासना करते रहो।

हे दयानिधान तुम्हारे ही गुण गाते जायेंगे॥
जो कुछ भी अपने मन में तुम्हें सुनाते जायेंगे॥
बस तुम्हीं एक ऐसे संगी हो दीख रहे जग में।
जो कभी न तजते हमें प्रेरणा देते पग-पग में।
अब हम हर एक बहाने तुम्हें बुलाते जायेंगे॥
जो कुछ भी मेरे लिये उचित है वही करोगे तुम।
हे देव कभी न कभी मेरे सब दुःख हरोगे तुम।
तुमसे बल पाकर अपने दोष मिटाते जायेंगे॥
यह सच है प्रियतम तुम्हें खोजने दूर नहीं जाना।
दर्शन देने को दूर कहीं से तुम्हें नहीं आना।
फिर भी हमको जाने कब तक तरसाते जायेंगे॥
प्रभु क्या दूँ तुमको, जो कुछ है सर्वस्व तुम्हारा है।
अपने इस तन मन पर भी क्या अधिकार हमारा है।
हम पथिक सदा तुमसे ही सब कुछ पाते जायेंगे॥

सन्त वचन—जितना रोग होता है उतनी ही दवा करनी पड़ती है। जितना अज्ञान उतना ही सत्संग करना होता है। अपना ज्ञान होने पर सत्य का ज्ञान और शरीर का ज्ञान होने पर संसार का ज्ञान स्वतः हो जाता है।

अब तक तुम जाने क्या होते देखो कितने दिन बीत गए॥
खेलते और खाते सोते देखो कितने दिन बीत गए॥

यह दुर्लभ मानव तन पाकर प्रभु के प्रेमी न हुए आकर।
तब तो फिर व्यर्थ समय खोते देखो कितने दिन बीत गए॥

कितनी असार चिंताओं का नित राग द्वेषमय भावों का।
अति दुखद भार ढोते ढोते देखो कितने दिन बीत गए॥

जितने भी दिखते हैं बंधन, रचता इनको अपना ही मन।
काटते वही जो कुछ बोते, देखो कितने दिन बीत गए॥

कंचन कमनीया काया में, अब मुग्ध न होना माया में।
ऐ पथिक यहाँ हँसते रोते, देखो कितने दिन बीत गए॥

सन्त वचन—अखण्ड प्रसन्नता चाहते हो तो अपने में ही प्रियतम प्रभु की स्थापना कर लो सच्चे प्रेमी को बीते हुए की याद नहीं आती भविष्य की चिन्ता नही रहती और वर्तमांन में कल नहीं पड़ती।

यह प्रेम पंथ ऐसा ही है जिसमें सब कोई चल न सके॥
कितने ही बढ़े थके फिसले कुछ आगे गए सम्हल न सके॥

जो कुछ न चाहते हैं जग में वह कहीं न रुकते हैं मग में।
है सुन्दर साँची प्रीति वही जो उर से कभी निकल न सके॥

वे प्रेमी ही अधिकारी हैं जो इतने धीरजधारी हैं।
चाहे कितना ही दुःख आये तन जाये पर प्रण टल न सके॥

वे मिलते सब कुछ खोने से उर का मल धुलता रोने से।
प्रियतम का वह प्रेमी कैसा जो विरह अग्नि में जल न सके॥

जो भोग सुखों का त्यागी है प्रभुता से पूर्ण विरागी है।
वह पथिक पहुँच पाता जिसको यह मन की माया छल न सके॥

सन्त वचन—जो कुछ असत्य है, दुखद है अशान्तिकारी है उसे भूलना सीखो, वियोग को अपमान को हानि को भूत को भूलना सीखो। वर्तमान का सदुपयोग करो। मनुष्य में सामर्थ्य बुद्धि से नहीं बल्कि अभ्यास से आता है।

भूलने वालो अहंकार भूलना सीखो॥
दुःख देते हैं दुर्विकार भूलना सीखो॥

शान्ति चाहो तो करो त्याग मोह माया का।
मन से माना हुआ संसार भूलना सीखो॥

कभी किसी ने यदि किया है तुम्हारा अपमान।
भाग्यवश हो गई है हार, भूलना सीखो॥

तुम्हारे द्वार पै यदि शत्रु भा मिलने आये।
तुम करो प्यार, तिरस्कार भूलना सीखो॥

छूट :जायेंगे सभी जिनको तुम कहते अपना।
सदा रहते न जो आधार, भूलना सीखो॥

बसा लिया है तुमने जिनको हृदय मन्दिर में।
पंच भूतों के वे आकार भूलना सीखो॥

बन गई है कहीं निष्काम किसी की सेवा।
उसका जो कुछ हो पुरस्कार भूलना सीखो॥

कितना सुन्दर है सत्स्वरूप को पहिचानो तो।
यह झूठी देह का शृंगार भूलना सीखो॥

भूलते आये हो परमार्थ की बातें अब तक।
जगत में स्वार्थ का व्यवहार भूलना सीखो॥

याद रक्खो सदा उस सत्य को, जिसमें रहते।
पथिक असत को बार बार भूलना सीखो॥

सन्त वचन—अपने को इतना सुन्दर बना जो कि प्रेमास्पद प्रभु तुम्हें चाहे तुम उनसे कुछ न चाहो और अपना जीवन इतना सुन्दर बना जो कि संसार चाहे पर जीवन संसार से कुछ न चाहें।

सुन्दर हो यह मानव जीवन॥

मेरे नाथ दीन दुख हारी कृपा आपकी पतित पावनी।
अहेतुकी है सुधामयी है, सर्व समर्थ विपद नशावनी।
उसी कृपा से हे आनँदघन॥

सुखी दशा में सावधान कर हम सबको सेवा का बल दो।
दुखी दशा में त्याग कर सकें वही शक्ति दो मति निर्मल दो।
लगा रहे तुममें चञ्चल मन॥

जिससे हम सुख दुख के बन्धन से जीवन में मुक्त हो सकें
सत स्वरूप का अनुभव करके क्षुद्र देह अभिमान खो सकें।
कहीं न रह जाये अपना पन॥

प्रभो आपके परम प्रेम का नित्य मधुर आस्वादन करके।
परम तृप्त कृतकृत्य हो सकें अपने में तुमको ही भर के।
तुम्हीं पथिक के हो प्रियतम धन॥

सन्त वचन—भक्त वही होता है जो निर्बल हैं, निर्बल वही है जिसके पास अपना कुछ नहीं है।

मन ध्याओ राधेश्याम, राधेश्याम, राधेश्याम ॥
मेरे भगवान सदा भूखे प्रेम भाव के हैं,
इसके ही वस किन किन से मिताई की।
भोजन जनकपुर के भी न सराहे कभी,
भीलनी के बेरों की है कितनी बड़ाई की।
फल छिलके औ शाक कौन सा था स्वाद लिये,
जिहि हेतु विदुर के घर पहुँनाई की।
पथिक सुदामा घर सम्पति भर दीनी जय,
चावलों की भर मुट्ठियों सफाई की।
मन ध्याओ राधेश्याम, राधेश्याम, राधेश्याम ॥
यूँ तो दीन बन्धु को पुकारते हैं सभी भक्त,
किन्तु गजराज की पुकार कुछ और थी।
विपद समय में दुखी रोते हैं प्रभु से परन्तु,
दीन द्रौपदी की अश्रुधार कुछ और थी।
ध्रुव प्रहलाद और शवरी विदुर आदि,
इनकी लीलाओं की बहार कुछ और थी।
प्रेमियों पुजारियों में पथिक विचार देखो,
मीरा के हृदय की यादगार कुछ और थी।
मन ध्याओ राधेश्याम, राधेश्याम, राधेश्याम ॥
उस भक्त व्याध में था आचरण कौन सा वो,
जिस पुण्य बल द्वारा पावन सुजान था।
विदुर व शवरी की जाति पाँति कौन सी थी,
प्रभु को बुलाने का अनोखा अभिमान था।
कौन सी थी आयु भला ध्रुव ऐसे बालक की,
पथिक अटल पद पाया वरदान था।
गज अरु गीध आदि प्रेमियों का जो था बल,

निश्चल प्रेम एक यही ज्ञान ध्यान था।
मन ध्याओ राधेश्याम, राधेश्याम, राधेश्याम ॥
कामना यही है और कामना न रह जाय,
सदा होके निष्काम जीवन बिताऊँ मैं।
प्रेम सिन्धु में तुम्हारे यह मन मीन सा हो,
तुम्हें छोड़ अन्य कहीं जीवन न पाऊं मैं।
तुमको ही देखूँ औ तुम्हारी ही सुनू मैं,
बात सभी भाँति तुममें ही आनन्द मनाऊँ मैं।
पथिक किसी भी ओर कुछ भी दिखाई पड़े,
तुमहीं को ध्याऊँ तुम्हीं मय बन जाऊँ मैं।
मन ध्याओ राधेश्याम, राधेश्याम, राधेश्याम ॥

सन्त वचन—जिसके द्वारा अनुभव करते हो वह स्वयं प्रकाश आपका निज स्वरूप है।

सत्य नाम सद्‌गुरु से पाया ओम ओम ओम ॥
सब मन्त्रों का प्राण ओम है, अक्षर अवधान ओम।
यही प्रणव वेदों ने गाया, ओम ओम ओम ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ओम में स्वर्ग भुवर भूदेश ओम में।
स्वर निनाद में यही सुनाया, ओम ओम ओम ॥
कारण सूक्ष्म स्थूल ओम में, अन्त मध्य अरु मूल ओम में।
इसमें ब्रह्म इसी में माया, ओम ओम ओम ॥
परम तत्व का ज्ञान ओम में, ब्रह्म शक्ति का ध्यान ओम में।
ओंमकार मय विश्व दिखाया, ओम ओंम ओम ॥
ओम सतचिदानन्द धाम है, भक्तिद मुक्तिद पूर्ण काम है।
पथिक हृदय में यही समाया, ओम ओम ओम ॥

लेखक की अन्य पुस्तकें

१—परमानन्द की ओर .... अप्राप्य

२—समझने की बात ... . ,,

३—सत्यान्वेषण (पृ. २७२) .... १।)

४—दिव्य मन्त्रणा (सत्यान्वेषण पुस्तक का एक शीर्षक) ८८ ।−)

५—धर्म दर्शन ,, ,, ... =)

६—परमार्थ के पथ में (पृ. २५२) .... १।)

७—सन्त दर्शन (पृ. २६४) ... . १=)

८—सद्गति प्रेरणा (पृ. १८४) .... ।।।)

९—साधन मीमांसा (पृ. ९०) .... ॥−) ।=)

१०—नारी और दिव्य जीवन (सद्गतिप्रेरणा का एक शीर्षक) ४८ ≡)

११—पथिक प्रश्नोत्तरी (पृ. ८४) .... ≡)

१२—आप क्या चाहते हैं (पृ. ८४) .... ।−)

१३—प्रकाश में .... ।−)

१४—वियोगिनी (पद्य) .... अप्राप्य

१५—पथिकोद्गार भाग १ से ४ .... ,,

पुस्तकें प्राप्त होने के स्थान

१—आर० सी० गुप्ता ऐन्ड सन्स
न्यू बिल्डिङ्ग अमीनाबाद पार्क, लखनऊ।

२—सेठ मुरलीधर प्रतापनरायन सर्राफ, सीतापुर।